

श्री



अथ

॥ विनयपत्रिका ॥

॥ तुलसीदासकृत ॥

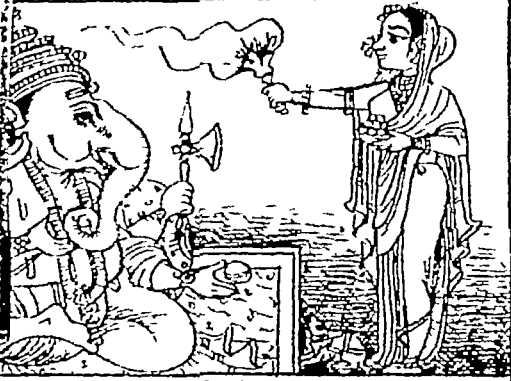
प्रारंभ



शके १७८१

सन १८५६

76717
RS 25.00
ILU/VD174
1/12619
~~1000~~ 116974
1000 1011175
IRR1311175
Cex 41215



॥विनयपत्रिका॥

श्रीगणेशायनमः ॥ रागविलावल ॥ गाइयेगणपतिजगद्वं
 दन ॥ शंकरसुमनभवानीनंदन ॥ टेक ॥ सिद्धिसदनगज-
 वदनविनायक ॥ रूपासिंधुसुंदरसवलायक ॥ भोदकप्रिय
 सुदमंगलदाता ॥ विद्यावारिधिलुद्धिविधाता ॥ मांगततुलसी
 दासकरजोरे ॥ बसहिरामसिधमानसमारे ॥ १ ॥ दीनदयाल
 दिवाकरदेवा ॥ करैसुनिस्तुजसुरासूरसेवा ॥ टेक ॥ हिमत्-
 मकरिकेहरिकरमाली ॥ दहनदेरवदूरवदुरितरूजाली ॥ कोक
 कोकनदलोकप्रकासी ॥ तेजप्रतापरूपरसरासी ॥ सारथीपं-
 गुदिव्यरथगामी ॥ हरिशंकरविधिमूरतिस्वामी ॥ वेदपुराणप्र
 गटजसजागै ॥ तुलसीरामभक्तिवरमांगै ॥ २ ॥ रागधनासि
 री ॥ कोजाचियैशंभुतजिआन ॥ दीनदयालमगतआरतहर
 सवप्रकारसमरथभगवान ॥ टेक ॥ कालकूटतेजरतसुरासु
 रनिजजनलागिकियोविषपान ॥ दारुणदनुजजगतदुःख-
 शायकजारेउतिपुरएकस्वीवान ॥ जोगतिअगममहासुनिर्दु
 लभकहतसंतश्रितिसकलपुराण ॥ सोइगतिमरणकालअ
 पनेपुरदेतसदाशीवसबहीसमान ॥ सेवतसुलभउदारकल्प
 तरुपारवतीपतिपरमसुजान ॥ देहुरामपदनेहकामरिपुतु
 लसीदासकहकूपानिधान ॥ ३ ॥ धनाश्रीदानीकहूशंकरसम
 नाहीं ॥ दीनदयालदियोइभावैजांचकसदासहाही ॥ टेक ॥
 मारिकैमारुथष्यौजगमेंजाकिप्रथमरेखभटमाहीं ॥ ताठाक
 रकोरिजीनेवाजिवोकहिष्यौंपरतमोपाहिं ॥ जोगकांठिकरि
 जातिहरिसोंसुनिमागतसकुचाहि ॥ वेदविदिततेहिपदपु-

गरिपुरकिटपतंगसमाहि ॥ ईशउदारउमापतिपरिहरिअन
 तजेजाचनजाहि ॥ तुलसीदासतेसुदमागनेकचहुनपेटअघा-
 ही ॥ ४ ॥ वावरोरावशेनाहभवानी ॥ दानिवडोदिनदेतदियोवि
 तुवेदयडाईभानी ॥ टेक ॥ निजघरकीवरवातविलोकहुहोनु
 मपरमसथानि ॥ शिवकीदयार्सपदादेखतश्रीसारदासिहानि
 ॥ जिनकेभाललिखिलीपिमेदीसरवकीनहानीशानी ॥ तिनरं
 कनकोनाकसवारतहोआयोनकवानी ॥ दुखदीनतादुखी
 इनकेदुखजाचकताअकुलानी ॥ यहअधिकारसोंपियअ
 बरहिमीरवभलीमैजानी ॥ प्रेमप्रशंसाविनयवंगिस्तुतस
 निविधिकीबरवानी ॥ तुलसीसुदितमहेसमहेसमनहिम-
 नजगतमातुसुककानी ॥ ५ ॥ रागरामकलि ॥ मागियेगि-
 रिजापतिकासी ॥ जासुभवनअनिमादिकदासी ॥ अषढर
 दानिद्रवतसुविथोरे ॥ सकतनदेखिदीनकरजोरे ॥ सरवसं
 पतिमतिसुगतिसुहाई ॥ सकलसुलभशंकरसेवकाई ॥ ग
 यजेसरनआरतकेलोन्हे ॥ निरखिनिहालनिमीषामहकीन्हे
 ॥ तुलसीदासजाचकशुषागावै ॥ विमलभक्तरघुपतिकीपा
 वै ॥ ६ ॥ कसनदिनपरदवहुउमावृर ॥ दारुणविपतिहरण
 करुणाकर ॥ वेदपुराणकहतउदारहर ॥ हमरिवेरकसभ
 येहुकूपीनतर ॥ कवनभक्तिफीनीशुणानिधिद्विज ॥ होइ
 प्रसन्नदीनेउसिवपदनिज ॥ जोगतिअगममहासुनिगा
 वहि ॥ तबपुरकीटपतंगउपावहि ॥ देहुकामरिपुरामचर
 एरति ॥ तुलसीदासप्रभुहरहुभैदमति ॥ ७ ॥ देवकडेदाता

वडेसंकरवडेमोरे ॥ कियेदूरिदुरवसवनिकेजिन्हजिन्हकरजो
 रे ॥ सेवासूमिरनपूजिवोपातअखतथोरे ॥ गांववसतवाम
 देवमैकवहूननिहोरे ॥ अधिभौतिकबाधाभईतेकिंकरतोरे ॥
 वेगिवोलिवरजिएकरतूतिकठोरे ॥ तुलसीदलिरूधाचहैस-
 ठसाकसिहोरे ॥ ८ ॥ शिवशिवहोइप्रसन्नकरुदाया ॥ करु-
 णामचउदारकिरतिवलिजाहुहरहुनीजमाया ॥ जलजनयन
 गुणअयनमयनरिपुमहिमाजानतकोई ॥ विलुतवछपारा-
 मपदपंकजसपनेहुभक्तिनहोई ॥ रिपयसिद्धमुनिमनुजद
 नुजसरअपरजीवजगमाही ॥ तवपदविमुरवपारनपावको
 उकल्पकोटिचलिजाहिं ॥ अहिभूखनदूषनरिपुसेवकदेव
 देवत्रिपुरारी ॥ मोहनिहारदिवाकरशंकरसरणशोकमच-
 हारी ॥ गिरिजामनमानसमरालकाशीसमसाननेवासी ॥
 तुलसिदासहरिचरणकमलहरदेहुभक्तिअविनाशी ॥ ९ ॥
 ॥ रागधनाश्री ॥ देवमोहतभतरशिहररुद्रशंकरशरण-
 हरणयमशोकलोकाभिराम ॥ बालशशीभालसुविशाल-
 लोचनकमलकामशतकोटिलावण्यधाम ॥ १ ॥ देवकुंडकुं-
 देंदुकुण्डरविग्रहरुचिरतरुणरविकोटितनतेजभ्राजै ॥ भस्म
 सवांगअद्वैंगशैलात्मजाव्यालनृकपालमालविराजै ॥ २ ॥
 देवमौलिसंकुलजटासुकुटविद्युल्लटातटिनिवरवारिहरिचरण
 पूत ॥ अवणकुंडलगडलकंठकरुणाकंदसच्चिदानंदवदेव
 धूत ॥ ३ ॥ देवसूलशायकपिनाकाशिकरसश्रुवनदहनइव
 धूमध्वजदृषभजानं ॥ व्याघ्रगजचर्मपरिधानविज्ञानधन

सिद्धस्वरमुनिमनुजसेव्यमानं ॥ ४ ॥ देवतांडवीतनृत्यपरडम
रूडीमडिमप्रवरअसुरइवभातिकल्यानससी ॥ महाकल्यांत
ब्रह्मांडमंडलदवनभवनकैवल्यआशीनकासी ॥ ५ ॥ देवतज्ञ-
सर्वज्ञयज्ञेशअच्युतविभोविश्वभवदंशसंभन्नपुरारां ॥ ब्रह्मं
इचंद्रार्कवरुणाग्निवसुमरुतजमअर्चभवदंघिसर्वंधिका
री ॥ ६ ॥ देवअकलनिरूपाधिनिर्गुणानिरंजनब्रह्मकर्मपथमें
॥ अखिलविग्रहउग्ररूपसिवभूपसुरसर्वगत
॥ ७ ॥ देवज्ञानवेराग्यधनधर्मकैवल्यसुरवसु
प्रगसौभाग्यशिवसानुकुलं ॥ तदपिनरमूढआरूढसंसार
पथभ्रमतभवविसुरवतवपादमूलं ॥ ८ ॥ देवनष्टमतिदुष्टअ-
तिकष्टरतखेदगतदासतुलसीशंभुसरणआया ॥ देहिका
मारिश्चौरामपदपंकजेभक्तिमनवचनगतभेदमाया ॥ ९ ॥
॥ १० ॥ देवभीषणाकारभैरवभयंकरभूतप्रेतप्रमयाधिपति
विपतिहर्त्ता ॥ मोहमुषकमाजरिसंसारभयहरणतारणअ-
भयकर्त्ता ॥ १ ॥ देवअतुलवलविपुलविस्तारविग्रहगौरअ-
मलअतिधवलधरणिधराम ॥ शिरसिसंकुलितकलकूट-
पिंगलजटापटलसत्कोटिविद्यच्छताभं ॥ २ ॥ देवभ्राजविबु-
धापगाआपपावनपरममौलिमालेवशोभाविचित्रं ॥ ललि-
तलल्लाटपरराजरजनीसकलकलाधरनौमिहरधनदमि-
त्रं ॥ ३ ॥ देवइंदुषावकभानुनयनमर्दनमथनज्ञानगुनअथ-
नविज्ञानरूपं ॥ रवनगिरिजाभवनभूधराधिपसदाश्रव-
णकुंडलवदनछविअनूपं ॥ ४ ॥ देवचर्मअसिसूलधरड

मरुसायकचापजानघृषभेशकरुनानिधान ॥ जरतस्करश्च
 सुरनरलोकशोकाकुलमृदूलचित्तप्रजितकृतगरलपानं ॥
 ॥ ५ ॥ देवभस्मतनभूषणव्याघ्रचर्मोवरं उरगनरमोलिउरमा
 लधारि ॥ डाकिनीरवेचरीभूचरोजंत्रमंत्रभंजनप्रबलकल्म
 षारी ॥ ६ ॥ देवकालअतिकालकलिकालव्यालादरवगत्रिपु
 रमर्दनभीमकर्मभारि ॥ सकललोकांतकल्पांतसूलाग्रकृत-
 दिग्गजाव्यक्तगुणानृत्यकारी ॥ ७ ॥ देवकारि ॥ पापसंताप
 घनघोरसंस्मृतिदिनभ्रमतजगजोननहिकोपित्रागा ॥ पाहि
 भैरवरूपसमरूपीरुद्रबंधुजनकजननिविधाता ॥ पश्यगुण
 गणगणतीविमलमतिसारदानिगमनारदप्रसुरवब्रह्मचारी
 ॥ शेषसर्वेश आसीन आनंदवनदासतुलसीप्रणतत्रासहा-
 री ॥ ८ ॥ देवसदाशंकरसंप्रदंसज्जनानंददंशौलकन्यावरंप-
 रनरम्यं ॥ काममदनोचनंतामररुलोवनं वामदेवभजेभाव
 गम्यं ॥ कंबुकुंदेंदुकुर्पुरगौरं शिवसुंदरं सच्चिदानंदकंदं ॥
 सिद्धसनकादिकयोगींद्रवदारकाविस्माविधिवंधचरणार-
 विंदं ॥ ९ ॥ ब्रह्मकुलवल्लभकुलगमनिदुर्लभविकटवेषविभुवे
 दपारं ॥ नौमिकरुणाकरंगरलंगंगाधरं निर्मलं निर्गुणनिर्वि-
 कारं ॥ १० ॥ लोकनाथशोकशूलनिर्मलिनं ॥ शूलिनं मोहत
 मभूरिभारं ॥ कालकालंकलाती ॥ तमजरहरकठिनकल
 कालकाननकसानं ॥ ११ ॥ तज्ज्ञमज्ञानकृतोधिघटं सं
 षवं सर्वगंसर्वसौभाग्यमूलं ॥ प्रचुरभवजनप्रणतज
 नरंजनंदासतुलसीशरणसासुकूलं ॥ १२ ॥ रागवसंत ॥

सेवहू शिवचरणसरोजदेणू ॥ कल्याणत्रयविलप्रदकामधे-
 नूकपूर्वगौरकरुणाउदार ॥ संसारसारभुजगेंद्रहार ॥ सु-
 खजन्मभूमिमहिमांप्रपार ॥ निर्गुणगुणलायकनिराकार ॥ अ-
 यनयनमथनसर्दनमहेश ॥ अहंकारनिहारउदितदिने-
 श ॥ वरवालनिशाकरसौलिभाज ॥ त्रैलोक्यसरवहरप्रमथराज
 ॥ जिनकहविधिस्तुगतिस्त्रिभालनिहकिगतिकाशोपति
 कृपाल ॥ उपकारिकोपरहरसमान ॥ सरअसरवरतकनर
 लपान ॥ बहूकल्पउपायकरिअनेक ॥ वितुशंभुकृपानहिभ
 वविवेक ॥ विज्ञानभवनशिविसुतारवनकहतुलसीदासमम-
 आसशसन ॥ १३ ॥ देरवोदेरवोवनवन्योआजुउमकत ॥ मान
 हूदेरवनतुमहिआईअतुवसंतआनोतनदुतिचम्यककुस्तम
 माला ॥ वरवसननीलनूतनतमाला ॥ कलकदलिजंघपदक
 मललाल ॥ सूचतिकविकेहरिगतिसवाल ॥ भूषणप्रस्तूनवहू
 विविदंग ॥ नूपुरकिंकिनिकलकविहंग ॥ करनवलवकुलपल्ल
 वरसाल ॥ श्रीफलकुचकंचुकिलताजाल ॥ आननसरोजक
 चमधुपंगुजलोचनविशाल ॥ नवनीलकटुपिकवचवचरि
 तवरहिकीर ॥ सिनस्तुमतहासलीलासमीर ॥ कहतुलसीदा
 सस्तुशिवस्तुजान ॥ उरवसीप्रपंचरचेपंचवान ॥ करीक
 पाहरियभ्रमप्रंदकाम ॥ जैहित्दयवसहिस्करवरासिराम ॥
 ॥ १४ ॥ रागमारू ॥ दूसहदोषदुखदलनिकरदेविदाया ॥ वि-
 श्वमूलासिजनसानुकूलासिकरशूलधारिणीमहामूलमा
 या ॥ तद्वितगर्भागिसर्वांगसुंदरलसतदिव्यपटभव्यभूष-

एविराजे ॥ वालमगमंजुरवंजननीलोचनीचंद्रवदनलखिकोठि
 रतिमालराजै ॥ रूषसुरवशीलसीमासीभोमासिरामासिवा-
 मासावरखुद्विवानी ॥ छमुरवहेरंबअंबासिजगदंविकेशभुजा
 यसिजयजयभवानी ॥ चंडभुजदंडरवंडनविहंडनिमुंडमहिष
 मदभंगकरिअंगतारे ॥ शुंभनिशुंभकुंभीशरणकेसरनिक्रोध
 वारिधिवैरिचंद्रवारे ॥ निगमअगमगुर्वितवरुएकथनउर्वि
 धरकहतजेहिसहसजीहा ॥ देहिमामोहिप्रणयैमवहनेमनी
 जरा ॥ मघनस्यामतुलसीपपीहा ॥ १५ ॥ रागसारंग ॥ जयज
 यगजजननिदेविस्तरवरसुनिअस्तरसेविभक्तभुतिदायनि
 भयहरणीकालिका ॥ मंटलसुदसिद्धिसदनिपर्वसर्वदीसव
 दनीतापतिभिरतरुण ॥ तरणिकिदणमालिका ॥ चर्मच ॥
 ॥ मेकरकृपाणशूलसेलधनुषबाणधरणीदलनिदानवद
 लरणकरालिका ॥ पूतनापिशाचप्रेतडाकिनीशाकिनीसमेत-
 भूतग्रहवेतालखंजनगालिजालिका ॥ जयमहेशभाभिनिअ
 नेकरूपनाभिनोसमस्तलोकस्वामिनिहिमशैलबालिका ॥
 रघुपतिपदपरमप्रेमतुलसीचहैअचलनेमदेहुहेप्रसन्नपा
 हिप्रणतपालिका ॥ १६ ॥ जयभगीरथीनंदिनीसुनिचयच-
 कोरचंदिनीनरनागविबुधवंदिनीजयजन्हवालि ॥ विष्णुपद
 सरोजजाशिइशसीसपरविमासित्रिपथगामिपुन्यराशि
 पापलालि ॥ काविमलविपुलवहसीवारिश्रीतलत्रयतापहा
 रिमंबरभराचिभंगनदतरंगमालिका ॥ पुरजनपुजोपहार-
 शोभितथाशधधारभंजनिभवभारभक्तिकल्पथालिका

॥ निजतटवासी विहंगजलथलचरपंगुपतंगकित्जदिलता-
 पससवसरिसपालिका ॥ तुलसीसवतीरसूमिरतद्युवंश-
 वीरविवरनुमतिदेहिमोहमहिषकालिका ॥ १७ ॥ रागरामक
 लि ॥ जयतिजयस्फुरसरोजयदरिवलपावनी ॥ विष्णुपदकं
 जमकरंदइवअबुवरहसीदुखदहसिअघट्टदट्टदावनी
 मिलितजलपात्रअजसुक्तहरिचरएरजावरजवरवारवि
 पुरारिसिधामिनि ॥ जम्हकन्याधन्यपुण्यकृतसगरसूत-
 भूधरद्रोणिविद्वरनिवहुनामिनी ॥ यक्षगंधर्वसुनिकिन्न-
 रोरगदनुजमनुजमज्जहिस्फुक्तपुण्ययुतकामिनी ॥ स्व
 र्गसोपानविज्ञानज्ञान ॥ प्रमेमोहमदमदनपाथोजवनजा-
 मिनी ॥ हरितगंभिरवानिरंदुहंतीरवरमध्यधाराविषद
 विश्वअभिरामिनी ॥ नीलपर्यंककृतशयनसर्पेशजनुस
 हशशीसावेलीश्रीतसुरस्वामिनी ॥ अभितममहिमाअ
 सतिरूपभूपावलीसुरगुणगणिवंदि ॥ त्रैलोक्यपथगामिनी
 देहिरद्युवीरपदप्रीतिनिर्भरमातुदासतुलसीत्रासहरणी
 भवभामिनी ॥ १८ ॥ हरतिसकलपापत्रिविधतापसूमी ॥
 रतस्फुरसरित् ॥ विलसतिमहिकलपवेलिसुदमनोरथफ
 रित ॥ सोहत्तशशीधवलधारस्रधासलिलभरित ॥ विमलत
 रतरंगलसतरद्युवरकेसेचरित ॥ तोचिनुजगदंगंगकल
 युगकाकरित ॥ घोरमवअपारसिंधुतुलसीकीमतरित ॥
 ॥ १९ ॥ इशसीसवससीत्रिपथलससीनमपतालधरनी ॥
 सुनिस्फुरनरनागसिद्धस्रजनमंगलकरनिदेरवतदुख

दोषदुरितदाहदारिद्र्यनि ॥ सगरसु-अनसासतिशमनिजलनि
धिजलभरनि ॥ महिमाकिञ्चधिकरिवहविधिहरिहरनि ॥ तु-
लसीकलुवानीविमलविमलवारिवरनो ॥ २० ॥ रागधिलावल ॥ य-
मुलाज्यौज्यौलागीवाटन ॥ ल्यौज्यौं सकतसूभटकलिभूपहिन
दरिलगैवाहकाटन ॥ ज्यौंज्यौंजलमलिनत्यांल्यौयमग एामूरवम
लिनलहैआटन ॥ तुलसीदासजगदधजवासज्यौंअनघआ
गिलागेडाटन ॥ २१ ॥ रागभैरव ॥ सेइयसहितसनेहदेहभरि
कामधेनुकलिकासी ॥ शमनशोकसंतापपापरुजसकलसुमं
गलरासी ॥ मरजादाचहअोरचरणवरसेवतसरपुरवाशी ॥
तीरथसवशुभअंगरोशिवलिंगअमितअविनासी ॥ अंतर
अयनभलयनफलवल्लवेदवीश्वासी ॥ गलकंवलवरुणाविभा
तिजनुलमलसतिसरितासी ॥ दंडपाणिभैरवविषाणवेलरु-
चिखलगणभयदासी ॥ लोलदिनेसतिलोचनलोचनकरनघं
टघटासी ॥ मणकणिकावदनशाशिसुंदरसरसरिसरवमा-
सी ॥ स्वारथपरमारथपरिपूर्णापंचक्रोशमहिमासी ॥ विश्व
नाथपालककपालचित्तलालितनितगिरिजासी ॥ सिद्धसधि
शारदपूजहिमनूजोगवतरहतिरमाशीपंचाक्षरीप्राणसुध
माधमगव्यसुपंचनदाशी ॥ ब्रह्मजीवसमरामनामदोउआ
खरविश्वविकाशी ॥ चारितुचरितकरमकरिमरतजीवगन
घाशी ॥ लहतपरमपदपयपावनजेहिचहतप्रपंचउदासी ॥
कहतपुराणारचिकेशवनीजकरकररतुतीकलासी ॥ तुल-
सीवसीहरपुरिसमंजपुजोभयोचहैसुपाशी ॥ २२ ॥ ॥

॥ रागवसंत ॥ सबसोचविमोचनचित्रकूट ॥ कलिहरनकरन
 कल्याणवृत् ॥ सूचिअवनिस्तह्वनिआलवाल ॥ माननविचि
 त्रवारिविसिलसंदाकिनीमालिनीसदासीच ॥ वरवाराशमन
 रनारिनीच ॥ सारवासुसृगधुरुहसुपात ॥ निर्जरमधुकरमृ
 दुमलयावात ॥ सुकपिकमधुकरसुनिवरविहार ॥ साधन
 प्रसुनफलचारिचारु ॥ भवघोरधामहरस्वरवदछांह ॥ यथो
 थीरप्रभावजानकीनाह ॥ साधकसुपधीकवडभागपाई ॥
 पावतअनेकअभीषतअघाई ॥ रसएकरहतगुणकर्मकाल
 ॥ सियरामलखनपालकरुपाल ॥ तुलसीजोरामपदचहसि
 प्रेम्मा ॥ सेदथेगिरिकरिनिरुपाधिनेम ॥ २३ ॥ रागकन्हारा ॥
 अचचितचेतुचित्रकूटहिचलु ॥ कोपितकलिलोपितमंगल
 मगविलसुतवदतमोहमायामलु ॥ भूमिविलोकिरामपदअ
 कितवनविलोकीरधुवरविहारयलु ॥ शैलशृंगभवमंगल
 हेतुलखिदलनकपटपारखंडदंभदलु ॥ जहजनमेजगजन
 कजगतपतिविधिहरिहरपरिहरिप्रपंचछलु ॥ सकृतप्रवे
 शकरतजेहिआश्रमविगतविरवादभएपारथनलु ॥ नक
 रुखिलंबबिचारुचारुमतिबरखपाछिलेसमअगिलेपलु ॥
 मंत्रसोजाइजपहिजोजपिधएअजरअमरहरहचैहला
 हलु ॥ रामनामजपजागकरतनितमज्जतपयपावनिपी-
 वतजलु ॥ करिहैरामभावतोमनकोस्वरवसाधनअनया
 समहाफलु ॥ कामदभणिकामतास्वरतरुसोजुगजुग-
 जागतजगतीतलु ॥ तुलसीतोहिविशरवबुजिएएकप्र-

तीतप्रीतएकैवलु ॥ २४ ॥ रागधनाश्री ॥ जैत्यंजभागर्मंत्रंबोधि
संभूतविधूवीबुधकुलकैरवानंदकारी ॥ केशरीचारुलोचन
चकौरकसरवदलोकगणशोकसंतापहारि ॥ जयतिवालक-
पिकेलिकौतुकउदितचंडकरमंडलग्रासकर्ता ॥ राहुरविशक्र
पविगर्वरवर्षाकरणसरणभयहरणजयभुवनभर्ता ॥ जय
तिरणधिररघुवीरहितदेवमणिरुद्रअवतारसंसारपाता
॥ विप्रसरसिद्धमुनिआसीरवाकरवपुपविमलगुणबुद्धि
वारिधविधाता ॥ जयतीसुग्रीवसिद्धादिरक्षणिपुनवा
लिवलसालिवधसुरव्यहेतू ॥ जलधिलंघनसिंहसिंहकाम
दमथनरजनिचरनगरउतपातकेतू ॥ जयतिभूनंदनिसोच
मोचनविपिनीदलनघननादवसवीगतसंका ॥ लूमलिलान
लज्वालमालाकुलितहोलिका ॥ करणलंकेशलंकाजयति
सौमिनिदधुनंदनानंदकररिच्छकपिकटकसंघटविधाई ॥
बंधवारिधिसेतुअमरमंगलहेतुभालुकुलकेतुरणविजय
दाई ॥ जयतिवज्जतनदशननरवसुखविकटचंडभुजदंड
तरुसैलपाणि ॥ समरतैलिकजत्रतिलतमिचरनिकरप्रे-
रिडारेरुभटयालिधानि ॥ जयतिदशकंठघटकर्णवारि-
दनादकदनकारणकालनेमिहंता ॥ अघटघटनासुघट-
विघटनविकटभूमीपातालजलगगनगंता ॥ जयतिविश्व
विरव्यातवानैतविकुदावलिबिदुरववरनतवेदविमलवानो
॥ दासतुलसीआससमनसीतारमणसंगसोभितराम-
राजधनी ॥ २५ ॥ जयतिमर्कटाधीशमृगराजविक्रममहा

देवमुदमंगलालयकपालि ॥ मोहमदकोहकामादिरवलसंकु-
लाघोरसंसारनिसिकिरिनमाली ॥ जयतिलशदंजनादिति
जकपिकेशरिकस्यपप्रभवजगदार्तिहर्ता ॥ लोकलोकपको
ककोकनदशोकहरहंसहनुमानकल्याणकर्ता ॥ जयतिस्त
विशालविकरालविग्रहवज्रसारसर्वांगभुजदंडभारि ॥ बुद्धि
समखदसनवरलसतिवालधिरुहद्वीरसस्त्रास्त्रधरकुध
रधारि ॥ जयतीजानकीशोकसंतापमोचनरामलक्ष्मणानं
वारिजविकाशी ॥ कीशकौतुककेलीलूमलंकादहनदलन

॥ जयतिपाथोधीपारवानजलजा

नकरजातुधानप्रचुरहरर्वहाता ॥ दुष्टरावनकुंभकरनपाका
कारिजीतपमीभितकर्मपरिपाकदाता ॥ जयतिभुवनैकभू-
खनविभिरवनवरदविहितकृतरामसग्रामशाका ॥ पुष्प
कारूढसौमित्रसितासहितभानुकुलभानुकिरतिपताका
॥ जयतिपरजंत्रमंत्राभिचारयसनकर्मनकूटसर्वकृत्यदि
हंता ॥ शाकिनीडाकिनीपूतनायेतवेतालभूतप्रमथजूथजं
ता ॥ जयतिवेदांतविधिविधिविधिविद्यावीसदवेदवेदांगविद
ब्रह्मवादी ॥ ज्ञानवैराग्यविज्ञानभाजनविभौविमलगुणग-
णतस्तकनारदादी ॥ जयतिकालगुणकर्ममायामथननि
श्चलज्ञानव्रतसत्यरतधर्मचारि ॥ सिद्धस्वरचंद्रजोगेंद्रसे
वितसदादासतुलसीप्रणतभयतभारी ॥ २६ ॥ जयति
मंगलागारसंसारभारापहरवानराकारविग्रहपुरारि
॥ रामशेषानलज्वालमालामिषध्वांतचरशलभसंहा

रकारी ॥ जयति मरुदंजनामोदमंदिरनतयीवस्यीवदुःखैकबंधो ॥
जातुधानोद्धतकुद्धकालाग्निहरसिद्धस्वरज्जनानंदसिंधो ॥
जयति रुद्राग्रिणिविस्वविद्याग्रिणिविस्वविष्यातभटचक्रवर्ति ॥
सामगाताग्रिकामजेताग्रिरासहितरामभक्तानुवर्ति ॥
जयतिसंग्रामजयरामसंदेहहरकोशलाकुशलकल्याणभाषी ॥
रामविरहार्कसंतप्तभरतादिनरनारिशीतलकरणकल्पसाषी ॥
जयतिसिंहासनासीनसीतारमननिरषीनिर्भरहर्षनृत्यका
री ॥ रामसंभ्राजशोभासहितसर्वदातुलसीमानसरामसु-
गाविहारी ॥ २७ ॥ जयति वातसंजातविष्यातविक्रमवृद्धा
हुचलविपुलवालधिविसाला ॥ जयति रूपावलाकारवि-
ग्रहलसतलोमविद्यत्लताज्वालमाला ॥ जयति बालार्कव-
रवदनपिंगलनयनकपिसकर्कशजटाजूटधारी ॥ विकटभृ-
कुटिवज्रदशननधवैरीमदमत्तकुंजरपुंजकुंजएरी ॥ जयति
भिमार्जुनव्यालसूदनगर्वहरधनंजयरथत्राणकेतु ॥ भीष्म
द्रोणकरणाद्रिपालितकालदृकसूजोधनचसूनिधनहेतु ॥ ज-
यति गतिराजदातारहंतारसंसारसंकटदनुजदर्पहारि ॥ इति
अतिभीतीगृहप्रेतचौरानलव्याधीबाधासमनघोरमारी ॥
जयति निगमागमव्याकरणकरणलिपिकाव्यकौतुककला
कोटिसिंधो ॥ सामगायकभक्तकामदायकवामदेवरामप्रि-
यप्रेमबंधो ॥ जयति धर्मासुसंदग्धसंपातिनवपक्षलोचन
दिव्यदेहदाता ॥ कालकलिपापसंतापसंकुलसदाप्रणततु-
लसीदासतातमाता ॥ २८ ॥ जयति निर्भरानंदसंदोहकपिके

सरीकेससीस्र अनभुवनैकभर्ता ॥ दिव्यभूम्यंजनामंजुलाक
रमणेभक्तसंतापचिंतापहर्ता ॥ जयतिधर्मार्थकामापवर्गदवि
भोब्रह्मलोकादिवैभववीरागी ॥ वचनमासकर्मसत्यधर्मवती
जानकीनाथचरनातुरागी ॥ जयतिविहंगेसवलबुद्धवेगाति
मदमथनमन्मथमथनऊर्ध्वरेता ॥ महानाटकनिपुनकोटि
कविकुलनीलकगानगुणगर्वगंधर्वजेता ॥ जयतिमंदोदरिके
शकर्षणविघमानदशकंठभटसुकुटमानि ॥ भूमीजादुःखसं-
जातरोषांतकृजांतनाजंतुकृतजातुधनी ॥ जयतिरामाद्यथा
वणसंजातरोमांचलोचनसजलासिथिलवानि ॥ रामपद
पद्मकरंदमधुकरपाहिदासतुलसीसरणशूलपानी ॥ २९ ॥
रागसारंगजाकेगतिहैहनुमानकी ॥ ताकीपयजपूजिआई
यहरेषाकुलिसपषानकी ॥ अथदितघटनस्रघटविघटनऐ
सीविरुदावलिनहिआनकी ॥ सुभिरतसंकटसोचविमोच
नभूरतिमोदनिधानकी ॥ तापरशानकुलगिरिजाहरलषन
रामअरुजानकी ॥ तुलसीकपिकीकृपाविलोकनिषानीस
कलकल्यानकी ॥ ३० ॥ रागगौरि ॥ ताकीहैतमकिताकीओर
को ॥ जाकेहैसबभांतिभरोसोकपिकेशरिकीसोरको ॥ जनरं
जनअरिगनगंजनसुषभंजनषलवलजोरको ॥ वेदपुरानप्र
गटपुरुषारथसकलस्रभटसिरमोरको ॥ उथपेथपनथपेउ
थपनकिरिविबुधद्वंद्वंदिल्लोरको ॥ तलधिलंधिदहिलंक
प्रवलदलदलननिसाचरघोरको ॥ जाकेबालविनोदससु-
फ़िजियडरतदिवाकरभोरको ॥ जाकिचिबुकचोटचूरण-

कियोरदमदकुलिशकठोरको ॥ लोकपालअनकूलविलोकिवोच
 हतविलोचनकोरको ॥ सदांअभयजयमुदमंगलमयसोसेवक
 रनरोरको ॥ भक्तकामतरुनामरामपरिपूरणचंद्रचकोरको ॥ तु
 लसीफलचारोंकरतलजसगावतगईवहोरको ॥ ३१ ॥ रागवि
 लावल ॥ असेतोहिनवृष्टिहनुमानहठीले ॥ साहेबकहूंनरा
 मसेतोसेनवसीले ॥ चारौद्युगतिहुकलमेतुमरामरंगीले ॥ तेरे
 देषतसिंहकेसिस्फुमेडुकलीले ॥ जानतहोंकलितेरेऊमनोगुन
 गणकीले ॥ हाँकसनतदशकंधकेभयबंधनठीले ॥ सोवलग-
 योकिधौंभयेअवगर्वगहिले ॥ सेवककोपरदाफटेतुससमर
 थसीले ॥ अधिकआपुतेआपुनोसुनीमानसहीले ॥ सासती
 तुलसीदासकिसुनिसुजसतुहिले ॥ तिहूकालतिनकोभलो
 जेरामरंगीले ॥ ३२ ॥ समरथअनसमिरकेरघुविरपियारे ॥
 मोपरकिवेतोहिजोकरिलेहिभियारे ॥ तेरिमहिमातेचलैचिं-
 चिनीचियारे ॥ अंधियारोमेरिवारकोत्रिभुवनउजियारे ॥ के
 हिकरनिजनजानीकेसनमानकियारे ॥ केहिअधअवगुन
 आपनोकरिडारिदियारे ॥ स्वायखोचिमागमेतेरानामलिया
 रे ॥ तेरेबलवलिआजलोजगजागीजियारे ॥ जोतोसोहोतोफि
 रोमेरोहेतुहियारे ॥ तवक्योंवदनदेखावतोकहिवचनइयारे ॥ तो
 सोज्ञाननिधानकोसर्वज्ञवियारे ॥ होससुऊतसाईदोहकिगति-
 छारछियारे ॥ तेरेस्वामीरामसोस्वामिनीसियारे ॥ तहतुलसी
 कोकोनकोकाकोतकियारे ॥ ३३ ॥ रागबिलावल ॥ अतिआरत
 अतीस्वारथीअतीदिनेदुषारि ॥ इनकोविलगनमानियबो-

लहिनविचारि ॥ लोकरीतोदेषीसुनोव्याकुलनरनारी ॥ अतिव
 र्षअनवर्षेहुदेहीदेवहिगारि ॥ नाकहोआएनाथसोसासतिभ
 यभारी ॥ कहिआयोकीबोक्षमानिजवोरनिहीरी ॥ समयसां,
 करेसुमिरियेसमरथहितकारी ॥ सोसवविधिउपकारकरै-
 अपराधविसारी ॥ विगरोसेवककीसदासाहिवहोसुभारी ॥
 तुलसीपरतेरिहृपानिरुपाधिनिनारी ॥ ३५ ॥ कहुकहिएगाठे
 परैसुनिसुसीसुसाई ॥ करहिअनभलेहुकोभलोआप
 नीभलाई ॥ टेक ॥ समरथसुभजोपाटईवीरपीरपराई ॥ ना
 हीतकेसवज्योनदीवारिधीनबुलाई ॥ १ ॥ आपनोआपने
 कोभलोवहैलोगलुगाई ॥ भावैजो जेहितेहिभजे शुभअशुभ
 सगाई ॥ २ ॥ वाहबोलदैथापियजोनिजचरिआई ॥ विनुसेवा
 सेपालियेसेवककीनाई ॥ ३ ॥ चूकचपलतामेरियैतूबडोवडा
 ई ॥ होतआदरेदीवहोअतिनीचनिचाई ॥ ४ ॥ बंदीछोरविर
 दावलिनिगमागमगाई ॥ नीकोतुलसीदासकोतेरियेनिका
 ई ॥ ५ ॥ ॥ ३५ ॥ रागगौरी ॥ मंगलमूरतिमारुतनंदन ॥ सक
 लअमंगलमूलनिकंदन ॥ टेक ॥ मातुपितागुरुगनपतिसार
 द ॥ सिवासमेतसंभुशुकनारद ॥ चरनबंदिविनवोसबका
 हू ॥ देहुरामपदओरनिवाहू ॥ वदोरामलषुनवैदेही ॥ जेतुल
 सीकेपरमसनेही ॥ ३६ ॥ रागकेदारा ॥ कवहूकअंबअवस
 रपाई ॥ मेरिहुसुधिधाइविकलुकरुनकथाचलाई ॥ टेक ॥ दीन
 सबअंगहीनपीनमलीनअधोअघाई ॥ नामलैभरैउदरएक
 प्रभुदासिदासकहाई ॥ वृजीहैसोकोनकहवीनाउंदसाजनाई

॥स्फुनतरामरूपालकेमेरीविगारिहुवनिजाई॥जानकीजगजन-
नीजनकीकियेवचनसहाई॥तरैतुलसीदासभवतवनाथगुन
गनगाई॥३७॥कवहुंससमयसुधीयाईवीमेरीमातुजानकी॥ज
नकहाईनामलेतहौंकियेपनचातिकज्यौप्याससुप्रेमपानकी॥
॥टेक॥सरलप्रकृतिआपुजानीयेकरुनानिधानकी॥निजगु
नअप्रिरिछतअनहितोदासदोषसुरतिचितरहतिनदियेदान
की॥वानिविस्मरनसीलहैमानदअमानकी॥तुलसिदासनवि
सारिएमनक्रमवचनजाकेसपनेहुगतिनआनकी॥३८॥लष
नलाललाडिलेहितहौंजनके॥सुमिरेसंकटहारिसकलसुमंग
लकारिपालककृपालआपनेकेपनके॥टेक॥धरनीधरनहार
भजनभुवनभारअवतारसाहसीसहसफनके॥सत्यसंधस
त्यव्रतपरमधरमरतनिरमलकरभवचनअरुमनकेरूपके॥
निधानधनुवानपानितूनकटिमहावीरविदितजितैयावडेरन
के॥सेवकसुखदायकसवलसवलायकगायकजानकीनाथ
गुनगनके॥भावेतेभरतकेसुमित्रासिताकेदुलारेचातकचतुर
रामश्यामघनके॥वल्लभऊर्षिलाकेसुलभसनेहवसधनीधन
तुलसीसेनिरधनके॥३९॥रागधनाश्री॥जयतिलक्ष्मणा
नंतभगवंतभूधरभुजगराजभुवनेसभूभारहारी॥प्रलय-
पावकमहाज्वालमालावमनसमनसंतापलीलावतारी॥॥
॥टेक॥जयतिदासरथिसमरथसुमित्रासुवनससुसुदन-
रामभरतबंधो॥चारुचंपकवरनवसनभूषनधरनदिव्यत
रभव्यलावण्यसिंधो॥जयतिगाधेयगौतमजनकसुखरवज-

नकविश्वकंठककुटिलकोटिहंता॥ वचनचयन्वातुरीपरसुधरग
 वर्हरसर्वदारामभद्रानुगंता॥ जयतिसीतेससेवासरसविषयर
 सनिरसनिरूपाधिधुरधर्मधारि॥ विपूलबलमूलशादूलवि
 क्रमजलदनादमर्दनमहावीरभारी॥ जयतिसंश्रामसागरभयं
 करतरनरामहितकरनवरवाहूसेतू॥ उर्मिलारमनकल्याणमं
 गलभवनदासतुलसीदोषदमनहेतू॥ ४०॥ जयतिभूमिजार
 मनपदकंजमकरंदरसरसोकमधुकरभरतभूरिभागी॥ सुव
 नभूषणभानुवंसभूषणभूमिपालमनिरामचंद्रानुरागी॥ टेक॥
 जयतिविबुधेसधनदादीदुर्लभमहाराजसंभ्राजसुरवपदवि
 रागी॥ रवङ्गधाराव्रतप्रथमरेषाप्रगटशुद्धमतिजुवतिमतप्रे
 मपागी॥ जयतिनिरूपाधिभक्तिभावजंत्रितहृदयबंधुहितचि
 त्तकुटाक्षिचारि॥ पादुकानृपसचिवपुहुमीपालकपरमधीरगं
 भीरवरवीरभारी॥ जयतिसंजीवनीसमयसकटहनुमानध
 जुवानमहिमाबषानी॥ बाहूबलविपुलपरमितिपराक्रमञ्च
 तुलगुढगतिजानकीजानिजानि॥ जयतिरनञ्जिरगंधर्व
 गनगर्वहरफेरिकिएरामगुनगाथगाथा॥ मांडवीचित्तचात
 कनबांबुदवरनसरनतुलसीदासअभयदाता॥ ४१॥ जयति
 जयशत्रुकरिकेशरीसत्रुरुनसत्रुतमतुहिनहरकिरणकेतू
 ॥ देवमहिदेवमहिधेनुसेवकसज्जनसिद्धसुनिसकलकल्या
 णहेतू॥ टेक॥ जयतिसर्वांगसुंदरसमिन्नासुवनविरव्या
 तभरतानुगामी॥ वर्मचर्मासिधुनुवानतुनीरधरसत्रूसं
 कटसमनपपप्रनामी॥ जयतिलवनांबुनिधिकुंभसंभवम

हादनुजदुर्जनदवनदुरतहारि॥ लक्ष्मणात्तुजभरतरामसी
 ताचरनरेनुभूषितभालतिलकधारी॥ जयतिश्रुतिकीर्तिवल्लभ
 सुदुर्लभसुलभनमितनर्मदभक्तभक्तिदाता ॥ दासतुलसीच
 रनसरनसीदतविभोपाहिदीनार्त्तसंतापहर्ता ॥ ४२ ॥ जयति
 सच्चिदव्यापकानंदयत्प्रह्लाविग्रहाव्यक्तलीलावतारी॥ विकलव-
 ह्लादिसुरसिद्धसंकोचवसविमलगुणगेहनरदेहधारी ॥ टंक ॥ ज
 यतिकोतलाधिसकल्यानकोसलसुनाकुसलवैवल्याफलचारु-
 चारी॥ वेदबोधितकर्मधर्मधरनोधेनुविभ्रसेवकसाधुमोदकारी
 ॥ जयतिरीषीमषपालसमनसज्जनसालसापवसभूनिवधुपा
 पहारि॥ भंजिभवचापदलिदापभूपावलीसाहितभृगुनायनत-
 मायभारी ॥ जयतिधार्मिकधोरधुरवीररघुवीरगुरुमातुपितु
 बंधुवचनानुसारी॥ चित्रकूटाद्रिविंध्याद्रिदंडकविपिनधन्य
 कृतपुण्यकाननविहारि ॥ जयतिपाकारिसुतकाककरतूति
 फलदानिपतिगर्तगोपितविराधा ॥ दिव्यदेविवेषदैषिलषि
 निमिचरीजनुविडंबितकरिविश्वबाधा ॥ जयतिषरत्रिशिर-
 दूषनचतुर्दशसहस्रभटमारीचसंधारकर्ता ॥ गीहसवरी
 भक्तिविवसकरुनासिंधुचरितनिरुपाधिनिविधार्त्तिहर्ता ॥
 जयतिमदभ्रंधकुक्कवधविधवालिवलसालिवधिकरनसुग्री
 वराजा ॥ सुभटमर्कटभालुकटकसंधटसज्जनमितपदरावना
 तुजनिवाजा ॥ जयतिपाथोधिहृतरोतुकौतुकहेतुकालमनभ्र
 गमलइललकिलंका ॥ सुकुलसानुजसदलदलितदशकंठरन
 लोकलोकपक्रियेविगतसंका ॥ जयतिसौमित्रिसीतासविव

सहितचलेपुष्पकारूढनिजराजधानी ॥ दासतुलसीसुदितअ
वधवासीसकलरामभयेभूपवैदेहिरानि ॥ ४४ ॥ जयतिराज
राजेन्द्रराजीवलोचनरामनामकलिकामतरुस्यामशाली ॥
अजयअंभोधिकुंभजनिशाचरनिकरतिमिरघनघोररघ
रकिरनमाली ॥ जयतिदेवमुनिदेवनरदेवदशरथकेदेवमुनि
बंधकियेअवधवासी ॥ लोकनाथककोकशोकसंकटशमन
शानुकुलकमलकाननविकासी ॥ जयतिशृंगाररसतामरसदा
मदुनिदेहगुणगेहविश्वोपकारी ॥ सकलसौभाग्यसौंदर्यसूष
मारूपमनोभवकोटिगर्वापहारी ॥ जयतिशुभगसारंगसुनि-
खंगसायकशक्तिचारुचर्मासिवरवर्मधारी ॥ धर्मधुरधीररघु
वीरभुजवलअतुलहेलयादलितभूभारभारि ॥ जयतिकलधौ
तमणिसुरगुदकुंडलतिलकऊलकभलिभालविधुवदनशोभा
॥ दिव्यभूषणवसनपीतउपवोतकियेध्यानकल्याणभाजनन
कोभाजयतिभरतसोमित्रसनुघ्नसेवितसुखसचिवसेवक
सुखदसर्वदाता ॥ अधमआरतदौनयतितपातकपीनसक
तनतिमात्रकैपाहिपाता ॥ जयतिभुवनदशाचारियशजगमग
तपुण्यमयधन्यजयजयधन्यरामराजाचरितसरसरितक
विमुरव्यगिरिनिःसरितपिबतमज्जतसुदितसंतसमाजा ॥
जयतिवर्णाश्रमांचारिवरनारिनरसत्यशमदमदयादान-
शीला ॥ विगतदुखदोषसंतोषसुखसर्वदासुनतगावतरा
मराजलीला ॥ जयतिवैराग्यविज्ञानवारानिधेनमतनर्मदपा
पतापहर्त्ता ॥ दासतुलसीचरणशरणासंशयहरणदेहिअव

लवरवैदेहीभर्ता ॥४४॥ रागगौरी ॥ श्रीरामचंद्रकृपालमु
 जुमनहरएाभवभयदारुणा ॥ नवकंजलोचनकंजसुरवकरकंज
 पदकंजारुपां ॥ कंदर्पअंगणितअमितछविनवनीलनीर
 जसंदरं ॥ पटपीतमानहुंतडितरुचिसुचिनौमिजनकसूता
 वरं ॥ सुजुदीनबंधुदिनेशदानवदैत्यवंशानिकंदनं ॥ रसुनंद
 अनंदकंदकोशलचंद्रदशरथनंदनं ॥ सिरसुकुटकुंडलतिल
 कृत्वारुउदारअंगविभूषणं ॥ अजातशुजशरचापधरसंघा
 मजितखरदूषणं ॥ इतिवदततुलसीदासशंकरशेषसुनिमन
 रंजनं ॥ मसहृदयकंजनिवासकरुकामादिरवलदलगंजनं ॥
 ॥४५॥ रागरामकली ॥ सदारामजपुरामजपुरामजपुरामजपुरा
 मजपु ॥ मूढगनवारंवारसकलसौभाग्यकरववातिजियजानिस
 ठमानिविश्वासवदवेदसारं ॥ ऐक ॥ कोशलेंद्रनवनीलकंजाभत
 नुमदनरिपुकंजहृदिचंचरिकं ॥ जानकीरवनसूषभवनभुवने
 कप्रभुसमरभंजनपरमकारुणीकं ॥ दनुजवनधूमध्यजपीन-
 अजातशुजदंडकोदंडवरचंडवानं ॥ अरुनकरचरनसुरवनयन
 राजीवगुनअचनबहुभयनसोभानिधानं ॥ वासनाष्टदकैरव-
 दिवाकरवामक्रोधमदकंजकाननतुषारं ॥ लोभअतिमतनागें
 द्रपंचाननंविप्रहितहरनसंसारभारं ॥ केशवंकेशहंकेसवंद्यंप
 ददंमंदाकिनीमूलभूतं ॥ सर्वदानंदसंदोहमोहापहंधोरसं-
 सारपाथोधिपोतं ॥ शोकसंदेहपाथोदपटलानिलंपापपर्वतक
 विनकुलिसरूपं ॥ संतजनकामधुकधेनुविश्रामप्रदनामकलि
 कलुषभजनअनूपं ॥ धर्मकल्पद्रुमनामहरिधामपथिसंवलं

मूलमिदमेवूष्कं भक्तिवैराग्यविज्ञानसमदानदमनामव्याधी
नसाधनअनेकं ॥ तेन तसंतेन दत्तमेवास्विन्नं तेन सर्ववृत्तं कर्म-
जालं ॥ जेनर्थारासनासासृतं पानकृतमनिसमनवचमवन्दो
क्यकालं ॥ श्वपचरवलभिलुजवनादिहरिलोकगतनामवन्द
विपुलमतिमलिनपरसी ॥ त्यागिसवत्र्याससंत्नासभवया-
शत्र्यासिनिसितहरिनामजसुदासतुलसी ॥ ४६ ॥ ऐसीच्यार
तीरामरधुवीरकीकरहीमनहरनीदुरवदंद्गोविंदच्यानं
दयन ॥ टेक ॥ अचरचररूपहारिसवंगतसवदावसतइ-
तिवासनाधूपदीजै ॥ दीपनिजबोधगतक्रोधमदमोहतम
पौढअभिमानचिन्तवृत्तिछिजै ॥ भावच्यतिसवधिपदम
वरनैवेद्यशुभश्रीरमनपरमसंतोषकारो ॥ प्रेमतांबूलगत
शूलसंशयसकलहीसुलभववासनावीजहारी ॥ अशुभ
शुभकर्मघृतपूर्णादसवत्तीकात्यागपादकसत्त्वगुणायका
शं ॥ भक्तिवैराग्यविज्ञानदीपावलीअविर्नीराजनंजगनि-
वासं ॥ विमलत्तदिभवनकृतशांतिपयंकेशुभसयनवि-
श्रामश्रीरामराया ॥ क्षमाकरुणाप्रसुरवतत्रपरिचारिका
यत्रहरितत्रनहिभेदमाया ॥ येहिच्यारतिनिरतसनकादि
शुकसेषसिवदेवरिषिअस्विलमुनितत्वदरसी ॥ जोईक
रैसोईतरैपरिहरैकामसबवदतइतिविमलमतिदास
तुलसी ॥ ४७ ॥ हरतीसवच्यारतीरामकी ॥ दहनीदुरव
दोषनिर्मूलनीकामकी ॥ टेक ॥ सुभगसौरभमधुपदीप-
वद्मालिका ॥ उडतअघविहंगसुनितालकरतालिका

॥भक्तहृदीभवनञ्जानतमहारनी॥ विमलविज्ञानमयतेजवि-
स्तारनी॥ मोहमदकोहकलिकंजहिमजामिनी॥ सुकृतीकीदनीका
हृदुतिक्रदेहदुतिदामिनी॥ प्रणतजनकुसुमदवनइंदुकरजालिका॥ तुलसी
अभिमानमहिषेसबहुकालीका॥ ४८॥ देवदत्तजवनदहनगुन
गहनगोविंदनंदादिअनंददाताविनासी॥ शंभुशिवरुद्रशंक
रभयंकरभीमघोरतेजायतनओधरासी॥ टेक॥ देवनंतभगवं
तजगदंतअंतकत्राससनश्रीरमनभुवनाभिरामं॥ भूधराधी
सजगदीसईशानवी ज्ञानयनज्ञानकल्याणधामं॥ देववाम
नाव्यक्तपावनपरावरत्रिभोगदपरमात्माप्रकृतिस्वामी॥ चं
द्रशेखरशूलपानिहरअनघअजअमितअविच्छिन्नवृषभेस
गामी॥ देवनिलजलदाभतनुश्यामबहुकामलविरामराजिवि
लोचनकृपाला॥ कंबूकसूरवपूधवलनिर्मलमौलिजटासुरतटि
निशितसुमनमाला॥ देववरसनकिंजल्कधरचक्रसारंगदर
कंजकौमोदकीअतिविसाला॥ मारकरिमत्तमृगराजत्रयनय
नहरनौमिअयहरनसंसारजाला॥ देवकृ करुनाभवनदव
नकालीयरवलविपुलकंसादिनीवंशकारी॥ त्रिपुरमदभंगक
रमत्तगजचर्मधराअंधकौरगयसनपन्नगारी॥ देव ब्रह्मव्या
पकअकलसकलपरपरमहितज्ञानगोतीतगुनवृत्तिहर्त्ता॥
सिंधुसूतगर्वीगरिवज्जगौरीसनवदछमषअखिलविध्वंस
कर्ता॥ देवभक्तिप्रियभक्तजनकामधुकधेनुहरिहरनदुर्घट
विकटविपत्तिभारी॥ सरवदनर्मदचरदविरजअनवद्यखिल
विपिनअनंदविधिनविहारी॥ देरुचिरहरिशंकरीनाममं

ला ॥ टेक ॥ देवचारिचरयपुपधरभक्तनिस्तारपरधरनिष्ठज
 नावमहिमातिगुर्वीरकलजजागमयउग्रविग्रहक्रोडमर्दि
 दनुजेसु उद्धरनउर्वी ॥ देवकमठअतिविक्रमनुकदिनष्ट-
 षोपरिभ्रमतमंदरकंडुसरवसुरारा ॥ प्रगटकृतअमृतगो
 इंदिराइंदुष्टंदारकाष्टंदआनंदकरी ॥ देवमनुजमुनिसिद्ध
 सरनागत्रासकदुष्टदनुजद्विजधर्ममर्जादहत्ता ॥ अतुल
 मृगराजवपुधरितद्विद्वरितअरिभक्तप्रल्हादआल्हाद
 कर्त्ता ॥ देवछलनवलिकपटवदुरूपवामनब्रह्मभुवनपर्यंत
 पदतिनिकरणं ॥ वरननषनीरत्रैलोक्यपावनपरमविशुध
 जननीदुसहशोकहरणं ॥ देवक्षत्रियार्थाशकरिनिकरव
 रकेशरीपरसुधीविप्रससीजलदरूपं ॥ वीसभुजदंडीद
 ससीसरवंडनचंडवेगसायकनौमिरामभूपं ॥ देवभूमि
 धरभारहरप्रगटपरमात्माब्रह्मनररूपधरभगतहेतु ॥
 वृष्णिकुलकुसुदराकेशाराधारमनकंसवसावविधूमके-
 तू ॥ देवप्रवलपारवंडमहिमंडलाकुलदेषि ॥ निंद्यकृतअ
 खिलभरवकर्मजालं ॥ शुद्धबोधैकधनज्ञानगुनधामअजबु
 द्धअवतारवंदेष्टपालं ॥ देवकालकलिजनितमलमलिनमन-
 सर्वनरमोहनीसिनिविडजवनांधकारं ॥ विष्णुजसपुत्रक
 ल्कीदिवाकरउदितदासतुलसीहरनधिपतिभारं ॥ देवसर्व
 सौभाग्यप्रदसर्वतोभद्रनिधिसर्वसर्वेसुसर्वाभिरामं ॥ सर्वद
 दिंकंजमकरंदमधुकररुचिररूपभूपालमनिनौमिरामं ॥ टेक ॥
 देवसर्वसरवधामगुतग्रामविश्रामप्रदनामसर्वासपदमतिपु

नितंनिर्मलंशांतस्त्विच्छुद्धबोधायतनक्रोधमदहृरनकरुनानि
 केतं ॥ देवअजितनिरुपाधोगोतीतमव्यक्तविभुमेकमनवद्यम-
 जमद्वितीयं ॥ प्राकृतंप्रगटपरमातमापरमहितप्रेरकानंदबंदे
 तुरीयं ॥ देवभूधरंस्कंदरंश्रीचरंमदनमदमथनसौंदर्यसीमाती
 रम्यं ॥ दुःप्राप्यदुःप्रेक्ष्यदुःस्तर्क्यदुःपारसंसारहरसुलभमृदुभा
 वगम्यं ॥ देवसत्यकृतसत्यरतसत्यवृत्तसर्वदापुष्टसंतुष्टसंफ
 ष्टहारी ॥ धर्मवर्माणिब्रह्मकर्मबोधैकविप्रपूज्यब्रह्मण्यजनप्रि-
 यसुरारी ॥ देवनित्यनिर्ममनित्यमुक्तनिर्मानहारी ज्ञानधन
 सच्चिदानंदमूलं ॥ सर्वरक्षकसर्वभक्षकाध्यक्षकूटस्थगूढार्चि
 भक्तानुकूलं ॥ देवसिद्धसाधकसाध्यवाच्यवाचकरूपमंत्रजाप
 जाप्यसृष्टिस्रष्टा ॥ परमकारनकंजनाभजलदाभतसुसगुण
 निर्गुणसकलदृश्यद्रष्टा ॥ देवव्योमव्यापकवीरजब्रह्मवरदे
 सवैकुण्ठवामनविमलब्रह्मचारी ॥ सिद्धचंदारकाचंदचंदितस
 दाषंडपारवंडनिर्मूलकारी ॥ देवपूर्णानंदसंदोहअपहरनसं
 मोहअज्ञानगुनसंनिपातं ॥ वचनमनकर्मगतसरनतुलसी
 दासपायोधिइवकुंभजातं ॥ ५३ ॥ देवविश्वविरव्यातविश्वे-
 सविश्वायतनविश्वमर्जादिव्यालारिगामी ॥ ब्रह्मवरदेसवागी
 सव्यापकविमलविपुलबलवाननिर्वाणस्वामी ॥ ऐक ॥ देवप्र
 कृतिमहत्तत्त्वशब्दादिगुणदेवताव्योममरुदग्निअमलांड
 उर्वीबुद्धिमनंद्रद्रियाप्राणाचितात्माकालपरमाणुचिच्छ-
 क्तिगुर्वी ॥ देवसर्वमेवान्नलद्रूपभूपालमाणिव्यक्तमव्यक्तग
 तभेदविष्णो ॥ भुवनभवदंसकामारिवंदितपदद्वंद्वमंदाकी

नीजनकविष्णो ॥ देवत्र्यादिमध्यांतभगवंतत्वासर्वगतमीशपस्यं
तिजेब्रह्मवादि ॥ जथापटतंतुघटमृत्तिकासर्पसृग्दासृक्करिकन
ककटकागदादी ॥ देवगूढगंभीरगर्वघ्नगूढार्थवित्तुशुभ्रगोतांत
गुरुज्ञानदाता ॥ ज्ञेयज्ञानप्रियप्रत्तुरगरिमागारघोरसंसारप
रपारदाता ॥ देवसत्यसंकल्पअतिकल्पकल्पांतकृतकल्पनाती
तअहितल्पवासी ॥ वनजलोचनवनजनाभवनदाभवपुवन
चरध्वजकोटिरूपरासी ॥ देवसकरदुष्करदुराराअदुर्च्यसनह
रदुर्गदुर्द्धर्षदुर्गीर्तिहर्ता ॥ वेदगर्भाभिकादभ्रगुणगर्वअर्वाक
परगर्वनिर्वापकर्ता ॥ देवभक्तअनुकूलभवशूलनिर्मूलकरत्
लअघनामपावकसमानं ॥ तरलतृष्णातमीतरनीधरणिध
रणशरणभयहरणकरुणानिधानं ॥ देववहुलघंडारकारं
दवंदारूपदवंदिमंदारमालोरधारि ॥ पाहिमामीससंतापसं
कुलसदादासतुलसीप्रनतरावनारी ॥ ५४ ॥ देवसंतसंतापह
रहिष्वविश्रामकररामकामारिअभिरामकारी ॥ शुद्धबोधायत
नसच्चिदानंदधनसज्जनानंदवर्द्धनधरारी ॥ एक ॥ देवसील
समताभवनविषमतामतीसमनरामरामारमनरावनारी ॥
षड्भुकरचर्मवरवरमधररुचिरकदितूनसरसक्तिसारंगधा
री ॥ देवसत्यसंधाननिर्वाणप्रदसर्वाहितसर्वगुणज्ञानवि-
ज्ञानशाली ॥ सधनतमघोरसंसारभरसर्वरीनामदिवसे-
सषरकिरिनमाली ॥ देवतपनतीक्ष्णतरुणतीव्रतापद्यत
परूपतनुभूपतमपरतपस्वी ॥ मनमदमदनमत्सरमनोर-
थमथनमोहअंभोधिमंदरमनस्वी ॥ देववेदविरव्यातवर

देसवामनविरजविमलवागीसवैकुण्ठस्वामी ॥ कामक्रोधादिम
 र्दनविवर्द्धनक्षमाशांतविग्रहविहंगराजगामी ॥ देवपरमपा
 वनपापपुंजसुंजाटवीअनलइषानिमिषनिर्मूलकर्त्ता ॥ भुवन
 भूषणदूषनारिभुवनेसभूनायअतिमाथजयभूवनभर्त्ता ॥ दे
 वअमलअविचलअकलसकलसंततकलिविकलताभंजना
 नंदरासी ॥ उरगनायकशयनतरुनपंकजनयनक्षीरसागर-
 आयनसर्ववासी ॥ देवसिद्धकविकोविदानंददायकपददंड
 मंदात्ममत्तुजैर्दुरायं ॥ यत्रसंभूतअतिपूतजलशूरसरीदर्श-
 नादेवअपहरतिपापं ॥ देवनित्यनिर्मुक्तसंशुक्तरुणनिर्गु-
 णानंतभगवंतन्यामकनियंता ॥ विश्वपोषणभरणविश्वका
 रणकरणशरणातुलसीदासत्रासहंता ॥ ५५ ॥ देवदनुजसू
 दनदयासिंधुदंभापहंदहनदुर्दोषदुष्यापहर्त्ता ॥ दुष्टतादमन
 दमभवनदुःखौघहरदुर्गदुर्वसिनानाशकर्त्ता ॥ टेक ॥ देव
 भूरिभूषणभानुमंतभगवंतभवभंजनाभेदभुवनेशभारी
 ॥ भावनातीतभवबंधभवभक्तहितभूमिउद्धरणभूधरण
 धारी ॥ देववरदवनदाभवागीसविश्व्यात्साविरजवैकुण्ठमं-
 दिरविहारी ॥ व्यापकंव्योद्याधिपावनविभोब्रह्मविद्ब्रह्मचिं
 तापहारी ॥ देवसहजसुंदरसुखसुमनश्चुभसर्वदाशु-
 ष्टसर्वज्ञस्वच्छंदचारी ॥ सर्वकृतसर्वभृतसर्वजीतसर्वहिं-
 तसत्यसंकल्पकल्पान्तकारी ॥ देवनित्यनिर्मोहनिर्गुणानिरं
 जननिजानंदनिर्माननिर्वाणदाता ॥ निर्भयानंदनिःकंपनिः
 सीमनिर्मुक्तनिरूपाधिनिर्ममविधाता ॥ देवमहामंगलसू-

लमोदमहिमायतनसुग्धमधुमयनमानदत्र्यमानी ॥ मदनमर्द
 नमदातीतमाचारहितमंजुमानायपायोजपानी ॥ देवकमन्त्रो
 च्चनकलाकोसकोदंडधरकोसलाधीशकल्याणरासी ॥ जातु-
 धानप्रचुरमतकरिकेसरीभक्तमनसुष्यत्रारण्यवासी ॥ देव
 अनघअद्वैतअनवद्यमव्यक्तआजअमितअविकारअनं
 दसिंधो ॥ अचलअनिकेतअविरलअनामयअनारंभअंभो
 दनादघ्नवंधो ॥ देवदासतुलसीषेदपिन्नआपन्नहरसोकसं
 पन्नअतिशयसभीतं ॥ प्रणतपालकरामपरमकरुणाधा
 मपाहिभासुर्वापतिदुर्विनीतं ॥ ५६ ॥ देवदेहिसतसंगनिज-
 अंगश्रीरंगभवभंगकारणसरनसोकहारी ॥ जेतुभवदं
 ध्रिपल्लवसमाश्रितसदाभक्तिरत्तविगतसंशयमुरारी ॥
 ॥ टेक ॥ देवअस्तरस्तरनागनरजक्षगंधर्वरवगरजनीचर
 सिंधजेचापिअन्येसंतसंसर्गत्रयवर्गपरपरमपदप्रायनिः
 प्रापगतित्वयिप्रसन्ने ॥ देववृत्रवलिवानग्रहलादमयव्याध
 गजगिद्धद्विजबंधुनिजधर्मत्यागी ॥ साधुपदसलिलनिर्धूत
 कल्मषसकलस्वपंचजवनादिकैवल्यभागी ॥ देवशांतनीर
 पेक्षनिर्ममनिरामयअशुनशब्दब्रह्मैकपरब्रह्मज्ञानी ॥ द
 क्षसमदृक्स्वदृक्विगतअतिस्वपरमतिपरमरतिवीरति
 तवचक्रपानी ॥ देवविश्वउपकारहितव्यग्रचित्तसर्वदात्य-
 क्तमदमन्थुकृतपुन्यरासी ॥ यत्रतिष्ठतितत्रैवअजसर्वह
 पिसहितगच्छतिक्षीराब्धीवासी ॥ देववेदपयसिंधुसु-
 विचारमंदरमहाअखिलसुनिवृंदनिर्मथनकर्ता ॥ सार

सतसंगउद्धत्यप्रतिनिश्चितं वदत श्रीकृष्णवैदर्भिभर्ता ॥ देवशो-
कसंदेहभयहर्षतमतर्षगनसाधुसंयुक्तिविच्छेदकारी ॥ यथा
रघुनाथसायकनिशाचरचमूनिचयनिर्दलनपटुवेगभारी ॥
देवयत्रकुत्रापिममजन्मनिजकर्मवसम्भ्रमतजगज्जोनि संकट
अनेकं ॥ तत्रत्वद्भक्ति सज्जनसमागमसदाभवतु मेरामवि-
श्राममेकं ॥ देवप्रलभवजनितत्रैव्याधिभेषजभक्तिभक्त —
भैषज्यमद्वैतदरसी ॥ संतभगवंतंत्रंतरनिरंतरनही किमपि-
मतिविमलकहेदासतुलसी ॥ ५७ ॥ देवदेहीअवलंबकरकम-
लकमलारमनदमनदुःखसमनसंतापभारी ॥ ज्ञानराकेसं-
यासनविदुं तुददलनकामकरिमत्तहरिदूषनारी ॥ टेक ॥ दे-
ववपुषत्रह्लांडसुप्रवृत्तिलंकादुर्गरचित्तमनदनुजमयरूपधारी
विविधिकोसौद्यप्रतिरुचिरमंदिरनिकरसत्वगुनप्रसुरवत्रयक
टककारी ॥ देवकूनपत्रभिमानसागरभयंकरघोरविपुलअ-
वगाहदुस्तरअपारं ॥ नक्रागादिसंकुलमनोरथसकुलसंग
संकल्पवीचीविकारं ॥ देवमोहदशमौलितदभ्रातअहंकारपा-
कारिजितकामविश्रामहारी ॥ लोभप्रतिकायमत्सारमहोदर
दुष्टक्रोधपापिष्टविबुधांतकारी ॥ देवदेषदुर्मुखदंभषरअकं-
पनकपटदर्पमनुजादमदशूलपानी ॥ अमितबलपरमदुर्जय
निशाचरनिकरसहितषडवर्गगोजातुघानी ॥ देवजीवभव
दंघ्रीसेवकविभिन्नवसतमध्यदुष्टारविप्रसितचिंता ॥ नि-
यमगमसकलसरजोगलोकेशलकेशवसनाथअत्यंतभी-
ता ॥ देवज्ञानअवधेसग्रहगेहनीभक्तिशुभतत्रअवतारभू-

अमारहर्ता ॥ भक्तसंकष्टमवलोक्यपितृवाक्यकृतगवनकि
 योगहनवैदोहिभर्ता ॥ देवकैवल्यसाधनत्रिखिलभालुमर्क
 टविपुलज्ञानसूत्रीवकृतजलधिसेतु ॥ प्रबलवैराग्यदाकृण
 प्रभंजनतनयविषयवनदहनमीवधुमकेतु ॥ देवदुष्टदनुजे
 सनिरवंसकृतदासहितविश्वदुरवहरनबोधैकरासी ॥ अतु
 जनिजजानकिसहित हरिसर्वदादासतुलसीहृदयकमल
 वासी ॥ ५८ ॥ देवदीनउद्धररघुवर्यकरुणाभवनसमनसंतापपापौघ
 हारी ॥ विमलविज्ञानविग्रहअनुग्रहरूपभूपवरविबुधनर्मदक्ष
 री ॥ टेक ॥ देवसंसारकांतारअतिघोरगंभीरघनगहनतरुकर्मसं
 कुलसुरारी ॥ वासनावल्लिषरकंठकाकुलविपुलनिविडवित्पाठविक्री
 नभारी ॥ देवविधिधितृत्तिषगनिकरसेनोलूककाकवकप्रद्व्या
 मिषअहारी ॥ अखिलषलनिपुनछलछिद्रनिरषतसदा-
 जीवजनपथीकमनषेदकारी ॥ देवकोपकरिमत्तभृगराज
 कंदर्पमददृष्यकभालुअतिबुधकर्मा ॥ सहिषसत्सरकूरलो
 भसूकरशूरफेरुच्छलदंभभाजिदिधर्मा ॥ देवकपटमर्कटविक
 टव्याघ्रपारखंडसुषुषुषदमृगजातउतपातकर्ता ॥ हृदयअव-
 लोकियहसोकसरनागतपाहिभोपाहिमांविश्वभर्ता ॥ देव
 प्रबलअहंकारदुर्घटमहिधरमहासोहगिरीराहानोविडांध-
 कारं ॥ चितवेतालमनुजादमनप्रेतगनरोगभौगौघवृश्विक-
 विकारं ॥ देवविषयसुखलालसादंसमसकादिषलज्जि
 रूपादिसवसर्पस्वामी ॥ तत्रअच्छिप्रतषविषमसायानायअं
 धमंधमंदव्यालादिगामी ॥ देवघोरअवगाहभवआपगापा-

पजल पूरदुःप्रेक्ष्यदुस्तरअपारा ॥ मकरषडवर्गगोनक्रचक्रा
कुलाकुलशतभअशतभदुःखतीप्रधारा ॥ देवसकलसंघ
टयोचसोचवससर्वदादासतुलसीवीषमगहनग्रस्तं ॥ आहि
रघुवंसभूषणकृपाकरकठिनकालविकरालकलिआसन्नस्तं
॥ ५९ ॥ देवनौमिनारायणंनरंकरुणायनंध्यानपारायणंज्ञा
नमूलं ॥ अखिलसंसारउपकारकारणसदयहृदयतपनि
रतप्रणतानुकूलं ॥ टेक ॥ देवश्यामनवतामरसदामदुतिव
पुषच्छविकोटिमदनार्कअग्निनीतप्रकाशं ॥ तरुनरमनीय
राजीवलोचनललितवदनराकेसकरनिकरहासं ॥ देवक
कसौंदर्यनिधिविपुलगुणधामविधिवेदबुधसंभुसेवित
अमानं ॥ अरुणपदकंजमकरंदमंदाकिनीमधुपसुनिचं
दकुर्वंतिपानं ॥ देवशक्रप्रेरितघोरमारमदभंगक्रतक्रोध
गतबोधरतब्रह्मचारि ॥ मार्कंडेयसुनिवर्ज्यहितकोतुकी
विनहिकल्यांतप्रभुप्रलयकारी ॥ देवपुन्यवनशैलसरिब
द्रिकाश्रमसदासीनपद्मासनंएकरूपं ॥ सिद्धजोगींद्र
वृंदारकानंदप्रदभद्रदायकदर्शअतिअनूपं ॥ देवमान
मनभगचि तभंगमदक्रोधलोभादिपर्वतदुर्गध्रुवन-
भर्ता ॥ द्वेषमत्सररागप्रबलप्रत्यूहअतिभूरिनिर्दयक्रूर
कर्मकर्त्ता ॥ देवविकटतरवक्रक्षरधारप्रमदातीव्रदर्पकं
दर्परखरखड्गधारा ॥ धीरगभीरमनपीरकारकतत्रकेव
राकावयंविगतसारा ॥ देवपरमदुर्घटपंथफलअसंगत
साथनाथनहिहाथवरविरनियधी ॥ दरसनारतदा-

सत्रसितमायापासत्राहिहरिआहिहरिजानीकषी ॥ देवदास
तुलसीदिनधर्मसंबलहीनश्रमितअतिषेदमतिगोहयासी
॥ देहिअवलंबनविलंबअंभोधजकरचक्रधरतेजबलसर्म
रासि ॥ ५९ ॥ देवसकलसुखकंदआनंदवनपुन्यकृतबिंदु
माधवहृदविपतिहारि ॥ यस्यांघ्रिपाथोजअजसंभुसनका
दिशुकशेषमुनिचंद्रअलिनिलयकारी ॥ टेक ॥ देवअमलमर
कृतश्यामकामसतकाटिछविपीतपटतडितइवजलदनीलं ॥
अरूनसतपत्रलोचनविलोकनिचारुप्रनतजनसुखदक
रुणाधिशीलं ॥ देवकालगजराजमृगराजदत्तुजेसवनदह
नपाचकमोहनिमिदिनेसं ॥ चारिभुजचक्रकौमोदकीज-
लजदरसरसिजोयारिजथाराजहंसं ॥ देवमुकुटकुंडल
तीलकअलकअलिवातइवभृकुटीद्विजअधरवरचाक-
नासा ॥ रुचिरसुकपोलदरश्रीवसुषसीवहरिइंदुकरकुं
दमिवमधुरहासा ॥ देवउरसीवनमालसुविसालनवमं
जरीभाजश्रीवत्सलांछनसुदारं ॥ परमब्रह्मस्यअतिध
न्यगतमन्युअजअमितबलविपुलमाहिमाअपारं ॥ देव-
हारकेयूरकरकनककंकरतनजटितमनिमेखलाकटि
प्रदेशं ॥ जुगलपदनूपुरासुखरकलहंसरवसूभगसर्वा
गसौंदर्यवेषं ॥ देवसकलसौभाग्यसंजुक्तत्रैलोकश्रीदक्ष
दिसीरुचिरचारिसकन्या ॥ वसतविवुधापगानिकटत
टसदनवरनयननिरषंतिनरतेतिधन्या ॥ देवअखिलमं
गलभवननिषिडसंसयसमनदमनवृजिनाटविकष्टह-

कर्ता ॥ विश्वकृत विश्वहित अजितगोती तशिव विश्वपाल नहरन विश्व
 कर्ता ॥ देवज्ञान विज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यनिधि सिद्धि अनिमादि देमूरिदा
 नं ॥ असितभव व्याल अतिभास तुलसीदास आहि श्रीर मन उरगारि
 जानं ॥ ६० ॥ राग असावरी ॥ इहै परमफल परमवडाई न षसिषरु-
 चिर बिंदु माधव छविनी पहुन यन अघाई ॥ टेक ॥ विषद कि सोरपीन
 सुंदर वपु स्था मसरु चि अघिकाई ॥ नीलकंज वारि दत मालमनि
 इनतनते दुतिपाई ॥ मृदल चरन शकभ चिन्ह पदजन ष अति अभूत
 उपमाई ॥ अरून नील पाथोज प्रसव जनु मनि जुत दलसमुदाई ॥
 जातरूपमनि जडित मनोहर नूपुरजन सरवदाई ॥ जनुहर उरह
 रिवि विधिरूप धरि रहे वर भवन वनाई ॥ कटित टरटि चारु किं-
 किनी रव अनुपम वरनी नजाई ॥ हेमजलज कल कलिन मध्याज
 नुं मधुकर मुपर सोहई ॥ उरवी साल भ्रगु वरन चारु अति सुच
 तकोमलताई ॥ कंकनहार विविधि भूपन विधिरचे निजकर मनुला
 ई ॥ गजमनिमाल विच भ्राजत कहि जातन पदिकनिकाई ॥ जनु
 उडगन मंडल वारिद पुरन वय हरची अयाई ॥ भुजभोग भुजदंडकं
 जदरचक्रगदावनि आई ॥ सोभासी वशी वची वुका धरवदन अमि
 तल विछाई ॥ कुलिसकुंदकुडमल दामि निदुती दसन नदपिलजा
 ई ॥ नासानयतकपोल ललिन अती कुंडल भूमोहि भाई ॥ कुंचित
 कचसिर मुकुटभाल परतिलक कहांसमुजाई ॥ अलपतडित जु
 गरेष इंदुमुद्गरहित जिचंचलताई ॥ निर्मलपित दूकूल अनुपम
 उपमाहि यन समाई ॥ बहुमनि जुत गिरि निलसि परपरकनक
 वसन रुचिराई ॥ दक्षभाग अनुराग सहित इंदिरा अधिकललि

तार्द्र ॥ हेमलताजनुतरुतमालाङ्गिनिलनिन्वोलुचोद्गार्द्र ॥ सतसा
 रदासेषश्रुतीमिलिकरिसोभाकहिनसिरार्द्र ॥ तुलसीदासमतिमं
 दद्वंद्वरतकहैकोनविधीगार्द्र ॥ ६१ ॥ जैत्र्यामनइतनोइहैयातन-
 कोपरमफल ॥ सवंत्रंगसुभगविंदुमाधवर्चावितजिरसुभाउअव
 लोकुएकफल ॥ टेक ॥ तरूनअरूनअंभोजचरनमृदुनपदुतिद
 दयतिभिरहारी ॥ कुलिसकेतुजवजलजरंषवरअंकुसजनमग
 वसकारी ॥ जटितकनकमनिनूपुरमेपलकटितटरदितमधुरया
 नी ॥ त्रिवलिउदारगंभीरनाभिसरजहंउपजेविरंचिज्ञानी ॥ उरव
 नमालपदिकअतिसोभितविप्रचरनचितकहुंकरपै ॥ स्यामता
 मरसदाभवरनवपुपीतवसनसोभावरपै ॥ करकूंकनकेयूरमनो
 हरदेतिमोदसुद्रिकंन्यारी ॥ गदाकंजदरचारुचक्रधरनागसंडस
 मभुजचारी ॥ कंबुग्रीवछविसींवचीतुकद्विजअधरअरूनउन्न
 तनासा ॥ नवराजीवनयनससिआननसेवकसरवदविषदहासा
 ॥ रुचिरकपोलअवनकुंडलसिरमुकुटसुनिलकमालभाजै ॥ ल
 लितमृकुटिसंदरचितवनिकचनिरषिमधुपअवलिलाजै ॥ रूप
 सीलगुनरवानिदच्छदिसिसिंधुसुतारतपदसेवा ॥ जाकीकृपा
 कटाछचहतसिवविधिसुनिमनुजदत्तुजदेवा ॥ तुलसीदासभ
 वत्रासमिवैतवजवभनयेहिसरूपअटकै ॥ नाहितवदिनमलिन
 हिनसरवकोटिजनमभ्रमिभ्रमिभवकै ॥ ६२ ॥ रागवसंत ॥ वंदौ
 रघुपतिकरुणानिधान ॥ जातेछूटहिभवभेदज्ञान ॥ टेक ॥ रघुवं
 शकुमुदसरवप्रदनीसेस ॥ सेवितपदपंकजअजमहेस ॥ निजभ
 क्कदयपाथोजभृंगलावन्यवपुषअगिनीतअनंग ॥ अतिप्रब

लसोहतमभारतंड ॥ अज्ञानगहनपावकप्रचंड ॥ अभिमानसिं
 धुकुंभजउदार ॥ सुररंजनभंजनभूमिभार ॥ रागादिसर्पगन
 पन्नगारी ॥ कंदर्पनागभृगपतिपुरारी ॥ भवजलधिपोतचर-
 नारविंद ॥ जानकीरमनश्चानंदकंद ॥ हनुमंतप्रेमवापिमराल
 ॥ निःकामकामधुकगोदयाल ॥ नयलोकतिलकगुनगहनराम
 ॥ कहतुलसीदासविश्रामधाम ॥ ६३ ॥ रागभैरव ॥ रामरामरमु
 रामरामजपुरामरामरदुर्जीहा ॥ रामनामनवनेहमेहकोमन
 हृदिहोहिपर्षाहा ॥ टेक ॥ सबसाधनफलकूपसरितसरसागर
 सलिलनिरासा ॥ रामनामरतिस्वातिशुधासुमसीकरप्रेमपि-
 आसा ॥ गरजितरजोपाषाणपरूषपविप्रीतिपरपिजियजानी
 ॥ अधिकअविकअनुरागउमगउरपरपरमितिपहिचानी ॥
 रामनामगतिरामनाममतिरामनामअनुरागी ॥ हैगएहैजै
 होहिगेतेत्रिभुवनगनियेतवडभागी ॥ एकअंगमगअंगम
 गवनकरूविलंबनछलछिनछाहैं ॥ तुलसीहितअपनोअ
 पनिदिसिनीरूपधिनेमनिवाहे ॥ ६४ ॥ रामजपुरामजपुराम
 जपुवावरे ॥ घोरभवनीरनिधिनामनिजनावरे ॥ टेक ॥ एकहि-
 साधनसवरिधिसिधिसाधीरे ॥ असेकलिरोगजोगसंजमस
 माधिरे ॥ भलोजोहैपोचजोहैदाहितोजोवामरे ॥ रामनामहीं
 सोअतसवहिसोकामरे ॥ जगनभवाटिकारहिहैफलफुलरे
 ॥ धुवांकेसोधौरहरदेषितूनभूलरे ॥ रामनामछोडिकोभरो-
 सोकरैअौररे ॥ तुलसीपदोसोत्यागीमागैकूरकौररे ॥
 ॥ ६५ ॥ ॥ ॥ रामनामजपुजीपुसदा

सानुरागरे ॥ कलिनविरागजोगजागतपत्यागरे ॥ टेक ॥ रामना
मसुमिरनसवविधिहिकोराचुरे ॥ रामकोविसारिवोनिपेदम
रताचुरे ॥ रामनाममहामनिफनिजगजानुरे ॥ मनिलियफ
निजियव्याकुलवेहालरे ॥ रामनामकामतरुदेतफलचारिरे ॥
कहतपुरानवेदपंडितपुरारिरे ॥ रामनामप्रमपरमारथको
साररे ॥ रामनामतुलसीकोजीवनअधाररे ॥ ६६ ॥ रामरा
मरामजीबुजोलौतूनजपिहैं ॥ तौलौतूंकहीजादीतिहतापतपि
हैं ॥ टेक ॥ सुरसरितोरवितुनिरदुरवपाइहैं ॥ सरतरुतरेंता
हिदारिदसताइहैं ॥ जागतवागतसपनेनसरखसोइहैं ॥ ज
नमीजनमीजुगजुगजगराइहैं ॥ छूटिवेकीजतनविसंपवा
धोजाइगो ॥ हैंहोविषभोजनसुधासोसा निपाइगो ॥ तुलसी
तिलोकतिहंकालतोसेदीनको ॥ रामनामहीकीगतिजैसेजल
मिनको ॥ ६७ ॥ सुमिरिसनेहसोतूनामरामरामरायको ॥ सं
वरनिसंवरीकोसषाअसहायको ॥ टेक ॥ भागहैअभागेहि-
कोरुनगुनहीनको ॥ माहकगरिवकोदयालदानीदीनको ॥ कु
लअकुलिनकोसनेनकोऊमापिहैं ॥ पागुरेकेहाथपावअं
धरेकीअधिहैं ॥ मायबापभूपेकोअधारनिराधारको ॥ सं
तुभवसागरकोहेतुसरखसारको ॥ पतीतपावनरामनामसो
नदूरागो ॥ सुमिरिसभूमीभयोतुलसीसोऊसरो ॥ ६८ ॥ भलो
भलिभातिहैंजोमेरेकहेलागिहैं ॥ मनरामनामसोसूभायेअ
नुरागिहैं ॥ टेक ॥ रामनामकोप्रभाऊजानिजुडिआगिहैं ॥
सहितसहायकलिकालभीरभागिहैं ॥ रागरामनामसोविरा

मजोगजागिहै ॥ वामविधिमालहूनकरमदागदागिहै ॥ रामना
ममोदकस्रुधासनेहपागिहै ॥ पाइपरितोषतूनद्वारद्वारवागि
है ॥ रामनामकामतरुजोईजोईमांगोहै ॥ तुलसीदासस्वारथप
रमारथौनषांगिहै ॥ ७० ॥ ऐसहसाहिवकीसेवाकोहोतचोररे
॥ आपनिनवूँ नकहैकांराडोररे ॥ सुनिमनअगमस्रुगम
मायवापसोकृपासिंधुसहजसरवासनेहीआपसो ॥ लोकवे
दविदितबडोनरधुनाथसो ॥ सवदिनसबदेससवहिकेसा-
थसो ॥ स्वामीसर्वज्ञसोचलेनचोरिचारकी ॥ प्रीतिपहिचा
नियहरितिदरवारकीकायनकलेसलेसलंतमानिमनकी ॥ सु
मिरिसकुचरुचिजोगवतजनकीरीझेवसहोतषीजेदेतनि
जधामरे ॥ फलतसकलफलकामतरुनामरेवे-वेषोदोदामन
मिलेनराषेकामरे ॥ सोउतुलसीनीवाजोऐसोराजारामरे ॥
॥ ७१ ॥ मेरोभलोकीयो रामआपनिभलाईहोतोसांई ॥ दोहपै
सेवकहितसाई ॥ रामसोवडोहैकोनमोसोकौनछोटौ ॥ राम-
सोषरोरवसमसोसोषलषोटौ ॥ लोककहैरामकोगुलामहौं
कहावौ ॥ एतोबडोअपराधमनभौनपावौ ॥ पाथमाथेचढैतृ
नतुलसीज्यौनीचो ॥ वोरतनवारीताहिजानीआपसीचो ॥ ७२
॥ जागुजागुजागुजीवजोहैजगजाभीनी ॥ देहगेहनेहजानि-
जैसोधनदामिनी ॥ सूतेसपनेहिसहैसंसृतिसंतापरे ॥ बुडो
मृगवारिरवायोजेवरीकेसापरे ॥ कहैवेदबूधतुंतौबूजीमन
माहिरे ॥ दोषदुषसपनेकेजागेहीपैजाहीरे ॥ तुलसीजागेते
जायतिहंतापतायरे ॥ रामनामसूचिरुचिसहजस्रुभायरे ॥

॥७३॥ रागविभास ॥ जानकीसकीकृपाजगावतीसृजानजीव
जागील्यागीमूढतानुरागश्रीहरे ॥ करिविचारतजिविकारभजि
उदाररामचंद्रभद्रसिंधुदीनबंधुवेदवदतरे ॥ टेक ॥ मोहमयक-
हुनिसवितालकालविपुलसोयोषोयोसोअनूपरूपस्वपनजू
परे ॥ श्रवप्रभातप्रगटज्ञानभातुकेप्रकासवासनासरोगमो
हद्वेषनिबिडतमटरे ॥ भागेमदमानषोरभोरजानीजातुधा
नकामक्रोधलोभक्षोभनिकरअपडरे ॥ देखतरघुवरेप्रता
पवितेसंतापपापतापत्रिविधिप्रेमआपदूरिहिकरे ॥ श्रवन
सूनिगिरागंभिरजागेअतिधीरवीरवरविरागतोषसकल
संतआदरे ॥ तुलसीदासप्रभुलूपालनिरखिजीवजनविहा
लभज्यौभवजालपरममंगलान्वरे ॥ ७४ ॥ रागललित ॥ षो
दोषरोरावरोहौरावरिसौरावरसोंफूठक्येकहोंगोजानोस
बहीकेमनकी ॥ करमवचनहियेकहोनकपटकियेअसैह
ठजैसैगांठीपानिपरेसनकी ॥ टेक ॥ दूसरोभरोसोनहिवा
सनाउपासनाकीवासवविरंचिसूरनरसुनिगनकी ॥ स्वार
थकेसाथीमेरेहाथीसोनलेवादेईकाहूतोनपीररघूवीरदीनज
नकी ॥ सांपसभासावरलवारभएदेवदिव्यदुसहसासतिकी
जैआगेदैयातनकी ॥ सांचेपरेपावौपानपांचमेपनप्रवानतु
लसीचातकआसरामस्थामघनकी ॥ ७५ ॥ रामकोगुलाम
नामरामचोलारामराख्योकामइहैनामद्वैहौकवहूकहतहौं
॥ रोदिल्लुगानीकेरापैअगेहूकोवेदभाषैभलोइहैतेरोतातेआ
नंदलहतहौं ॥ टेक ॥ वांध्यौहौंकरमजडगरभगूढनिगडसून

तदुसहहौतौसांसतिसहजहौं ॥ आरतअनाथनाथकोसल
पालकृपाललिन्हौछानीदिनदेरव्यौदुरितदहतुहौं ॥ वृथ्योज्यौ
हिकद्यौमैहूचेरोक्केहौरावरोज्युमेरेकोउकहूनाहीचरनग
हतहौं ॥ मीर्जागुरपीठीआपनाइगहिवाहवोलिसवकरसरवदस-
दाविरदवहतुहौं ॥ लोंगकहेपोचसोनसोत्तुनसकोत्तुमेरेव्याह
नवरेषीजातिपातिनचहतुहौ ॥ तुलसीकाजअफाजरामहिके
रिऊषिऊपीतिकीप्रतितीमनमुदितरहतुहौ ॥ ७५ ॥ जानकीके
जीवनजगजीवनजगतहितगदीसरधुनाथराजीवलोचनरा
म ॥ सरदविधुवदनसुषसीलश्रीसदनसहजसुंदरतनसोभा
अगिनीतकाम ॥ टेक ॥ जगसुपीतासुमातुसुगुरुसहितमीत
सवकोदाहीनोदीनबंधुकाहूकोनवाम ॥ आरतिहरनसरनद
अतुलितदानिप्रनतपालकृपालपतितपावननाम ॥

सकलविश्वचंदितसकलसरसेवितआगमनिगमकहेराव
रेईगुनग्राम ॥ इहैजानिकैतौतुलसीतिहारोजनभयोन्यारो
कैगनिवोजहांगनेगरीवगुलाम ॥ ७६ ॥ रागटोडी ॥ देवदीन-
नकोदयालदानिदूसरोनकोउ ॥ जासोदीनताकहौमैदेषोदी
नसोरु ॥ टेक ॥ देवसरसुनिनरनागअसरसाहीबतौघसे
रे ॥ तौलौंजौलौंरावरेननेकनयनफेरे ॥ देवत्रिभुवनतिहुका
लविदितवदतवेदचारी ॥ आदिअंतमध्यरामसाहिषीतिहा
रि ॥ देवतुमहिमागिमागनोनमागनोकहायौ ॥ सुनीसुभा
वसीलसुजसजाचनजनआयो ॥ देवपाहनपशुविटपविहं
गअपनेकरिलीन्है ॥ महाराजदशरथकेतैरंकराउकोन्है ॥

देवतूंगरीबकोनेबाजहोंगरीवतेरो ॥ वारिककहिपैकृपालतुल
 सीदासमेरो ॥ ७७ ॥ देवतूंदयालदीनहांतूदांनिहोभिषारी ॥
 होप्रसिद्धपातकीतूंपापपूजहारिदेवनाथतूअनाथकोअनाथ
 कौनमोसो ॥ मोसमानआरतनहिआरतहरतोसो ॥ देवब्रह्म
 तूहौजीवतूटाकूरहौचैरो ॥ तातमातुरसपातुसवविधि-
 हितमेरो ॥ देवतोहिमोहिनातेअनेकमानियैजोभावे ॥ ज्योन्यो
 तुलसीकृपालवरनसरनपावै ॥ ७८ ॥ देवऔरकाहीमागियै
 जोमागिवोनिवारै ॥ अभिमत्तदातारकौनदुरखदरिद्रदारे ॥ टं
 क ॥ देवधरमधामरामकामकोटिरूपरूरो ॥ साहेबसवविधि
 सजानदानखड्गसूरो ॥ देवसूसमयदिनहैनिसानसबकेद्वार
 रवाजेकुसमयदसरथकेदानितैगरिबनेवाजे ॥ देवसेवावि
 लुगुनविहीनदीनतकनाए ॥ जेजेतैनिहालकियेतेफूलेफिर
 तपाए ॥ देवतुलसीदासजाचतरुचिजानिदानदिजै ॥ रामचं
 द्रचंद्रतूंचकोरमोहिकीजे ॥ ७९ ॥ दीनबंधुसरसिंधुकृपा
 करकारुनीकरधुराई ॥ सनहुनाथमनजरतत्रिविधिजर-
 करतफिरतवौराई ॥ कबहुजोगतभोगनिरतसठहठिवि
 योगवसहोई ॥ कबहुमोहषसंद्रोहकरतबहुकबहुंदयाअ
 तिसोई ॥ कबहुदिनमतिहिनरंकतरकबहुभूपअभिमानि
 ॥ कबहुमूढपंडितविडंबतरकबहुधर्मरतज्ञानी ॥ कबहुदे-
 षीजगधनमयरिपुमयकबहुनारिमयभासै ॥ संसृतिस
 निपातदारूनदुषविनुहदिकृपाननासै ॥ संजमजपतने
 मधर्मव्रतबहुभेषजसमुदाई ॥ तुलसीदासभवशोगरा-

मपदप्रेमहिन्ननहिजाई ॥ ८० ॥ मोहजनितमललागविवि -
 धविधिकोदिहुजतननहाई ॥ जन्मजन्म अभ्यासनिरतचित
 अधिकलपटाई ॥ नयनमलिनपरनारिनिरखिमनमलिन-
 विषयसंगलागे ॥ हृदयमलिनवासनामानमदजीवसहजस्र
 खत्यागे ॥ परनिंदास्रनिश्चयनमलिननएवचनदोषपरगाये
 ॥ सबप्रकारमलभारलागनीजनाथचरनविसराए ॥ तुल-
 सीदासवृत्तदानज्ञानतपशुद्धिहेतुश्रुतिगावै ॥ रामचंद्रअनु
 रागनीरबिनुमलअतिनासनपावै ॥ ८१ ॥ जयतश्रीराग ॥
 ॥ वल्लुहैनआईगयौजनमजाय ॥ अतिदुर्लभतनपायकपटत
 जिभजैनराममनवचनकाय ॥ टेक ॥ लरिकाईवीतीअचेतचित
 चंचलताचौगुनेचाय ॥ जोवनज्वरजुवतिकुपथ्यकरिभयोत्रि
 देषभरेमदनवाय ॥ मध्यवयसधनहेतुगैवाईकृषीवनीजना-
 नाउपाय ॥ रामविसुषस्रषलत्थौनसपनेहुनिसीवासरतयो
 तिहूँताय ॥ सेयेनहिसीतापतिसेवकसाधुसुमतिभलेभगति
 भाय ॥ स्रनेनपुलकीतनकहेनसुदितमनकियेजेचरितरघुवं
 सराय ॥ अवसोचतमनिविनुभुअंगज्यौविकलअंगदलेज
 राघाय ॥ सिरधुनिधुनिपछितातमीजिकरकोउनमीतहीतहु
 सहदाय ॥ जिह्लगिनीजपरलोकविगास्वौतेलजातवादेवा
 य ॥ तुलसीअजहुस्रमिरिरघुनाथहितस्वौगयंदजाकेएक
 नाथ ॥ ८२ ॥ तौत्पच्छितैहौमनमीजिहाथ ॥ भयोहैस्रगम-
 तोकौअमरअगमतनुसमुझिधोकतषोवतआकाथ ॥ टेक ॥
 सरवसाधनहरिविसुषवृथाजैसेअमफलघृतहितमथेपाथ ॥

यह विचारित जिकुपथकुसंगतिचलि रसपंथामिलु भन्तसाय ॥ दे
 खुरामसेवकसुनिकीरतिरगहिनामकरिगानगाय ॥ न्ददयआ
 लुधलुवानपानिप्रभुलसेसुनिपदकटिचसंसाय ॥ तुन्तरीद्रा
 सपरिहरिप्रपंचसननाउरामपदकमलमाय ॥ जनिडरपहितो
 सेअनेकषलअपनायेजानकोनाय ॥ ८३ ॥ धनार्थी ॥ मन-
 साधौकोनेकुनिहाहिहि ॥ सुसुसठसदारंककेभनज्यौ ॥ छिन-
 छिनप्रभुहिसभारहि ॥ टेक ॥ सोभासिलज्ञानगुनमंदिरसंद
 रपरभउदारहिरंजनसंतअरिवलअघगंजनभंजनविषयवि-
 कारहि ॥ जोविनुजोगजज्ञतसंजभगयोचहैभवपारहि ॥
 तौजनितुलसिदासनिसिवासरहारिपदकमलविसारहि ॥
 ॥ ८४ ॥ इहैकत्वौसनवेदचहूं औरघूविरचरननितनतजिना
 हीनतौरकहूं ॥ टेक ॥ जाकेचरनपिरंचिसेइसिद्धिपाईसंकुर
 हूं ॥ सुकसनकादिकसुक्तविचरततेउभजनकरतअजहूं ॥
 जद्यपिपरमचपलश्रियसंततधिरनरहतिकतहूं ॥ हरिपद
 पंकजपाईअचलभइकरभवचेनमनहूं ॥ करुनासिंधुभग
 तचिंतामनिसोभासेवतहूं ॥ औरसकलसूरअसूरइस-
 वसषाएउरगछहूं ॥ सूरुचिकत्वौसोईसत्यतातअतिपरु
 षवचनजवहूं ॥ तुलसिदासरघुनाथविमुखनहिसीतैवि
 पतिकवहूं ॥ ८५ ॥ सुसुमनसूठसिषावनमेरो ॥ हरिपदविमु
 खकाहूनलत्वौसुषसठथहससुसिसवेरो ॥ विछुरेरविस
 सिमननैननितेपावतदुरवबहुतेरो ॥ अमितअमितनिसि-
 दिवसगगनसहूतहंरिपुराहुवडेरो ॥ जद्यपिअतिपुनित

सुरसरितातिहूपुरसृजसधनेरो ॥ तजेचरनञ्चजहूनमिदत्त
 नितवहिवोताहूकेरो ॥ मिदैनविपतिभजैवितुरद्युपतिश्रुतिसं
 देहनिवेरो ॥ तुलसिदाससवञ्चासछाडिकरिहोहिरामकोचे
 रो ॥ ८६ ॥ कवहुतौमनविश्रामनमान्यौनिसिदीनभ्रमतविसा
 रिसहजस्रषजहंतहं इंद्रिनतान्यौ ॥ टेक ॥ जदषिविषयसंगस
 हतदुसहदुषविषमजालञ्चरुजान्यौ ॥ तदपिनतजतमूढ
 ममतावसजानतहूनहिजान्यौ ॥ जन्मञ्चनेककियेनानावि
 धिकरमकिंचचित्तसान्यौ ॥ होइनविमलविवेकनीरविनुवेदपुरा
 णवरवान्यौ ॥ निजहितनाथपितागुरुहरिसोहरषित्दयनहि-
 च्यान्यौ ॥ तुलसिदासकवतृषाजाइसररवनतहिंजन्मसिरान्यौ
 ॥ ८७ ॥ मेरोमनहरिजूहठनतजै ॥ निसिदिननाथदेउंसिखव
 हुविधिकरतस्रभावउनिजै ॥ ज्यौखुवतिञ्चनुभवतिप्रसवञ्च
 तिदारुएदुखउपजै ॥ हैञ्चनुकूलविसारिशूलसठपुनिषल
 पतिहिभजै ॥ लोलपभ्रमतगृहपञ्चज्यौजहतहासिरपदञ्चा
 एवजै ॥ तदपिअधमविचरततिहींमागरगकवहूनमुदलजै
 ॥ हौहास्यौकरियलविविधीविधअतिशयप्रबलञ्चजै ॥ तल
 सिदासवसहोईतवैजवप्रेरकप्रभुवरजै ॥ ८८ ॥ ऐसीमूदता
 ग्रामनकी ॥ परिहरिरामभक्तिस्फुरसरिताआसकरतञ्चोस
 नकी ॥ धूमसमूहनिरखिचातकज्यौतृषतजातिमतिघनकी
 ॥ नहितहशितलतानवारिपुनिहानिहोतलोचनकि ॥ ज्यौं
 गचकांचविलोकिसेनजडछांहआपनेतनकी ॥ दूदतअति
 आतुरअहारवसछतिविसारिआननकि ॥ कहूलोकहौं-

कुचालकृपानिधिजानत होगतीजनकी ॥ तुलसीदासप्रभुह
रहुदुसहदुरवकरहुलाजनिजप्रनकि ॥ ८९ ॥ नाचतहिनिशि-
दिवसमस्वौ ॥ तवहीतेनभयौहरिथिरजवतेजिवननामधस्वौ ॥
बहुवासनाविविधिकंचुकीभूषणलोभादिभस्वौ ॥ चरत्ररु
अचरगगनजलथलमेकौनस्वारुनकस्वौ ॥ देवदनुजमुनि
नागमनुजनहिजांचतकोउउवस्वौ ॥ मेरोदुसहदरिद्रदोषदु-
खकाहूतेनहस्वौ ॥ थकेनयनपदपाणि स्रमतिबलसंगसक
लबिछुस्वौ ॥ अवरधुनाथशरणआयौजनभवभयविकलउ
स्वौ ॥ जेहियुणतेवसीहोहिरीजीप्रभुसोमोहिसबविसस्वौ ॥
तुलसीदासनजभवनद्वारप्रभुदिजैरहनपस्वौ ॥ ९० ॥ माथौ
जूमोसममंदनकोऊ ॥ जद्यपिमीनपतंगहीनमतिमोहिनपू
जैदोऊ ॥ रुचिररूपआहारवस्याउन्हपावकलोहनजान्यौ
॥ देखतविपतिविषयनतजतहोनातेअधिकसयान्यौ ॥ महा
मोहसरिताअपारमहसंततफिरतवल्ह्यौ ॥ श्रीहरिचरण-
कमलनौकातजिफिरिफिरीफेनुगल्ह्यौ ॥ अस्तिपुरानछुधित
स्वानलषिज्यौभरिसुखपकस्वौ ॥ निजतालुकगतरुधिरपा
नकरिमनसंतोषधस्वौ ॥ परमकठिनभवआलयासितहोव
षितभयौअतिभारी ॥ चाहतअभयभैकशरणागतषगप
तिनाथविसारी ॥ जलचरवृंदजालअंतरगतहोतसिमि-
टिएकपास ॥ एकहि एकषातलालचवसनहिदेखतनिज
नास ॥ मेरेअघसारदअनेकयुगगणतपारनहिसावै ॥
तुलसीदासपतितपावनप्रभुयहभरोसजियआवै ॥ ९१ ॥

कृपासोकहाविसारिराम ॥ जेहिकरुणासूनीश्रवणदीनदुख
 आयतजिधाम ॥ नागराजनिजबलविचारहियहारिचरणचि
 तदीन्ह ॥ आरतगिरासूततस्वगपतीतजिचलतविलंबन-
 कीन्ह ॥ दितिस्तत्रासत्रसितनिशिदिनप्रन्हादप्रतिजारास्वी ॥
 ॥ अतुलितबलमृगराजमनुजतनुदनुजहत्योश्रुतिसारवी ॥
 भूपसदसिसबनृपविलोकिप्रभुराखुकल्यौनरनारी ॥ वसन
 पूरीअरिदर्पदूरीकारभूरिकृपादनुजारि ॥ एकएकतेरिपुत्रा
 सितजनतुमयारखेरखुवीर ॥ अवमोहिदेतदुसहदुखवहुरि
 पुकसनहरहुभवपीर ॥ लोभग्राहदनुजेशक्रोधकुरुराज-
 बंधुखलभार ॥ तुलसीदासप्रभुयहदाकृपादुखभंजहुरा
 मउदार ॥ ९२ ॥ काहेतेहरिश्रवमोहिविसास्वी ॥ जानतनि
 जमहिमामेरेअघतदपिननाथसंभास्वी ॥ पतितपुनितदीनहि
 तअशरणशरणकहतश्रुतिचास्वी ॥ होंनहिअधमसभित
 दीनकीधौवेदनमृषापुकास्वी ॥ स्वगगणिकागजव्याधपां
 तिजहंतहांहोंहूंबैठास्वी ॥ अषकहिलाजकृपानिधानपरुस
 तपनवारौफास्वी ॥ ज्यौकलिकालप्रबलअतिहोतौतवनिदे
 शतेंन्यास्वी ॥ तौहरिरोषभरोसदोषगुणतौहिभजतेतजिगा-
 स्वी ॥ मसकविरंचिविरंचिमसकसमकरहुप्रभावतुम्हास्वी
 ॥ यहसामर्थ्यअछतमोहित्वागहुनाथतहांकलुचास्वी ॥ ना
 हिननर्कपरतमोकहुडरुजघपिहोअतिहास्वी ॥ यहबडिना
 सदासतुलसीप्रभुनामहुपापनजास्वी ॥ ९४ ॥ तेउनमेरेअ
 घअवगुनगनीहैं ॥ जौजमराजकाजसबपरिहरियहैरव्या

लउरअनिहै ॥ चलिहैछुटिपुंजपापनिकेअसमंजसजियज
निहै ॥ देखिखलनअधिकारसुप्रभुमेरिभुरिभलाईभनिहैं ॥
हांसिकरिहैपरतितिभक्तिकीभक्तसिरोमणिमनिहैं ॥ ज्यौं त्यौं
तुलसीदासकोसलपतिअपनाऐहिपरिवनिहै ॥ ९५ ॥ जौपै-
जियधरिहौअवगुणजनके ॥ तौकोकटतसुकृतनखतेंमोपै
विपुलवृंदअधवनके ॥ कहिहैकौनकलुषमेरेकृतकर्मवचन
अरुमनके ॥ हारहिअमितशेषसारदअतिगएनएकएक
क्षणके ॥ जौचितचढ़ैनामसहिमानिजगुनगणिपावनपन
के ॥ तौतुलसीहितारिहौविप्रज्यौदसनतोरियमगनके ॥ ९६
जौपैहरिजनकेअवगुनगहते ॥ तौसरूपतिकुरुराजवालि
सोंकतहठिवैरविमहते ॥ जौजपयज्ञयोगवतवरजितकेव
लप्रेमनचहते ॥ तौकतसरसुनिवरविहायव्रजगोपगेहवसि
रहते ॥ जौजहांतहांपनसखिभक्तकोभजनप्रभाउनकह
ते ॥ तौकलिकठिनकर्मनारगजडहमकेहिभांतिनिवहते ॥
जोसतहितलिएनामअजामिलकेअधअमितनदहते ॥
तौएमभटसासतिहरहमषेवसैभखोजिखोजिनहते ॥
जौजगविदितपतितपावनअतिचांकुरविरदनवहते ॥ तौ
वहकल्पकुटिलतुलसीसेसपनेहुसुगतिनलहते ॥ ९७ ॥
ऐसेहरिकरतदासपरप्रीति ॥ निजप्रभुताविसारिजनके
वसहोतसदायहरिति ॥ जैहिबांधेसरअसरनागनर
प्रवलकर्मकीडोरी ॥ सोइअविछिन्नब्रह्मयसुमतिवांथ्यौ
हठिसकतनछोरी ॥ जाकीमायावसविरांचिशिवनाचत

पारनपाथौ ॥ करतलतालवजाइगललयुवतिन्हसोइनाथनचा
 यौ ॥ विश्वंभरश्रीपतित्रिभुवनपतिवेदविदितयहलिरव ॥ वलि
 सांकछुनचलीप्रभुतावरकैद्विजमांगोभिरव ॥ जाकेनामलिए
 छुटतभवजन्ममरणदुखभार ॥ अंबरिषहिजलागिकृपानि
 धीसोईजनमेंदशवार ॥ योगविरागध्यानजपतपकरेजेहिरवो
 जतसुनिज्ञानि ॥ वानरभालुचपलपशुपामरनाथतहोरति
 मानि ॥ लोकपालयमकालपवनरविशशिसवअज्ञाकारि ॥
 तुलसिदासप्रभुउग्रसेनकेदारवेतकरधारि ॥ ९८ ॥ विरदग
 रिवनिवाजरामको ॥ गावतवेदपुराणशंभुशुकप्रगटप्रभाव
 नामको ॥ ध्रुवप्रह्लादविभीषणकपियदुपतिपंडवसुदाम
 कौ ॥ लोकसुयशपरलोकसुगतिइन्हमेंकहौरामकामको ॥ ग
 णिकाकोलकिरातआदीकविइन्हतैअधिकवामको ॥ वाजि
 मेधकवकियौअजामिलगजगायेककवस्थामको ॥ छलिम
 लिनहिनसबहिअंगतुलसीसोक्षिएछामको ॥ नामनरेश
 प्रतापप्रबलजगयुगयुगचलतचामको ॥ ९०० ॥ सुनतसिता
 पतिशीलसुनाऊ ॥ मोदनमनतनपुलकनयनजलसोनर-
 रवेहरवरषाऊ ॥ शिशुपनतेंपितुमातुबंधुगुरुसेवकसचिव-
 सषाऊ ॥ कहतरामविधुवदनरिसौहंसपनेहलरख्यौनकाऊ
 ॥ खेलतसंगअनुजवालकनितजुगवतअनदअपाऊ ॥ -
 जीतहरिचुचुकारदुलारतदेतदिवावतदाऊ ॥ सिलाआपसं
 तापविगतभईपरसतपावनपाऊ ॥ दर्दसुगतिसोनहेरि
 हरषिहियचरणालुयकोपछिताऊ ॥ भवधनुभंजिनिदरि

भूपतिभृगुनाथषाईगएताऊ ॥ क्षमिअपराधक्षमाइपाय
परिइतौनअनतसमाऊ ॥ कल्हौराजुवनदियोनारिवसग-
रिगलानिगेराऊ ॥ ताकुमातुकौमनुजुगवतज्यौनिजतनम
रमकुधाऊ ॥ कपिसेवावसभयेकनौडेकल्हौपवनसक्तआऊ
॥ दीवैकौनकछूरिनियोहोंधनिकतुपत्रलिरवाऊ ॥ अपनाए
सूयीवविभीषणातिननतज्यौंछलछाऊ ॥ भरतसभासन-
मानिसराहतहोतनल्हदयअघाऊ ॥ निजकरुणाकरतुति
भक्तपरचपलतचलतचरचाहु ॥ सकृतप्रणामप्रयातयशु
चरएतसुनतकहतफिरिगाऊ ॥ समुक्षिसमुक्षिगुणया
मरामकेउरअनुरागवदाऊ ॥ तुलसिदासअयासरामप
दपैहौप्रेमपसाऊ ॥ १०१ ॥ नाऊंकहांतजिचरएतुह्वारे
काकौनामपातितपावनजगकिहिअतिदिनपियारे ॥ कौन
देववरदाईविरदहितहठिहठिअधमउधारे ॥ स्वगमृग
व्याधपषाएविटपजडयवनकवनसरतारे ॥ देवदनुजसु
निनागमनुजसबमायाविवसविचारे ॥ तिन्हकेहाथद्रास
तुलसीप्रभुकहाअपनपोहारे ॥ १०२ ॥ हरितुम्हबहूतअ
नुग्रहकीन्हो ॥ साधनधामविबुधदुर्लभतनुंमोहिकृपाकरिदी
न्हो ॥ कोदिहुसुखकहिंजांहिंनप्रभुकेएकएकउपकार ॥ तद
पिनाथकछुऔरमागिहौदिजैपरमउदार ॥ विषयवारिमन
मिनभिन्ननहीहोतकबहूपलएक ॥ तातेसहियविपतिअति
दारुणजन्मतयोनिअनेक ॥ कृपाडोरिवनसीपदअंकुशपर
प्रेममृदुचारौ ॥ एहिविधिवेधिहरहुमेरोदुखकौतुकरामतु

हारौ ॥ हैश्रुतिविदितउपायसकलकरके हिकेहिदिननिहोस्वौ ॥
 तुलसिदासयहजिवमोहरजुजोईवाँध्योसोइछोस्वौ ॥१०३॥ इ
 हविनतिरघुवीरगुसाई ॥ औरआसविस्वासभरोसोहरिजिये
 किजडताई ॥ चहोनसगतिसुमतिसंपरिकछुअबिसिद्धीविपुल
 बडाई ॥ हेतुरहितअनुरागरामपदबदौअनुदिनअधिकार्ई ॥
 कुतिलकर्मलैजायमोहिजहंजहअपनिवरिआई ॥ तहंतहं
 जिनाक्षिणछाहुछांडि एकमठअंडकिनाई ॥ हैजगमेंजहाल
 गियातनहिप्रीतिप्रतीतीसगार्ई ॥ तेसबतुलसीदासप्रभुहि-
 सोहौहुसिमिति एकवाई ॥ १०४ ॥ जानकीजीवनकीबलीजैहौ
 ॥ चितुकहैरामसियापदपरिहरिअवनकहूंचलीजैहौ ॥ उप
 जिउरप्रतितीसपनेहुंकरवप्रभुपदविभुखनपैहौ ॥ मनसमे
 तयातनकेवासीन्हइहैसिरवावनदेहौ ॥ अरणनिअौरकथा
 नहिसुनिहौरसनाअौरनगेहौ ॥ रोकीहौनेनविलोकतअौर
 रहिसिसइशहीनैहौ ॥ नातेनेहनाथसोंकरिसबनातेनेह
 निवैहौ ॥ यहछरमारताहितुलसीजगजाकौदासकहैहौ ॥
 ॥१०५॥ अवलोनसानीअवननसैहौ ॥ रामरूपाभवनिसा
 सिरानोजाग्योफिरिनडसैहौ ॥ पायोनामचारुचिंतामण्डिउ
 रकरतेनरवसैहौ ॥ स्यामरूपसुचिरुचिरकसौटिचितकं
 चनहिकसैहौ ॥ परवसजानीहस्योनिजइदिन्हइनवसहैन
 हसैहौ ॥ मनमधुकरपणकरितुलसीरघुपतिपदकमलव
 सैहौ ॥ १०६ ॥ रामकलिराग ॥ महाराजराभादस्वोधन्यसो
 ई ॥ गरुअरुणारासिसरवज्ञसकृतीसधरशीलनिधीसा

धुत्तेहिसमनकोई ॥ उपलकेवटकीसभालुनाशिचरसवरिगि
 धसमदमदयादानहीने ॥ नामलिएरामकि एपर्मपावनसक-
 लनरतरततिन्हकेगुणगानकीने ॥ व्याधत्रपराधकिसाधरास्त्री
 कौनपिंगलाकौनमतिभक्तिभेई ॥ कौनधौसोमजाजात्रजा-
 मिलअधमकौनगजराजहोवाजिपेई ॥ पंडुसुतगांपिकाधि
 दुरकुवरीसबहीशोधकियेशाधितालेसकैसे ॥ प्रेमलषिकृ
 ष्णकएआपनेतिन्हकौंअवस्यशसंसारहरि हरकौजेसौ
 ॥ कोलखलभिल्लयवनादिपररामकहिनीचकैऊंचपदकेनपा-
 यौ ॥ दीनदुरखदवनश्रीरवणाकरुणाभवनपतितपावनविरद
 वेदगायौ ॥ मंदमतीकुटिलखलतीलकतुलसीसरसभौनति-
 हूलोकतिहूंकालकोऊ ॥ नामकिकानियहिचानिजनआपनोय
 सतकलिव्यालरखशरणसोऊ ॥ १०७ ॥ रागविलावल ॥ हैनि
 कोमेरोदेवताकोशलपतिराम ॥ सुभगसरोरुहलोचनसुदि
 सुंदरस्याम ॥ सिधेसमेतशोभितसदाछविअमितअनंग
 ॥ भुजविशालसरधनुधरेकटिचारुनिरखंग ॥ बलिपूजाचा
 हननहीचाहैएकप्रती ॥ सुमिरतहीमानैभलौपावनसव-
 रीतिदेइसकलसुखदुःखदहै आरतजनबंधु ॥ गुणगही
 अधअवगुणहरेअसकरुणासिंधु ॥ देशकालपूरणसदा
 वदवेदपुरान ॥ सबकोप्रभुसबमेवसैसबकिगतिजान ॥ कोफ
 रीकोतिककामनापूजैबहुदेव ॥ तुलसीदासतेहिसेइएशंक
 रजेहिसेव ॥ १०८ ॥ विरमहाअवराधिएसाधेसिद्धिहोइ ॥
 सकलकामपूरणकरैजानैसबकोई ॥ वेगिविलंबनकीजिये

लिजैउपदेश ॥ महामंत्रजपिएसोइजोजपतमहेश ॥ प्रेमया
 रितरपणभलौघृतसहजसनेहु ॥ संशयसमिधीअशीक्षे
 माममताबलिदेह ॥ अथउच्चादिमनवसकरैमारैमदमार ॥
 आकर्षैस्वरुसंपदासंतोषविचार ॥ जैहिएहिभांतिभजनकि
 यौमिलेरघुपतिताहि ॥ तुलसिदासप्रभुपथचढ्येजोलेहुनि
 वाहि ॥ १०९ ॥ कसनकरहुकरुणहरेदुरवशमनसुरारी ॥ वि
 विधितापसंदेहशोकसंशयभयहारि ॥ यहकलिकाजलनि
 तमलसतिमंदमलिनमन ॥ तेहिपरप्रभुनहिकरसंगारिके
 हिभांतिजियेन ॥ सबप्रकासमरथप्रभोमैसबविधिदिन ॥
 यहजियजानिद्रवोनहीभैकरमविहीन ॥ अमतअनेकयो
 निरघुपतिपतिआनममारे ॥ दुखस्वरुसहोरहोंसदाश
 रणागततारे ॥ तोसमदेवनकोउकृपालससुऊमनमाहीं
 ॥ तुलसिदासहरितोषिएसोसाधननाही ॥ ११० ॥ कहुंके
 हिकहियकृपानिधेभवजनितविपतिअति ॥ इंद्रियसकल
 विकलसदानिजनिजसुभावरति ॥ जेसुखशंपतीस्वर्ग
 नर्कसंततसंगलागि ॥ हरिपरहरिसोइयत्नकरतमनमो
 रअभागी ॥ मैअतिदीनदयालदेवसुनीमनअनुरागे ॥ जौ
 नहिबहुबधुवीरधीरकाहेनदुरवलागे ॥ जद्यपिमैअपराध-
 भवनदुरवशमनसुरारे ॥ तुलसीदासकहूंआसइहैबहुपति
 तउधारे ॥ १११ ॥ केशवकहिनजाइकाकहिये ॥ देखततवर
 चनाविचित्रहरिससुऊमनहिमनरहिये ॥ सून्यभितिपर
 चित्ररंगनहिविनकरलिखाचितैरे ॥ धोरुमिटैनमरइभि-

तौदुरवपाइययहतनहेरे ॥ रविकरनिरवसैअतिदारुणामक
 ररूपतेहिमाही ॥ वदनहिनसोग्रसेचराचरणकरजेहिजाही
 ॥ कोऊकहसत्यजूवकहकोऊयुगलप्रवलकरिमाय ॥ तुलसी
 दासपरिहरेतीनभ्रमसोआपनपहिचाने ॥ ११२ ॥ केशवका
 रणकौनगुसाई ॥ जेहिअपराधअसाधुजानिमोहितज्यौअ
 जकिनाई ॥ परमपुनितसंतकोमलचिततिन्हहितुमहिवनि
 आई ॥ तौकतविप्रव्याधगजगनिकहितास्वोकछुरहिसगार्द
 ॥ कालकर्मकतिअगतिजीवकीसबहरीहायतुह्यारे ॥ सोइक
 छुकरहुममतामैफिरहुनतुह्यहिविसारे ॥ जौतुह्यतजहुभजौ
 नआनप्रभुएहप्रमानपनमोरो ॥ मनवचकर्मनकसरपुरज
 हांतहैरघुधिरनिहोरे ॥ जद्यपिनाथउचितनहोतअसप्रभुसों
 करोंदिटाई ॥ तुलसीदाससौदतनिशिदीनदेखततुह्यारिनि
 तुराई ॥ ११३ ॥ माधवअवअवनइवहुकेहिलेखे ॥ प्रएतपाल
 प्रएतोरमोरप्रएजिअउंकमलपददेखे ॥ जवलगिभैनदीन
 दयालतेभैनदासतेस्वामी ॥ तवलगिजौदुरवसहेउकहेउनहि
 यद्यपिअंतरजामी ॥ तेउदारभैकृपिएपतितभैतेपुनित
 श्रुतिगावै ॥ बहुतनातरघुनाथतोहिमोहिअवनतजेवनि
 आवै ॥ जनकजननीगुरुबंधुसुहृदपतिसंवप्रकारहित
 कारी ॥ द्वैतरूपतमकूपपरोनहिअसकछुयत्नविचारी ॥
 सुनुअदभ्रकरुणावारिजलोचनमोचनभयभारी ॥ तु-
 लसीदासप्रभुतवप्रकाशविनसंशयटरतनटारी ॥ ११४
 ॥ माधवमोसमानजगमांही ॥ सबविधिहीनजौदीनम

लिनअप्रतिलीनविषयकोउनांहीं ॥ तुससमहेतुरहितरूपाल
 आरतहितईशनत्यागी ॥ मैदुरवशोकविकानरूपालकेहिका
 रएदयानलागी ॥ नाहिनकछुअवगुएतुह्मारअपराधमोर
 मेंमाना ॥ ज्ञानभवनतनदियेहुनाथसोउपायनमेंप्रभुजाना
 ॥ वेणुकरीलश्रीखंडवसंतहिदुषणमृषालगावै ॥ साररहि-
 तहतमाग्यसरभिपल्लवसोकहहुकिमिपावैसबप्रकारमैक-
 विएमृदुलहरिदृढविचारजियेमोरे ॥ तुलसिदासप्रभुमोह
 मंदरवलाछुदिहितुहारेछोरे ॥ ११५ ॥ माधवमोहपासक्यौदूटै
 ॥ वाहिरकोटिउपायकरियअभिअंतरग्रंथिनछूटै ॥ घृतपूर
 एकराहअंतरगतशसिप्रतिविंदिरवावै ॥ इधनललगाईक
 ल्यशतअवटतनाशनपावै ॥ तरुकोटरमहवसविहंगतरुका
 टैमरेनजैसे ॥ साधनकरियविचारहिनमनसूद्धोइनहितै
 सें ॥ अंतरमलिनविषयमनअतित्तनुपावनकरियपवारै ॥ म
 रइनउरगअनेकयत्नवलमिकविविधिविधिसारै ॥ तुलसी
 दासहरिसुरुकुरुणाविनविमलविवेकनहोई ॥ विनविवेकसं
 सारघोरनिधीपारनपावैकोई ॥ ११६ ॥ माधवअसतुम्हारि
 यहमाया ॥ करिउपायपचिमरियतरियनहिजबलगिकरहु
 नदाया ॥ सनिनीजगुणविचारकरुणानिधानकरुदाया ॥
 ॥ ११७ ॥ हेहरिकवनयत्नभ्रमभागै ॥ देखतसूनतविचारत
 यहमननिजसुभाउनहित्यागै ॥ भक्तिज्ञानवैराग्यसकलसाध
 नएहिलागिउपाई ॥ कोउभलकहउदेऊकछुअसिवासनाहृद
 यतैनजाई ॥ जिहिनिशिसकलजीवसूतहितवरूपापात्रजन

जागौ ॥ निजकरनिविपरितदेषिमोहिससु फिमहामयलागौ ॥ जघ
 पिभग्रमनोरथविधिवसस्करव इच्छतदुषपावै ॥ चित्रकारकरहि
 नयथास्वारथविनचित्रवनवै ॥ तृषीकेशस्निनाऊंजाऊंवल
 अतिभरोसजियमोरे ॥ तुलसिदासइंद्रियसंभवदुरवहरेवने
 हिप्रभुतोरे ॥ ११८ ॥ हेहरिकसनहरहुभ्रमभारी ॥ जघपिमृषा
 सत्यभासैजबलगिनहिकृपातुम्हारि ॥ अर्थअविद्यामानजा
 नियसंश्रितनहिजाइगुसाई ॥ विनबांधेनिहवसठपरव -
 सपस्वौकिरकिनाई ॥ सपनेव्याधिविविधिवाधाजनुमृत्युउप
 स्थितआई ॥ वैद्यअनेकउपाईकरहिजागेविनुपीरनजाई
 ॥ श्रुतिगुरुसाधु स्मृतिसंमतयहदृश्यसदादुस्वकारी ॥ ते
 हीविनतजेभजेविनरघुपतिविपतिसकैकोटारी ॥ बहुउपा
 इसंसारतरनकहविमलगिराश्रुतिगावै ॥ तुलसिदासमेमो
 रगएविनजीयस्करवकवहुनपावै ॥ ११९ ॥ हेहरियहभ्रमकी
 अधिकाई ॥ देखतस्नतकहतसमुऊतसंशयसंदेहनजा
 ई ॥ जौजगमृषातापत्रयअनुभवहोईकहहुकेहिलेखे ॥ कहि
 नजाइमृगवारिसत्यभ्रमतेदुषहोइविसेखे ॥ सभगसंग्रय
 नसोबतसयनवारिधउदतभयलागौ ॥ कौदिहुनावनपारपा-
 वसोजवलगिआपुनजागौ ॥ अनविचाररमणिएसदासंसा
 रभयंकरभारी ॥ समसंतोषदयाविवेकतेव्यवहारोनिगुनि
 समुफियसमुऊइयदसाहृदयनहिआवै ॥ जेहिअनुभव
 विनुमोहजनितदारुणभवविपतिसतावै ॥ ब्रह्मापियूषम
 धुरशितलज्यौपैभनसोरसपावै ॥ तौकतमृगजलरूपवि-

षैकारणनिशिवासरधावै ॥ जेहि के भवन विमलचिंतामणि-
 सो कनकाचवटोरै ॥ सपने परवस पस्वौ जागि दिखत केहि
 जाई निहोरे ॥ ज्ञानभक्तिसाधन अनेक सब सत्य फूढक छु
 नाही ॥ तुलसीदास हरिकृपा भितै भ्रम यह भरो समन माही ॥
 ॥ १२० ॥ हे हरिकवन दोष तोहि दीजै ॥ जेहि उपाइ सपने हुदु छै
 भगति सोई निशिवासर कीजै ॥ जानत अर्थ अनर्थ रूपतम
 कुप परव एहि लागै ॥ तदपिन तजत स्वान अजषर जौं फिरत
 विषय अतुरागै ॥ भूतद्रोह कृत माहव स्पहित आपन मै न वि
 चारा ॥ मदमत्सर अमिमान ज्ञानरिपु इन्ह महरहनि अपरा
 ॥ वेदपुराण सजत ससुजतर सुनाथ सकल जग व्यापी ॥ भेदत नहि
 श्रीरखंडवेषु इव सारहिन मन पापी ॥ मै अपराध सिंधु करुणा क
 र जानत अंतर जामी ॥ तुलसीदास भव व्यालय सतत वशरण
 उर गरियुगामी ॥ १२१ ॥ हे हरिकवन यत्न करव मानहुं ॥ ज्यौ गज
 दसन तथा मम करनी सब प्रकार तुम्ह जानहुं ॥ जौ कछु कहिय
 करिय भवसागर तरिय वल्ल पद जैसे ॥ रहनी आनविधो करि
 य आन हरि पद सुख पाइये कैसै ॥ देषत चारु मधूर वचन श्रु
 भवोल सुधा इव सीनी ॥ सविष उरग आहार निष्ठुर असय
 ह करनी वहवानी ॥ अशील जीव वत्सल निर्मत्सर चरण कम
 ल अनुरागी ॥ तेतव प्रीय दधुवीर धीर मति अति अतिसय-
 नी जपर त्यागी ॥ तद्यपि मेम अवगुण अपार सं—
 सार योगरघुशया ॥ तुलसीदास सुखकारी ॥ तुलसीदास स
 वविधि प्रपंच जग यद्यपि फूठ श्रुति गावै ॥ रघुपति भक्ति सं-

तसंगतिविनकोभवत्रासनसावै ॥१२२॥ मैहरिसाधनकरइन
जानी ॥ जसआमयभेषजनकीन्हतसदोषकवनदरआनी ॥ स
पनेनृपकहघटेविप्रवधविकलफिरैअथलागे ॥ वाजिमेषस
तकोटिकरै नहि सुद्धहोइविनजगि ॥ मगमहँसर्पविपुलभ
यदायकप्रगटहोइअविचारि ॥ बहुआसुधधरवलअनेकक
रिहारिहिसरइनमारै ॥ निजभ्रमतेरविकरसंभवसागरअ
तिभयउपजावै ॥ अवगाहतवौहितनौकाचटिकबहुपारनपा
वै ॥ तुलसीदासजगआपुसहितजवलगिनिर्मूलनजाई ॥ तवरु
गिकल्पकोटिउपायकरिमरियतरियनहिभाई ॥ १२३ ॥ अ
सकछुससुफिपरेरघुराया ॥ विनतवक्रपादयालदासहित-
मोहनछुटेभाया ॥ वाक्यज्ञानअत्यंतनिपुणभवपारनपावैको
ई ॥ निसिग्रहमध्यदीपकिवातन्हतमनिरतिनहिहोई ॥ जैसे
काऊथकदिनहुखीतअतिअसनहिनहुखपावै ॥ चित्रकल्प
तरु कामधेनुग्रहलिखेनविपतिनसावै ॥ षटरसबहुप्रकार
भोजनकोउदिनअरुनबरवानै ॥ विनवबोलेसंतोषजनि
तसुखखाइसाईपैजानै ॥ जबलगिनहिनिजल्लदिप्रकाश
अरुविषयआसमनमाहि ॥ तुलसीदासतवलगिजगयो
निभ्रमतसपनेहुकरवनाही ॥ १२४ ॥ जोनिजमनपरिहरैवि-
कारा ॥ तोकतदैतजनितसंसृतहुखसंशयशोकअपारा ॥ श
बुमित्रमध्यस्थतिनीएमनकीन्हेवरिआई ॥ त्यागवग्रहवउ
पेक्षनीयअहिहाटकतृणाकीनाइ ॥ असनवसनवसुवस्तु
विविधीविधिसबमणिमहरहजैसे ॥ स्वर्गनर्कचरअचरलो-

कबहुवसतमध्यमनतैसै ॥ वितपमध्यपुत्रिकासूत्रमहकंबु-
 किविनहिबनाए ॥ मनमहतथालिननानातनप्रगटतअवस
 रपाए ॥ रघुपतिभक्तिवारिछालितचितविनुप्रयासहीसूजे
 ॥ तुलसीदासकहचितविलासजगवृजतबूजे ॥ १२५ ॥ मै अ-
 तिविपति कहऊंकेहिभारी ॥ श्रीरघुवीरधीरहितकारो ॥ मम
 त्दयभवनप्रभुतोरा ॥ तहंवसेआइवहुचोरा ॥ अतिशयक
 षिषाकरहिवरजोरा ॥ मानहिनाहिविनयनिहोरा ॥ तममोह
 लोभअहंकारा ॥ मदक्रोधबोधरिपुमारा ॥ अतिकरहिउप-
 द्रवनाथा ॥ मदीहिमोहिजानिअनाथा ॥ मैएकअमितवटपा
 रा ॥ कोउसूनेनमोरपुकारा ॥ भागेहुनहिनाथउवारा ॥ रघुना
 यककरहुसंभारा ॥ कहतुलसीदाससुकनिरामा ॥ लुटहितसक
 रतवधामा ॥ चिंतायहमोहिअपारा ॥ अपयशनहिहोइतु-
 म्हारा ॥ १२६ ॥ मनमेरेपानहिसिखमेरो ॥ जौनिजभक्तिचहा
 हिहरिकेरी ॥ उरआनहिप्रभुकृतहितजेते ॥ सेवहितेजेअ
 पनवौचेतै ॥ दुःखसुखअरुअपमानवडाई ॥ सवसमलेष
 हिविपतिविहाई ॥ सुनुसठकालग्रसितयहदेही ॥ जनितेहिलावि
 दुषहिकेही ॥ तुलसीदासविनअसमतिआए ॥ मिलहिनराम
 कपटलयलाय ॥ १२७ ॥ मैजानीहरिपदरतिनांही ॥ सपनेहु
 नहिविरागमनमांही ॥ जेरघुविरचरणाअनुरागे ॥ तिन्हसव
 भोगरोगंसमत्यागे ॥ कामभुअंगडसतजवजांही ॥ विषय
 निंबकहुलगतनताही ॥ असमंजसअसत्दयविचारी ॥ व
 दतसोचनितनूतनभारी ॥ जबकवरामरुपादुखजाई ॥ तु

लसिदासनहिअनउपाई ॥ १२८ ॥ सुमौरुसनेहसहितसो
तापति ॥ रामचरणजिनहिअनगति ॥ जपतपतिरययोगस
माधि ॥ कलिमतिविकलनफळुनिरुपाधी ॥ करतहुसुकुन-
पापसिराहीं ॥ रक्तबीजसमवाढतजाहीं ॥ हरणएकअच-
असरजालिका ॥ तुलसीदासपशु कृपाकालिका ॥ १२९ ॥
रुचिररसनातूरामरामरामरतत ॥ सुभिरतशुभसकृतिव-
ढतअथअमंगलघटत ॥ वितुअमकलिकलुषजालकटुकरा
लकटत ॥ दिनकरकेउदैजेसेतिमिरतोमफटत ॥ योगयाग
जपविरागतपसुतीर्थअटत ॥ बांधिवेकोभवगयंदरेणुकीर
जुवटत ॥ परिहरिसरमणिसुनामगुंजालखिलटत ॥ लाल
चलधुतेरोलखितुलसितोहिहटत ॥ १३० ॥ रामरामरामराम
रामरामजपत ॥ मंगलसुदउदितहोतकलिमलछलछपत ॥
कहुकेलहेफलरसालषतुरबीजवेयेत ॥ हारहिजनिजन्मजाई
गालगूलगपत ॥ कालकर्मगुणसुभावसबकेसीसतपत ॥ रा
मनाममहिमाकीचरचाचलेचपत ॥ साधनवितुसिद्धिसकल
विकललोगलपत ॥ कलियुगवरवशिजविपुलनामनगरव
पत ॥ नामसोप्रतोतिहृदयसुथिरथपत ॥ पावनकियराव
णारितुलसीहुसेअपत ॥ १३१ ॥ पावनप्रेमरामचरणकम
लजन्मलाभपर्म ॥ रामनामलेतहोतसकलभसकलधर्म ॥ यो
गमरवविवेकधिरतिवेदविदितकर्म ॥ करिवेकहुकटुकठोरसु
नतमधुरनर्म ॥ तुलसीसुनिजानिबुजिसुलहिजीनभर्म ॥
तेहिअभूकौतुहोहिजाहिसबहिकीसर्म १३२ ॥ रामसोपित

मकीपीतिरहितजिवजायजियत ॥ जेहिस्वरवस्वरवमानिले
तस्वरवसोसमुजिकियत ॥ जहंतहंजेहियोनिजन्मसहिप-
तालवियत ॥ तहंतहंतूविषयस्वरवहिचहतलहतनियत ॥
कतविमोहललख्यौफूट्योगगनमगनसिथता ॥ तुलसीप्र
भुस्यशगाईक्योनसुधापियत ॥ १३३ ॥ तोसोहोंफिरीफि
रीहितप्रियपुनितसुवचनकहत ॥ सुनिमनगुनसमुजिक्यौं
नसुगमसुगमगहत ॥ छोढोबडोरवोदौषरौजगजोजहार
हत ॥ अपनेअपनेकौभलोसोकाहुकोनचहत ॥ विधिलगि
लघुकीठअवधिसुवरवस्वरवीदुखदहत ॥ पशुलौपशुपालई-
शबांधतछोरतनहत ॥ विषयसुदनिहारभारषिरकौकाधजो
वहत ॥ योहिजियजानिमानिसठतूसासतिसहत ॥ पायौकै
घृतविचारिहरिनवारिमहत ॥ तुलसितकुताईशरणजातेस
वलहत ॥ १३४ ॥ तातेहोवारवारदेवद्वारपरिपुकारकरत ॥ आ
रातनतदिनताकहैसुप्रभुसंकटहरत ॥ लोकपालशोकविकल
रावणडरडरत ॥ कासुनिसकुचेनिकुपालनरशरीरधरत ॥
कौशिकसुनितीययनकशोचअनलजरत ॥ साधनकेहिशी
तलभएसोनसमुजिपरत ॥ केवटषगशवरिसहजचरण-
कमलनिरत ॥ सनसुरवताहिहोतनाथकुतुसुफलफरत
॥ बंधुवैरकपिविभीषणगरुगलानिगरत ॥ सेवाकेहिरि-
जिरामकियोहैसरसभरत ॥ सेवकभयौपौनपूतसाहिब
अनुहरत ॥ ताकौलिएरामनामसबकोसूढरदरत ॥ जा
नेबिनुरामरितिपचिपचिजगमरत ॥ परिहरिछलशर-

एगएतुलसिहूतरत ॥१३५॥ रागसुहोविलावल ॥ रामसने
हिसेतैनसनेहकियो ॥ अगमजोअमरनिहसोतनुताहिदि
यो ॥ ॥ छंद ॥ ॥ दियोसुकुजन्मशरीरसंदरहेतुजोफल
चारिको ॥ जोपाईपंडितपरमपदपावतपुरारासुरारिको ॥ य
हभरतरवंडसमिपसरसरिथलुभलोसंगतिभली ॥ तेरिहु
मतिकायरकलपवल्लीचहतविरवफलफली ॥ अजहुंसमु
जित्तुदेसनिपरमारथ ॥ हेहितुसोजगहंजाहितेस्वार-
थ ॥ ॥ छंद ॥ ॥ स्वारथहियिचस्वारथेसोकातेकोन
वेदबखानई ॥ देखेखेखेअहिखेलपरिहरिसोप्रभुपहिना
नई ॥ पितुमातुगुरुस्वामीअपनपौतियतनयसेवकस-
खा ॥ यियलगतजाकेप्रेमसोविनुहेतुहितनहितैलखा ॥ दू
रिनसोहितुहेरहिएहीहै ॥ ललहिछांडीसुमिरेछोहूकि
एहीहै ॥ ॥ छंद ॥ ॥ किएछोहूछायाकमलकरकिभ
क्तपरभजेतेहिभजे ॥ जगदीशजीवनजीवकोजोसाज
सबसबकेसजे ॥ हरिहरहिहरिताविधिहिविधिताशिवहि
शिवताजिहिदई ॥ सोईजानकीपतिमधूरमूरनिमोदम-
यमंगलमई ॥ ठाकूरअतिहिबडोशीलसरलसुविध्यान
अगशिवहुभेत्योकेवठउवि ॥ ॥ छंद ॥ ॥ भेरिअंकभे
त्योसजलनयनसनेहसिथिलशरीरसो ॥ सरसिद्धसु
निकविकहतकोऊनप्रेमप्रियरघुविरसो ॥ खगशेवरि
निशिचरभालुकपिकिएआपसेवदितवडे ॥ तापरतिन्ह
कीसेवासुमिरिजियजातजनसकुचनिगडे ॥ स्वामी

कौसभाउकल्यौसोजवउरअनिहै ॥ सोचसकलमितिहैराम
 भलोमानिहै ॥ ॥ छंद ॥ ॥ भलोमानिहैरघुनाथजोरिजो-
 हाथमाथोनाइहै ॥ ततकालतुलसीदासजीवनजन्मकोफलपा
 इहै ॥ जपिनामकरिहिप्रनामकहिगुणपामरामहिधरिहियो ॥
 विचरहिअवनिअवनीशचरणसरोजमनमधुकरकियो ॥
 ॥ १३६ ॥ जियजबहरितेविलगान्यौ ॥ तवदेहेहगेहनिजजा
 न्यौ ॥ मायावसस्वरूपविसरायो ॥ तेहिभ्रमतेदारुणदुख
 पायो ॥ ॥ छंद ॥ ॥ पायोजोदारुणदुसहदुःखसरवलेस
 सपनेहुनहिमिल्यौ ॥ भवशूलशोकअनेकजेहितेहिपंथतू
 हठिहठिचल्यौ ॥ बहूयोनिजन्मजराविपतिमतिमंदहरि-
 जान्यौनही ॥ श्रीरामविनवाश्राममूढविचारदेखपायोक
 हि ॥ आनंदसिंधुमध्यतववासा ॥ बितुजानेकतमरसि
 पियासा ॥ मृगभ्रमवारिसत्यजियजानी ॥ तहांतूमगनम
 यौसरवमानी ॥ ॥ छंद ॥ ॥ तेहिमगनमज्जसिपानकरि-
 अयकालजलनाहोजहां ॥ निजसहजअनुभवरूपतव-
 स्वलभूलिअवआयोतहां ॥ निर्मलनिरंजननिर्वाकारउ-
 दारसरवतेपरिहास्वौ ॥ निःकाजराजविहापनृपइवस्वभ्र
 कारागृहपस्वौ ॥ तैनिजकर्मडोरिदृढकीन्ही ॥ अपनेकरि-
 निगादींगहिदीन्ही ॥ तातेपरवसपस्वौअभागे ॥ ताफल-
 गर्भवासदुखआगे ॥ ॥ छंद ॥ ॥ आंगेअनेकसमूहसं-
 सृतिउदरगतिजान्यौसोऊ ॥ सिरहेठऊपरचरणसकट
 वातनहिपूछैकोऊ ॥ ओणितपूरिषजोमूत्रमलकृमकर्द

मादृत्तसोवहि ॥ कौमलशरीरगंभीरवेदनसासधुनीधुनिरा
वही ॥ तूनिजकर्मजालजहयेरो ॥ श्रीहरिसंगनतज्यौतहंतरो
॥ बहुविधिप्रतीपालनप्रभुकीन्हो ॥ परमकृपालज्ञानवोहिदा
न्हो ॥ ॥ छंद ॥ ॥ तोहिदियोज्ञानविवेकजन्मअनेकक्रीत
वसुधिमई ॥ तोहिइशकिहोशरएजकीविषमायागुणम
ई ॥ जेहिकियजीवनीकायवसरसहिनदानअतिनई ॥ सो
करोवेगिसंभारश्रीपतिविपतिमहजिनमतिदई ॥ पुनिबहू
विधोगलानिजियमानि ॥ अयजगजाइभजौचक्रपाणी ॥
ऐसेहिकरिविचारतुप्रसाधि ॥ प्रसवपवनप्रेरेऊअपराधि
॥ ॥ छंद ॥ ॥ प्रेखौजोपरमप्रचंडमारुतकष्टनानातेसत्यौ
॥ सोज्ञानध्यानविरागअतुभवजातनापावकदत्यौ ॥ अति
खेदव्याकुलअलपवलक्षिणएकअोलनआवही ॥ तव-
तीत्रकष्टनजानकोऊसबलोगहरषितगावहि ॥ वालदसाजे
तेदुरवपाए ॥ अतिअनईसनहिजाहिंगनाए ॥ क्षुधाच्या
धीबाधाभईभारी ॥ वेदननहिजानैमहतारी ॥ ॥ छंद ॥ ॥
जननीनजानैपीरसोकेहिहेतुशिशुरोदनकरै ॥ सोइक-
रैविविधिउपाईजातेअधिकतुवछातीजरे ॥ कौमारसै
शवअरुकिशोरअपारअथकोकहिसकै ॥ वितरेकतो
हिनिर्दयमहाषलआनकहुकोकहिसकै ॥ यौवनयुव-
तिसंगरंगरात्यौ ॥ तवतूमहामोहमदमात्यौ ॥ तातेत्या
गिधर्ममर्यादा ॥ विषरेजबसबप्रथमविषादा ॥ ॥ छंद ॥
विसरेविषादनिकायसंकटससुजिनहिफाटतहियौ ॥ कि

रगर्भगन्ध्रावर्तिसंस्मृतचक्रजिहिसौईसोईकियो॥ क्रमभ
 सावितपरिणामतनुतिहिलागिजबवैरिभयो॥ परदारप
 रधनद्रोहपरसंसारवादैनितिनयो॥ देरवतहीआईविरधा
 इ॥ जौतेंसपनेहुनाहिबुलाई॥ ताकेगुणकछुकहेजांही
 ॥ सोअवप्रगटदेषजगमांहि॥ ॥ छंद॥ ॥ सोप्रगटतनज
 र्जरजरावसव्याधिश्चूलसतावई॥ सिरकंपइंद्रियशक्तिप्र
 तिहतवचनकाहुनभावई॥ गृहपालहूतेअतिनिरादरखा
 नपाननपावई॥ ऐसिहुदसानविरागतहेतृष्णातरंगबदाव
 ई॥ कहिकोसकैमहाभवतेरे॥ जन्मएककेकछुकगनेरे॥ रवा
 निचारिसंततअवगाहि॥ अजहुनकरुविचारिमनमाही॥
 ॥ छंद॥ ॥ अजहुविचारिविकारतजिभजिरामजनसरव
 दायकं॥ भवसिंधुदुस्तरजलरथभजिचक्रधरसरनायकं
 ॥ वित्तुहेतुकरुणकरउदारअपारमायातारणं॥ कैवल्यप
 तिजगपतिरमापतिप्राणपतिगतिकारणं॥ रघुपतिभक्ति
 सुलभसरवकारि॥ सोत्रयतापशोकभयहारि॥ विनसत
 संगभक्तिनहिहोइ॥ तेतवमिलैइवैजबसोई॥ ॥ छंद॥ ॥
 जबद्रवैदिनदयालराघवसाधुसंगतपाइयौ॥ जाहदसपोपा
 मेवणयरकपापरासिनसाइयौ॥ जिन्हकेमिलेदुरवसरव-
 समानअननितिदिकूणभए॥ मदमोहलोभविषादक्रो
 धसुबोधतेसहजहिगए॥ सेवतसाधुद्वैतभयभागै॥ श्री
 रघुविरचरएलयलागै॥ देहजनितविकारसबत्यागै॥
 तवफिरिनिजस्वरूपअचुरागै॥ ॥ छंद॥ ॥ अचुराग

सोनिजरूपजो जगते विलक्षण दिखिए ॥ संतोपसमशान्त
सदादमदेहवंतनलंखिए ॥ निर्मलनिरामयएकरसतेहि हृषं
शोकनव्यापई ॥ त्रैलोक्यपावनसोसदाजार्कादसाएंसांभई ॥
जोतेहिपंथचलैमनलाई ॥ तौहरिकाहेनहोंहिसह्राई ॥ जो
मारगश्रुतिसाधुदिसवावै ॥ तेहिपंथचलतसवैसरवपावै ॥
॥ छंद ॥ ॥ यावहिसदासरवहरिरूपासंसारआसातजि
रहै ॥ सपनेहुंनहीसरवद्वैतदसनवातकोटिककोकहै ॥ हि
जदेवगुरुहरिसंतविलुसंसारपारनपावई ॥ यहजानितु-
लसीदासत्रासहरणरमापतिगावई ॥ १३७ ॥ गगविलाव
ल ॥ जोपैरूपारघुपतिरूपालकीवेंरश्रौरकेकहासरै ॥ हो
इनवाकौवारभक्तकोजोकोउकोटिउपाएकरै ॥ तकैनीचजो
मीचसाधुकीसोइपावरतेहिमीचमरै ॥ वेदविदितमहन्नाद
कथासुनीकौनभक्तिपथपावधरै ॥ गजउधारिहरिश्रयो
विभीषणध्रुवश्रविचलकवहुंनदरै ॥ अंवरोषकीआपसु
रतिकरिश्रजहुंमहासुनिग्लानिगरै ॥ सोधौकहाजोनकि
योदुर्जोधनश्रबुधश्रापनेमानजरै ॥ प्रभुप्रसादसोभाग्य
विजयजसपांडवनेवरिश्राईवरै ॥ जोजोकूपरवनेगोपरक
हंसोइसठफिरितेहिकूपपरै ॥ सपनेहुंसरवनहिसंतदोहि-
कहुसरतरुसोउविषफरनिफरै ॥ हैकाकैद्वैसीसईशको-
जोहठिजनकीसीमचरै ॥ तुलसीदासरघुवीरबाहुबलस
दानीडरकाहुंनडरै ॥ १३८ ॥ कवहुंसोकरसरोजरघुनायक
धरिहोनाथसीसमेरे ॥ जेहिकुरूपभयकियेजनश्रारत

वारकविवसनाउंटे ॥ जेहिकर कमलकदोर शंभुधनुभंजिजन
 कसंकटमेठ्यौ ॥ जेहिकर कमलउठाईबंधुज्यौपर्मप्रीतिकेच
 टमेठ्यौ ॥ जेहिकर कमलकृपालगिद्धकहूंउदकदेइतिजलो
 कुदियो ॥ जेहिकरवालिबिदारिगासहितकपिकुलपतिस्फुर्यौ
 वकियो ॥ आयौशरणासभीतविभीषणजेहिकरकमलतिल
 कुकिन्हौ ॥ जेहिकरगहिसरचापअस्तरहतिअभयदानदे
 वनदीन्हौ ॥ शितलस्वरुखदछांहजेहिकरकिमेठतिपापताप-
 माया ॥ निसिवासरतिहिकरसरोजकीचाहततुलसिदास
 छाया ॥ १३९ ॥ दीनदयालदुरितदारिददुरवदुनिदुसहतिहुंता
 पतइहै ॥ देवदुवारपुकारतआरतसबकीसबस्वरुवहानि
 भईहै ॥ प्रभुकेवचनवेदबुधसंमतममसूरतिमहिदेवमई-
 है ॥ तिन्हकीमतिरिसरागमोहमदलोभलालचिलीलिलइ
 है ॥ राजसमाजकुसाजकोटिकदुकलपतकलुषकुचालिनइ
 है ॥ ॥ नीतिप्रतितीप्रितोपरमितिपतिहेतुवा
 दिहविहेरिहइहै ॥ आश्रमवर्णधर्मविरहितजगलोक
 वेदमर्यादगईहै ॥ प्रजापतीतभूपालपापरतअपनेअ
 पनेरंगरईहै ॥ शांतिसत्यशुभरितिगईघटिवटिकरि
 तीकपटकलईहै ॥ ॥ सीदतिसाधुसाधुतासो
 चतिरवलविकलसतहुलस्ततखलईहै ॥ परमार-
 थस्वारथसाधनभयअफलसकलनहिंसिद्धिसईहै ॥ का
 मधेनुधरणिकलिगोमरविवसविकलजामतिनवईहै ॥ क-
 लिकरनीवरनियेकहांलोकरतफिरतविनटहल्लइहै ॥ ताप

रदांतपीसकरमीजतकोजानेचितकहाठइहै ॥ त्योंत्योंनीचच
 दतसिरज्यौंज्यौंशीलसोचवसठीलदइहै ॥ सरुषबरजतरजि
 यैतरजनीकुहिलैन्हैकम्हडैकीजइहै ॥ दिजैदादोदेखिनातौ
 बलिमहिमोदमंगलरितइहै ॥ ॥ भरे

भांगअनुरागलोगकहैरामअवधिचितवनिचितई
 है ॥ विनतिसुनिसानंदहेरिहसिकरुणावारिभूमि
 विजईहै ॥ ॥ रामराजभयौकाजसगुणशुभ-

राजारामजगतविजईहै ॥ समरथबडौसुजानसुसाहिव
 सुकृतसैनहारतजितइहै ॥ सुजनसुभावसराहतसादर
 अनायाशासासतिवितइहै ॥ उथपेथपनउजारिवसावन

गइबहोरिविकुदसदइहै ॥ तुलसीदासप्रभुआरतआर-
 तिहरअभयवाहकेहिकेहिनदइहै ॥ १४० ॥ तेनरनकरूप
 जीवजगभवभंजनपदविसुरवअभागी ॥ निशिवासर

रुचिपापअसुचिमनखलमतिमलिननिगमपथत्यागि ॥
 नहिसतसंगभजननहिहरिकोअवएानरामकथाअनुरा
 गी ॥ सुतवितदारभवनममतानिशिसोबतअतिनकव

हुमतिजागि ॥ तुलसिदासहरिनामसुधातजिसठहठिपि
 यतविषयविषमागी ॥ शूकरस्वानसृगालसरीसजनज-
 न्मतजगतजननिदुःखलागि ॥ १४१ ॥ रामचंद्ररघुनाय-

कतुमसोहोविनतिकेहिभांतिकरो ॥ अथअनंकअवलो
 किआपनेअनेअनयनामअनुमानिडरो ॥ परदुरवदु
 रवीसरवीपरसरवतेसंतशीलनहितदयधरां ॥ देखिआ

नकीविपतिपरमस्वस्वस्वनि संपतिविनश्रागिजरो ॥ भक्ति
विरागज्ञानसाधनकहिबहुविधिडहकतलोकतलोकफिरो
॥ शिवसर्वसस्वरवधामनामतववेचिनर्कप्रदउदरभरो ॥
जानतहूंनिजपापजलधिजियजलसीकरसमस्वनतल
रो ॥ रजसमपरअवगुणसमेरुकरिगुणगिरिसमरजते
निदरो ॥ नानावेषबनाइदिवसनिशिपरवितजेहियुक्ति
हरो ॥ एकौपलनकवहुंअलोलचितहितदौपदसरोजस
मिरो ॥ जौआचरणविचारहुमेरुकल्पकोटिलगिअव-
दिमरो ॥ तुलसीदासप्रभुकृपाविलोकनिगोपदज्यौंभवसिं
धुतरो ॥ १४२ ॥ सकुचतहोंअतिरामकृपानिधीक्यौंकरी
विनयसुनावो ॥ सकलधर्मविपरीतीकरतकेहिभांतिनाथम-
नभावो ॥ जानतहूंहरिरूपचराचरमैहठिनथननथनलावो ॥
अंजनकेससिखायुवतीजहंलोचनसलभपगवों ॥ श्रवणनि
कौफलकथातुहारियहससुजौससुजावो ॥ तिन्हश्रवणनि
परदोषनिरंतरस्वनिस्वनिभरिभरितावो ॥ जेहिरसनागुण
गाइतिहारेविनुप्रयासस्वरवपावों ॥ तेहिसुरवपरअपवा
दमेकज्यौंरटीरदिजन्मनसावों ॥ करहुहृदयअतिविमल
वसहिहरिकहिकहिसबहिसिखावों ॥ होनिजवरअभिमा
नमोहमदखमंडलीवसावों ॥ जोतनुधरिहरिपदसाधहिज
नसोविनुकाजगवावों ॥ हाटकघटभरिधस्वौकृधागृहत
जिनभकूपखनावों ॥ मनक्रमवचनलाईकीन्देअघतेक
रियलुहुरावों ॥ परेप्रेरितईर्षावसकवहुंककियौकलुश

भसोजनावों ॥ विप्रद्रोहजालुवातिपस्त्रोद्दिसवसौवैरब-
 ढावों ॥ तहुंपरनिजमतिविलाससवसंतनमाऊगनावों ॥
 निगशेषसारदनिहोरिजौअपनंदापकहावों ॥ तौनसिग-
 हिकल्पसतलगिप्रभुकहाएकसुरवगावों ॥ जौकरनिआप
 नीचिचारौतौकीशरएहोआवों ॥ तुलसीदासप्रभुसोगुण
 नहिजेहिसपनेहुंतुम्हहिरिऊावों ॥ नायकपाभवसिंधुधेनु
 पदसमजोजानिसिरावों ॥ १४३ ॥ स्तनहुरामरधुविरगुसा
 ईमनअनितरतमेरो ॥ चरएसरोजविसारितिहागौनिशि
 दिनफिरतअनेरो ॥ मानतनाहिनिगमअनुसासनवासन
 काहूकेरो ॥ भूल्यौफिरतकर्मकोल्हुनतिलज्यौंवहुचारिनिपे-
 रो ॥ लोभमोहमदकामक्रोधरततिन्हसोप्रेमघनेरो ॥ परगु-
 णस्तनतदाहपरदूषणस्तनतहर्षेबहुतेरो ॥ आधुपापको-
 नगरवसावतसहिनसकतपरषेरो ॥ साधनफलअतिसा-
 रनामतवभवसरिताकहुवेरो ॥ सोइपरकरकार्कीनिलागिस-
 ढवेचिहोतहठिचैरो ॥ कवाहुकहंसगतिस्तभावतेजाऊस्त-
 मारगनेरो ॥ तवकारक्रोधसंगकुमनोरथदेतकठिनभटभे-
 रो ॥ एकहौंदिनमलीनहीनमतिविपतिजालअतिघेरो ॥ ता-
 परसहिनजाईकरुणानिधिमनकोहुसहदरेरो ॥ होरिप-
 स्त्रौकरीयत्नबहुतविधितातेहो कहतसवेरो ॥ तुलसिदा-
 सयहआसमितैजबल्हदयकरहुतुमडेरो ॥ १४४ ॥ सोधो-
 कोजोनामलज्जातेनहिरारव्यौरधुविरा ॥ कारुणीकवीन-
 कारएाहींहरीहरहिंविषमभवभीरा ॥ वेदविदितजगवि-

हितअजामिलविप्रवधूअघधाम ॥ घोरजमालयजातने-
 वास्वौसुतहितसुमिरतनाम ॥ पशुपांवरअभिमानसिंधुग
 जयस्यौआईजवयाह ॥ सुमिरतसकृतसपदिआएप्रभुह
 स्वौदुसहउरदाह ॥ व्याधनिषादगृहगणिकादिकअगिणि
 तअवगुणमूल ॥ नामवोटतेरामसवनकोदूरिकस्वौभवशू
 ल ॥ केहिआचरणघादिहोतिनतेरघूकुलभूषणभूप ॥ सि
 दततुलसीदासनिसीवासरपस्वौभीमत्तमकूप ॥ १४५ ॥ क
 पासिंधुजनदीनदुआरेदादनपावतकाहे ॥ जबजहांतुमहि
 पुकारतआरततवतिन्हकेदुखदाहे ॥ गजप्रह्लादपंडसु
 तकपिसवकौरिपुसंकटमेत्यौ ॥ प्रणतबंधुभयविकलवि-
 भोषणताहिभरतज्यौंभेद्यौं ॥ मैतुसरोलैनामग्राम एकउ
 रआपनेवसायौ ॥ भजनविवेकविरागलोगभलेकर्मकरि
 ल्यायौ ॥ सुनिरिसमरेकुटिलकामादिककरहिजोरवरिआ
 ई ॥ तिन्हहीउजारीनारीअरिधनपुरराखहिंरामगुसाई ॥
 समसेवाछलदानदडहोंरचिउपायपचिहास्वौ ॥ विनका
 रणकोकलहबडोदुरवप्रभुसोप्रगटिपुकास्वौ ॥ सुरस्वार-
 थीअनीसअलायकनिष्ठुरदयाचितनाहीं ॥ जौउंकहांको
 विपतिनिवारकभवतारकजगमाहीं ॥ तुलसीयद्यपिपोचु
 तुम्हारोअोरनकाहूकेरो ॥ दीजैभक्तिवाहवैरकज्यौंसुवसै-
 अवरवेरो ॥ १४६ ॥ होसवविधिरामरावरोचाहतभयौंचैरो
 ॥ ठौरठौरसाहिवीहोतहैरव्यालकालकलिकेरो ॥ कालकर्म
 इंद्रियविषेगाहकगणधेरो ॥ होनकबूलतवांधिकेमौलक

रतकोरए ॥ वंदिछोरतंगेनामहोयकूदंतयडंरो ॥ मैकत्पोत-
 वच्छलपीतिकेमांगेउरडंरो ॥ नामपोदअयलपिवन्धोमन-
 युगजगजेरो ॥ अयगरिवनमागिएपाईवोनदेरो ॥ जोहि-
 कौतुककस्वानकोप्रभुन्यावनिवेरो ॥ तेहिकौतुककदियेकू-
 पालतुलसीहैमेरो ॥ १४७ ॥ कृपासिंधुतातेरहोनिशिदिन
 मनमारे ॥ महाराजलाजआपुहिनिजजांघउधारे ॥ मि-
 ल्यौरहैमास्वोचहैकामादिकसंघाती ॥ मोविनरहेनमेरि-
 येजारिछलिछाती ॥ वसतहि एहितजानिमेंसकनीमनिपा-
 लि ॥ कियोकअककादंडहोजडकर्मकुचादि ॥ देखिसनिन-
 आजुलोअपनायतिऐसी ॥ करहिं सवेसिर मेरेहोपिरीपर
 तअनेसी ॥ बडेअलेपीलपीपरंपरिहरंनजाही ॥ असमंज
 समंमगनहोलिजंगरियाहि ॥ वारकवल्लिअचलोकायेकोतु
 कजनजीको ॥ अनायासमिदिजाईगोसंकततुलसीको ॥
 ॥ १४८ ॥ कहौकोनसुह्लाईकेरघवीरगुसाई ॥ सुकुचतससु
 ऊतआपनीसवसाईदोहाई ॥ सेवतवससमिरतसखाश
 रणागतसोहो ॥ गुणगणसीतानाथकेचितकरतनहोहो ॥
 कृपासिंधुबंधुदीनकेआरतहितकारी ॥ प्रणतपालविरु-
 दावलिसनिजानिविसारी ॥ सेइनधेइनसुमिरिकेपदपी
 तिसुधारी ॥ पाइससाहिवसमसौभरिपेटविगारी ॥ ना
 थगरिवनिवाजहैमैगाहिनगरीबी ॥ तुलसीप्रभुनिजवो-
 रतेंवनिपरेसोकीवी ॥ १४९ ॥ कहांजाउंकासोकहोआरदौर
 नमेरे ॥ जन्मगवायोतेरहिद्वारकीकरतेरे ॥ मैतोविगारि-

नाथसों आरतके ॥ लिहेतोहि कृपानिधी क्यौवनेमेरिसीकी
नै ॥ दिनदुरदिनदिनदुरदसादिनदुरवदीनदूषण ॥ जौलो
तुनविलोकीहैरघु बंसविभूषण ॥ दर्दपीठीविनडिठमैतूवि
स्वविलोचन ॥ तोसौतुहिनदसरोनतसोचविमोचन ॥ परा
धीनदेवदीनहोस्वाधीनगुसाई ॥ बोलिनिहारेसोंकरैबलि-
विनयकिफाई ॥ आपुदेखिमोहिदेखियैजनमानियसांचों
॥ बडिबोटरामनामकीजिहांलईसोवाचों ॥ रहनिरितीरामरा
वरीनीतहियहुलसीहै ॥ ज्योंभावेत्सोंकरकृपालतेरोतुलसीहै
॥ १५० ॥ रामभद्रमोहिआपनौसोचुहैअरुनाही ॥ जीवसक
लसंतापकौभाजनजगमांही ॥ नातोवडेसमर्थसोंएकअोर
किधेहूं ॥ तोकोंमोसेअतिघनेमोकोएकतोहूं ॥ बडिगला
निहानिहैहियसरवज्ञससाई ॥ कूरकुसेवककहतुहोंसेवक
कीनाई ॥ भलोपौचुरामकोकहैमोकोसवनरनारी ॥ बीगरे
सेवकस्वानज्योंसाहिवसिरगारी ॥ असमंजसमनकोमि
टैसोउपावनसूजे ॥ दीनबंधुकीजैसोइवनिपरैजोबूजी ॥
विरदावलिविलोकीयैतिन्हमेकोउहोंहों ॥ तुलसीप्रभुकोप
रिहस्वौशरणागतसोंहों ॥ १५१ ॥ जैपैचेराइरामकीकरतो
नलजातो ॥ तौतूबदामकुदामज्यौकरकरनविकातो ॥ जप
तजीहरघुनाथकोनामनहीअलसातो ॥ वाजीगरकेसूम
ज्योंखलखेहनखातो ॥ जोतूमनमेरेकहेरामकामकमातो
॥ सीतापतिसनसुरवसुरवीसवठायसमातो ॥ रामसुहाते
तोहिंजोंतूसवहिसुहातो ॥ कालकर्मकुलिकारणीकोउन

कुहातो ॥ रामनामत्र्यनुगगदीजियजोरतियातो ॥ मारयप
 रमारयपय्योतोहि सवपतियातो ॥ सेइसाधुसनिमपुत्रके
 परपीरपीरातो ॥ जन्मकोदिकोंकदेकोइदददयथिगतो ॥
 भवमगत्रगमअनंतहेविनुयमदिमिरातो ॥ मदिमाउ
 लटेनामकोसुनिभयकिरातो ॥ अमरअगमातनुपाइसो-
 जडजायनजातो ॥ होंतोमंगलमूलनृत्यनकुंगथियातो ॥
 जोजनयोतिप्रतीतिरागरामनामदिंरातो ॥ नूनरागमम-
 सादसोतिहुतापनरातो ॥ १५२ ॥ रामभन्नाइयापनिधनो
 कियोनकाको ॥ शुगशुगजानकीनायकोजगजागतसाको
 ॥ बह्लादिकविनतीकरिकहिदुरववसुधाको ॥ रविकुलकेर
 वचंदमौअनंदसुधाको ॥ कौशिकगरतुतुसारज्योतफिते
 जुवियाको ॥ प्रभुअनहितहितकोदियोफलकोपट्टपाको ॥ इ
 स्खोपापअपुजाइकेसंतापसिलाके ॥ सोचमगनकल्योस-
 होसाहिवमिथिलाको ॥ रोषरासिभृगुपतिधनोअहमिति
 ममताको ॥ चितवतभाजनकरलियोउपसमसमताको ॥
 सुदितमानिआयसुचलेवनमातपिताको ॥ धर्मधुरंधरथी
 रसोगुणसोलजिताको ॥ गुहगरीवगतज्ञातहंजीवजि-
 हीनभरवाको ॥ पायोपावनप्रेमतेसनमानसरवाको ॥ सद
 गतिशवरीगृहकोसादरकरताको ॥ सोचसिंधुसुधीवको
 संकटहरताको ॥ राखीविभीषणकोसकैतिहिकालगहा-
 को ॥ आजुविराजतराजहैदशकंठजहाको ॥ वालिसवा-
 सीअवधकेउजियैनषाको ॥ तेषांवरपहुंचेतहांजहांसुनि

मनथाको ॥ गतीनलहेरामनामसोंविधिसोसिरजाको ॥ सुमि
 रत कहत प्रवारिकैबल्लुभगिरिजाको ॥ अकनिअजामिलकीब
 थासानंदनमाको ॥ नामलेतकलिकालहंहरिपुरनहिगाको ॥
 रामनाममहिमाकरैकामभरूहआको ॥ साक्षीवेदपुराएहै-
 तुलसीतनताको ॥ १५३ ॥ मैरै रावरीयेगतिहोरघुपतिबलिजा
 उं ॥ निजरनीचनीरधननिरगुएकहुजगदूसरोनठाकुरठा
 उ ॥ हैघरघरभवभरेससाहिवसूऊतसबनिआपनौदाऊ ॥
 प्रएतारतभंजनजनरंजनशरणागतपविपंजरनाऊं ॥ कूी-
 जैदासदासतुलसीअवहृपासिंधुनिनुमोलविकाऊ ॥ १५४
 देवदूसरोकौनदीनकौदयाल ॥ शीलनीधानसुजानशिरोम-
 णिसरणागतप्रियाप्रएतपाल ॥ कोसमरयसरवज्ञसकल
 प्रभुशिवसनेहमानसमराल ॥ कैसाहिवकिएमितपीतवस-
 खगनिशिचरकपीभीलभाल ॥ नाथहाथमायाप्रपंचसजी-
 वदोषगुएकर्मकाल ॥ तुलसिदासभलौपोचरावरोनेकुनिर
 खीकीजैनिहाल ॥ १५५ ॥ रागसारंग ॥ विस्वासएकरामनाम
 को ॥ मानतनहिंप्रतितिअनतऐसोइसुभावमनवामको ॥ प
 ठिकौपरखौनछटिलमतऋगयजुरअथर्वणसामको ॥ व्रत
 तीरथतपसुनिसहमतपचिमरैकरैतनुछामको ॥ कर्मजाल
 कलिकालकठिएआधीनसुसाधितदामको ॥ ज्ञानविराग
 योगजपकौभयलोभमोहकोहकामको ॥ सबदिनसबलाय
 कभयौगायकरघुनायकरगुएग्रामको ॥ बैठेनामकामतरु
 तरडरुकौनधीरधनधामको ॥ कौजानैकौजैहैयमपुरको-

सारपुत्रपरधामको ॥ तुलसिहिवहूतभलोलगागतजगर्जावन
 रामगुलामको ॥ १५६ ॥ कलिनामकामतररामको ॥ दन्निहा
 रदारिददुकालदुखदोषघोरधनधामको ॥ नामलेतदाहीनो
 होतमनुवामविधातावामको ॥ कहतसुनिशमहेशमहातम
 उल्लटेसूधेनामको ॥ भलोलोकपरलोकतासूजाकेवललीत
 ललामको ॥ तुलसीजगजानियतनामतेनोचनकुचमुकाम
 को ॥ १५७ ॥ सेइयेससाहिवरामसो ॥ सुखदशीलसूजान-
 सुरसूचिसुंदरकोटिककामसो ॥ सारदशंपसाधुमहिमाक
 हेगुणगणगायकसामसो ॥ सुमिरिसंप्रमनामजासौरति
 चाहतचंद्रललामसो ॥ गमनविदेसनलेशकुंशकोसुकुचन
 सकुतप्रणामसो ॥ सोक्षताकोविदितविभीषनवैद्योहैंअ
 विचलधामसो ॥ दहलसहलजनमहलमहलजागतचारो
 यगजामसो ॥ देषतदोषनखीरुतरिऊतसुनिसेवकगुण
 ग्रामसो ॥ जाकेभयतीलोकतीलकभयत्रिजगयोनिनता
 मसो ॥ तुलसीऐसेप्रभुहिभजैजानताहिविधातावामसो ॥
 ॥ १५८ ॥ रागनट ॥ कैसेदेऊनाथहिरवोरी ॥ कामलोलुपभ्रम
 तमनहरिभक्तिपरिहरितोरि ॥ बहुतप्रीतिपूजाइवेपरपुजि
 वेपरथोरी ॥ देतसिषसिखयौनमानतमूढताअसमोरि ॥
 किएसहितसनेहजेअघलदयराखेचोरि ॥ संगवसकिए
 शुभसूनाएकललोकनिहोरि ॥ करौजोकछुधरोंसचिप-
 चिसकृतशीलावढोरि ॥ पैठिउरवरवसदयानिधीदंभले
 तअजोरि ॥ लोभमनहिनचावकपिज्यौंगरेआसडोरि ॥

वातकहूँ वनाय वधी वलवर विरागनिचोरी ॥ एतेहु परतुमरी
 कहावतलाज अचई घोरी ॥ निर्लज्जता परवी किरधुवर-
 लीजे तुलसीछोरी ॥ १५९ ॥ है प्रभु मेरो इसवदोस ॥ शीलसिं
 धुकपालनाथ अनाथ आरतयोस ॥ वेषवचन विराग
 मन अघ अवरुणानिकोकोस ॥ राम प्रीती प्रतिती पीलोक
 पटकदतदोस ॥ रागरंगकुसंग ही सो साधु संगतिरोस ॥
 चहत के हरिजस ही सेईस गालज्योखरगोस ॥ शंभुसिख
 वनरसनहुं नीतरामनामहिघोस ॥ दभहुकलनामकुभुज
 शोचसागरुसोस ॥ मोदमंगल मूल अतिअलुल्ल निज
 निरयोस ॥ रामनामप्रभाव सुनीतुलसीहपरमपरितोस
 ॥ १६० ॥ मैहरिपतित पावनकने ॥ हमपतिततुमपतित
 पावनदोऊवानकवने ॥ व्याधगणिकागज अजा मिलसा-
 खिनीममनिभने ॥ औरअधयअनेकतारेजातकापैगने ॥
 जानिनाम अजानीलीहनेनरकजमपुवभने ॥ दासतुलसी
 शरणआयोराखिएआपने ॥ १६१ ॥ रागमल्हार ॥ तोसो-
 प्रभुजोपैकहुंउहोतो ॥ तोसहीनीपटनीरादरनिसिदिनरटै
 लटिएसोघटिकोतो ॥ कृपासुधाजलदानिसानिवोकहैसो
 साचनिसोतो ॥ स्वातीसनेहसलिलसरवचाहतचिताचात
 ककोसोपोतो ॥ कालकर्मवसुमनकुमनोरथुकवहुंकवहुंक
 लुभोतो ॥ ज्योसुदमथवसमीनवारितजिबुछरिभरीलेतगो
 तो ॥ जितोहुराऊंदासतुलसीउरक्योंकहिआवतओतो-
 ॥ तेरेराजरायदशरथकेलयोवयोबिहुजोतो ॥ १६२ ॥ ।

॥रागसौरदा॥ ॥ऐसोकोउदारजगमाही॥ वित्तुसेवाजोइ
वैदीनपररामसरिसकोउनाही ॥जोगतियोगविरागयत्न
करिनहिपावतसुनिज्ञानी॥ सोगतिदर्इगीधशवरीकहुप्र
भुनवहुतजियजानी॥ जोसंपतिदशसीसयाधिकरिराव
नशिवपहलीन्ही ॥ सोसंपदाविभीषणकहुअतिसकुच
सहितहरिदीन्ही ॥ तुलसीदाससबभांतिसकलरुखज्यो
चाहसिमनमेरे ॥ तौभजरामकामसवपूरणकरैरूपानि
धितेरे ॥ १६३ ॥ एकइदानीशिरोमणिसांचौजीहीज्यांचौ
सोई ॥ जाचकतावसफिरिबहुनाचननांचौ ॥ सबस्वारथी
असरसरनरसुनिकोउनदंतवित्तुपाए ॥ कोशलपालक
पालकल्पतरुइवतसकृतसिरुनाए ॥ हरिहु औरअवता
रआपनेराखीवेदबडाई ॥ लौचिउरानीधीदर्इसदा महि
यद्यपिबालमीताई ॥ कपिशवरीसुग्रीवविभीषणकोको
नकियोअजाची ॥ अबतुलसीहींदुखदेतदयानिधिदारु
णआसपिसाची ॥ १६४ ॥ जानतप्रीतिरीतिरघुराई ॥ ना
तेसबहांतेकरिराखतरामसनेहसगाई ॥ नेहनिवाहिदेहत
जिदसरथकीरतिअचलचलाइ ॥ ऐसंहुपितुतेअधिकगृ
हपरममतागुणगुरुआई ॥ तियविरहिसुग्रीवसरवाल
स्वीप्राणप्रियाविसराई ॥ रणपस्वौबंधुविभीषणहिकोसा
नुहृदयअधिकारई ॥ धरगुरुगृहप्रियसदनसासुरेभरई
जबजहांपहुनाई ॥ तवतबकहिसवरीकेफलनकीसुचि
माधुरिनपाइ ॥ सहजसरूपकथासुनिवरनतरहतसकु

चिसिरनाई ॥ केवलमितकहतकरवमानतवानरबंधुवडा-
 ई ॥ प्रेमकनोडौरामसोप्रभुत्रिभुवनतिहूंकालनभाई ॥ तेरो
 ऋणीहोंकल्योकपिसोएसीकोमानिहेंसैवकाई ॥ तुलसीरा
 मसनेहशीललरवीजौनभक्तिउरआई ॥ तोहिजन्मजाईज
 ननीजडतनतरुएतागवाई ॥ १६५ ॥ रघुवररावरीइहैबडा
 ई ॥ नौदरीगनीआदरगरिवपरकरतरुपाअधिकार्ई ॥ थ
 केदेवसाधनअनेककरिसपनेहुंनहिदेईदेखाई ॥ केवट
 कुटिलभालुकपियोनृपकिएसकलसंगभाई ॥ मिलिसुनिवृ
 दफिरेदंडकवनसोचरचानचलाई ॥ वारहिवारगीधशब
 रीकीवरनतयोतिरुहाई ॥ स्वानकेहेतकियोपुरवाहरजती
 गयंदचढाई ॥ तियनिदकमतिमदप्रजारजनिजनयनगर
 वसाई ॥ एहिदरबारदीनकोआदररीतिसदाचलिआई ॥ दी
 नदयालदीनतुलसीकाहुनकरतिकराई ॥ १६६ ॥ ऐसीराम
 दीनहितकारी ॥ अतिकामलकरुएगानिधानविनकारनप
 ररुपकारी ॥ साधनहीनदीननीजअधवससिलाभईसु
 निनारी ॥ गृहतेंगवनिपरसिपदपावनघोरथापतेतारी ॥
 हिंसारतनिषादतामसवपुपशुसमानवनचारि ॥ गेल्यौ
 ल्हदयलगाईप्रेमवसनहिकुलजातीविचारी ॥ जद्यपिदोहकि
 योंकरपतिसुतकहिनजाईअतिभारी ॥ सुकललोकअव
 लोकीशोकहतशरणगएभयटारी ॥ विहंगयोनिआभिष
 आहारपरगीधककवनव्रतधारी ॥ जनकसमानक्रियाता
 किनीजकरसबवातसंवारी ॥ अधमजातीशवरीयोषित

सठलोकवेदतेन्यारी ॥ जानी प्रातिद्वैतर सकृपानिध्यासोत्तर
 घुनाथउधारी ॥ कपिराग्रीवबंधुभयव्याकुलत्रायेशरण
 पुकारी ॥ सहीनसवंदारुणदुरयजनकेहृत्योवालिसहिगा
 रो ॥ रिपुकाबंधुविभोपणनिशिवरकोनभजनअधिकारी
 ॥ शरणगऐत्रागेद्वेलीन्होभेत्योभुजापसारि ॥ अशुभहो
 इजिनकेरुमिरएतंवानररीछविकारि ॥ वेदविदितपावन
 क्तिएतेसयमहिमानायतुम्हारि ॥ कहलगिकहोदिनअगणि
 तजिन्हकीतुमविपतिनिवारी ॥ कलिमलयमितदारतुल-
 सोपरवाहेरुपाविसारो ॥ १६७ ॥ रघुपतिभक्तिकरतकाठना
 ई ॥ कतुसगमकरनाअपारजानेसोइजहिवनित्राई ॥ जो
 जेहिकलाकुशलताकहूं सोईरुलभसदासरवकारी ॥ सुफ-
 रीमनसुरवजलभवाहररसरगेवहैगजभाशे ॥ ज्योसकरा
 मिलैसिकतासुहुवलतेनकोउविलगावे ॥ अतिरसज्ञसूक्ष्म
 मपिपीलकाविनुप्रयासेहिपावे ॥ सकलदृशनिजउदरमेंलि
 सौवैनिद्रातजियोगी ॥ सोदहरिपदअतुभवेपरमसरवअ-
 तिशयद्वैतवियोगी ॥ शोकमोहभयहर्षदिवसनिशिदेसका
 लतहांनाहीं ॥ तुलसीदाराएहिदशाहीनसंशयनिर्मूलन-
 जाहीं ॥ १६८ ॥ जोपैरामचरणरतीहोती ॥ तौकतत्रिविधिशु-
 लनिशिवासरसहतंविपतिनिसोती ॥ जोसंतोषरुधानिशि
 वासरसपनेहूंकवहुकपावे ॥ तौकतविपयविलोकीफूठज
 लमनकुरंगज्योधावे ॥ ज्योत्रीपतिमहिमाविचारिउरभ
 जतेभावबढाए ॥ तौकतद्वारद्वारकुकरज्योफिरतेपेठस्वला

ए ॥ जैलोलुपभयेदासआसकेतेसबहिकेचरे ॥ प्रभुविश्वा-
सआसजितिजिन्हतेसेवकहरिकेरे ॥ नहिकेकोआचरण
भजनकोविनुपकरतहोताते ॥ कीजैकृपादासतुलसीप
रनाथनामकेनाते ॥ १६९ ॥ ज्यौंहिरामलागतमीठे ॥ तौन-
वरसषठरसअनरसकैजातंसवसीठे ॥ वंचकविषयवि
विधीतनुधरिअनुभयसुनेअरुडीठे ॥ यहजानतहोह
दयअपनेसपनेनआघाईउवीठे ॥ तुलसीदासप्रभुसों
एकहिवलवचनकहतअतिदिठे ॥ तामकिलाजरामकरुणा
करिकेहिनदियेकरिचिठे ॥ १७० ॥ यामनुकवहुंतोतुमहिन
लाग्यौ ॥ ज्यौंछलुछडिसुभायनिरंतरंतहताविषयअनुरा
ग्यौ ॥ ज्यौंचातईपरनारीसुनेपातकप्रपंचधरंधरके ॥ त्यों
नसाधुसरसरितरंगनविमलगुणगणरघुवरके ॥ ज्यौं-
नासासुगंधरसवसरनापउरसरतीमानो ॥ रामप्रसादमा
लजूठनिलगियोंनललकीललचानी ॥ चंदनचंद्रवदनी
भूषणपटज्यौवहपावरपरस्यौ ॥ त्योंरघुपतिपदपद्मपर
सिकोतनुपातकिनतरस्यौ ॥ जौसबभांतिकुदेवकुठाकुर
सेएकपुवतुवनहिएहूंस्योंनरामसुकृतदोशेसकुचतसुक
तप्रणामकिएहूं ॥ चंचलचरणलोभलगिलोलुपदारज
गवागे ॥ रामसियआथमनचलतसपनेनभयेथमीत-
अभागो ॥ सकलअंगपदविमुखनाथमुखनामकिवोटल
ईहैं ॥ हेतुलसीहिपरतितिएकप्रभूसुरतिकृपामइहैं ॥ १७१
॥ कीजैमोकोजगजातनामई ॥ रामतुमससुचिसकहदय

साहिवहिभैसवपिठदई ॥ गर्भवासदशमासपान्निपितुमा
तुरूपहितकीन्हो ॥ जडहिविकेककशीलखलहियपराधि
हांआदरदीन्हो ॥ कपटकरांतरजामीहुसोअथआपक
हिदुरावो ॥ ऐसेकुमतिकुसेवकपररधुपतिनकियोमनया
वो ॥ उदरभरोकिकरकहायवंच्योविपयनिहाथहियोहै ॥
मोसेवंचककोठपालछलछाडिकेछोहुकियोहै ॥ पलपल
केउपकाररावरोजानिवृजिसुनिनाके ॥ मित्योनकुलिश
हुतेकवोरचितकवहुंभेमसियपीके ॥ स्वामीकोसेवकहि
ततासबकछुनिजसाइदोहाई ॥ मैमतितुलातोलिदंभाभ
ईमेरीहांदोसिगरुआई ॥ एतंहुपरहितकरतनाथभरो-
करिआयोओकरिहै ॥ तुलसीअपनीवोरजानीएतप्रभु
हिकनोडोईमरिहैं ॥ १७२ ॥ कवहुकहोएहिरहनिरहोगो
॥ श्रीरघुनाथकपालकृपातेसतरुभावगहोगो ॥ यताला
भसंतीपसदाकाहूसोकछुनचहोगो ॥ परहितनिरतनिरै
तरमनक्रमवचननेमनिवहोगो ॥ परुषवचनअतिदुःस
हअवएकनितेहिपावकानदहोगो ॥ विगतमानसमशी
तलमनपरगुएननहिदोषकहोगो ॥ परिहरिदेहजनित
चिंतादुखकरवसमबुद्धिसहोगो ॥ तुलसिदासप्रभुएहि
पथरहिअविचलहरिभक्तिलहो ॥ १७३ ॥ नाहिनआव
तआनभरोसो ॥ एहिकलिकालसकलसाधनतरुहैअ
मफलनिफरोसो ॥ तपतिरथउपवासदानभवजिहिंजो
रुचैकरोसो ॥ पाएहिपैजानीवोकर्मफलभरिभरिवेदप-

रोसो ॥ आगमविधिजपजागकरतनरसरतनकाजस्वऐसो
 ॥ सुरवसपनेहुंनयोगसिधिसाधनयोगविद्योगधएसो ॥
 कामक्रोधमदलोभमोहमिलिज्ञानविरागहरोसो ॥ विगरत-
 मनसत्यासलेतजलनावतआमधरोसो ॥ बहुमतसुनिबहु
 पंथपुराएनिजहांतहांऊगरोसो ॥ गुरुकृत्यौरामभजननी
 कोमोहिरामराजडगरोसो ॥ तुलीविनपरतितिशीतिफिरिफि
 रिपचिमरैमरोसो ॥ रामनामबोहितभवसागरचाहैतरनत
 रोसो ॥ १७४ ॥ जाकेप्रीयनरामवैदेही ॥ सोछाडियेकोदिवै-
 शसमयघपिपरमसनेही ॥ तज्यौपीताप्रहलादविभीषण
 बंधुभरतमहतारी ॥ बलियुरुव्रजवनिततिपतिव्रागेभ
 इजगमंगलकारी ॥ नातेनेहरामकोमनियतसकृदयसू
 सेव्यजहांलो ॥ अंजनकहाआरवजेहिफूटेबहुतहोंकहों
 कहांलो ॥ सोतुलसीसबभांतिपरमनिधीपूज्यप्राणतेप्या
 रौ ॥ जासोंहोइसनेहरामपदसोईहितहमारो ॥ १७५ ॥ जौ
 पैरहनिरामसोनाही ॥ तौनरपरकूकरसूकरसेजायजियत
 जगमांही ॥ कामक्रोधमदलोभनादभयभूषव्याससबही-
 वेके ॥ मनुजदेहसूरसाधुसराहतसोतेनिहतसीयपीके ॥ सू
 रसूजानसूपूतसूलक्षणगनियतगुणगुरुआई ॥ विनह
 रिभजनईदोरकेसेफलतजतनहीकरुआई ॥ कीरतिकुल
 करतूतिभूतिभलिशीलसरूपसलोने ॥ तुलसीप्रभुअनुरा
 गरहितजैसेसालनसागअलोने ॥ १७६ ॥ राख्यौरामसे-
 स्वामीसोनिचनेहननातौ ॥ एतेअनादरहोतहांतेनहातौ

॥ जोरेन एनातेन हफोकटफोकं ॥ देहके दाहकगाहकजीके ॥
 अपने आपनेको सबचाहतनोंको ॥ मूलदुहूंकोंदयालदुल
 हसीयको ॥ जीवकेजीवनप्राणप्राणहुकेप्यारो ॥ सुखइ-
 को सुखरामसोतेविंसारो ॥ कियोंकरेंगोतोसेखलकेभ-
 लौ ॥ ऐसेसाहिवसोंतुकेयोकुन्नालिचलो ॥ तुलसीतेरिभ-
 लाईअजहूबूजे ॥ राउराउतहोतफिरिकेनूजे ॥ १७७ ॥ जौ
 तुमत्यागोरामहोतोनहियागों ॥ परिहरिपायकाहिअनुपा
 गों ॥ सुखदसुप्रभुतमसोजगमाहीं ॥ अथएनयनमनगो
 चरनाही ॥ होजडजीवईशरघुराया ॥ सुममायापतिहोव
 समाया ॥ होतोकुजाचकस्वामीसदाता ॥ होंकपूततुमहितु
 पितुमाता ॥ जौपैकहूंकोउबूऊतवोतो ॥ तोतुलसीविनमो
 लविकातो ॥ १७८ ॥ भएऊउदासगाममेरेआसरावरी ॥
 आरतस्वारथीसबकहैवातवावरी ॥ जीवनकोदानीपन
 कहाताहिचाहिए ॥ प्रेमनेमकेनिवाहेंचातकसराहिए ॥ मी
 नतेनलाभलेसपानीपुन्यपीनको ॥ जलविनथलकहांमीतु
 विचुवीनकोवडेहीकोओटवलिवानिआएछोटेहै ॥ चलत
 खरेकेसंगजहारवोटहै ॥ एहिदरबारभलोदाहिनेहुवाम-
 को ॥ मोकोशुभदायकभरोसोरामनामको ॥ कहतनसानी
 कैंहैहिएनाथनीकीहै ॥ जानतकूपानिधानतुलसीकेजीकी
 है ॥ १७९ ॥ रोगविलावल ॥ कहांजाऊंकासोकासोकहोंको
 सुनैदीनकी ॥ त्रिभुवनतुहिगति सबअनहीनकी ॥ जगज
 गदीशधरधरनिधनेरहै ॥ निराधारकोअधारगुणगण

तेरेहैं ॥ गजराजकाजरवगराजतजिधायौको ॥ मोसेदास-
कोसपोसतोसोमाथजायौको ॥ मोसेकु रकायरकपूतको
डीआधके ॥ किएवहुमोलतिकरैयागृन्धुआद्धको ॥ तुलसीकी
तेरेहीवनायेवलीवनेगी ॥ प्रभुकीविलंबअंबदोरखदुरवज-
नेगी ॥ १८० ॥ वारकविलोकिवलिकीजैमोहिआपनो ॥ रा
यदसरथकेतूउथपनथापनो ॥ साहेबशरणपालुसबल
नदुसरो ॥ तेरेनामलेतहीसुखेतहोतउसरो ॥ वचनकर्म
तेरेमेरेमनगडेहैं ॥ देखेसुनेजानेमैजहानजेतेबडेहैं ॥ के
सेकियोसमाधानसनमानसिलाको ॥ भृगुनाथसारिरवौ
जितेयाकौनलीलाको ॥ मातुपितुबंधुहितलोकवेदपाल
को ॥ बोलेकोअचलनतकरतनिहालको ॥ संग्रहीसनेहव
सअधमअसाधुको ॥ गीधशवरीकोकहौकरिहैसराधको
॥ निराधारकोअधारदिनकोदयालको ॥ मीतकपिकेवटर
जनोत्तरभालुको ॥ रंकनिरगुणिनीचजेजेतेनिवाजेहै ॥ म
हारासुजनसमाजतेविराजेहै ॥ साचीबोरदावलीनवटी-
कहीगईहै ॥ शीलसिंधुठीलतुलसीकीवारभइहै ॥ १८१ ॥
केहूंभांतीरूपासिंधुमरिवोरहेरिए ॥ मोकोअौरठोरनसू
जैठेकएकतेरिए ॥ सहससीलातेअतिमतिजडभईहै ॥
कासोकहोंकौनेगतिपाहनहीदइहै ॥ पदरागजागचहों
कौसिकज्यौंकियोहै ॥ कलिमलखलदलदेषिभारिभीतिभियोहै ॥ क
र्मरूपिशकलिवलिनासत्रर्यौहै ॥ चाहतअनाथनाथतेरिवांहवस्यौ
है ॥ महासोहरावणविभीषणज्यौहयोहै ॥ आहितुलसीसत्राहिति

हुंतापतयोहै ॥१८२॥ नाथगुणगाथसूनिहोतचित्चाउसो ॥
 रामरिखिवेकोजानोभक्तिनभाउसो ॥ कर्मसभाउकालठाकुर
 नठाउसो ॥ सूधननसूतननसूमनसुआउसो ॥ जाचो ज
 लजाहिकहैअमियपिआवसो ॥ कासोकहोकाहूसोनवढ
 तहियाउसो ॥ वापवलिजाउंआपकरिएउपाउसो ॥ तेरोहि
 निहारेपरेहारेहूसूदाऊसो ॥ तेरोहिसूजाएसुजेअसूज
 सूजाउसो ॥ तेरोहीबुजाएबूजेअबुजबुजाउसो ॥ नाम
 अवलंबअंबुदीनमीनराउसो ॥ प्रभुसोवनाइकहैजीह
 जारिजाउसो ॥ सबभांतिविगरोहै एकसूवनाउसो ॥ तुल
 सीसूसाहिवहियोहैजनाउसो ॥१८३॥ रागअसावरी
 ॥ रामप्रीतिकारिआपुजनीअतिहै ॥ वडैकिबडाईछो
 टेकीछोटाइदूरिकरैएसीयोवावरिवलिमनिअतिहै ॥ गी
 धकौकरायोआहूमीलनीकेरवीयेफलसोऊसाधुसभाभ
 लिभांतिभनिअतिहै ॥ रावरेआदरीलोकवेदहूंआदरीअ
 नियोंगज्ञानहूंतेगुरुगनिअतिहै ॥ प्रभुकीरूपारूपालकठि
 नकलिहुकालमहिमासमुजीउरअनिअतिहै ॥ तुलसीप
 राएवसमएरसअनरसदीनबंधुदारेहठठनीअतिहै ॥
 ॥१८४॥ रामनामकेजपेपैजाइजिएकिजरनि ॥ कलिका
 लअपरउपाएतेअपायभएजैसेंतमनासिवेकोंचित्रके
 तरनि ॥ कर्मकलापपरितापपापसानेसवज्यौंसूफूलफू
 लेतरुफोकटफरनि ॥ दंभलोभलालउपासनाविनासनी
 केसूगतिसाधनभईउदरभरनि ॥ योगनसमाधीनिरु-

पाधीनविरागज्ञानवचनवेषविसेषिकहुनकरनी ॥ कपट
 कुपथकोविकहनिरहनिषोदिसकलसराहैनिजनिजआच
 रनी ॥ मरतमहेशउपदेतहैकहाकरतसरसरितोरकाशीध
 र्मधरनी ॥ रामनामकौप्रतापहरकहैजपैआपयुगयुगजानै
 जगवेदहुवरनी ॥ मतिरामनामहिसेरतिरामनामहीसोंग
 तिरामनामहिकीविपतिहरनि ॥ रामनामसोप्रतितीपीतिरा
 खेकवहुकतुलसीदरेगैरामआपनिठरनि ॥ १८५ ॥ लाजनछा
 गतदासकहावत सोआचरएविसारसोचतजिजांहरितु
 म्हकहुभावत ॥ सकलसंगतजिभजताजाहिसुनिजपत
 पयोगवनावत ॥ सोसममंदमहाषलपांचरकोनयत्नतेहि
 पावत ॥ हरिनिर्मलमलग्रसितहृदयअसमंजसमोहिजना
 वत ॥ जेहिसरकाकंककबकसूकरक्योमरालतहाआवतजा
 कीशरएजार्दकोचिददारुनत्रैयतापनसावत ॥ तहुंगएम
 दमोहलोभअतिसरगहंमिठतनसावत ॥ भवसरिताक
 हुनात्रसंतयहकहिओरनिससुजावत ॥ होतिन्हसोहरि
 षर्मवैरकरितुम्हसोभलोमनावत ॥ नाहिनओरदौरमोकहु
 तातेहठिनातोलावत ॥ राखहुशरएउदारचूडामाणितुल
 सीदासगुएगावत ॥ १८६ ॥ कोनयत्नतेविनतीकरिए ॥
 निजआचरएविचारहारहियमानीजानिहरिडरिया ॥
 जेहिसाधनहरिद्रवहुजानिजनसोहठिपरिहरिए ॥ जा
 तेविपतिजालनिशिदीनदुरवतिहिंपथअनुसरीए ॥ जा
 नतहुमनकर्मवचपरहितकिन्हेतरिए ॥ सोपरीती-

देसवी परस्वरविनकार एहिजरि ए ॥ श्रुतिपुरा ए सचकोम
 तयह सतसंगसुदृढधरि ए ॥ निजअभिमानमोहई पाव-
 सतिन्हहि नआदरि ए ॥ संततसोइ प्रियमोहि सदाजाते भव
 निधिपरि ए ॥ कहौ अवनाथ कवनवलते संसारशोकहरि ए
 ॥ जबकवनीजकरुणासुभाएतेद्रवहुतोनिस्तरि ए ॥ तुल-
 सीदासविश्वासअननहिकतपचिपचिमरि ए ॥ १८७ ॥ तां
 हितेअथौशरणसवेरे ॥ ज्ञानवीरागभक्तिसाधनकछुस
 पनेहुं नाथनमेरे ॥ लोभमोहमदक्रोधबोधरिपुफिरतरै न-
 दीनधेरे ॥ तिन्हहिमीलेमनुभयौकुपथरतिफिरौतिहारे
 हिफेरे ॥ दोषनिलययहविषयशोकप्रदकहतसंतअतिदेरे
 ॥ जानतहुंअनुरागतहांअतिसोउहरितुसूरेहिपेरे ॥ वि-
 षयीधूरवसमकरहुअभिहिमतारिसकहुविनवेरे ॥ तुम-
 समईशकृपालपरमहितपुनिनपाइयतहेरे ॥ यहजिय
 जानिरहौं सुवतजिरघुविरभयोसेतेरे ॥ तुलसीदासयह
 विपतिवारुगोतुमसोवनिहिनिवेरे ॥ १८८ ॥ मैतौअवजा
 न्योसंसार ॥ बाधिनसकहिमोहिहरिकेवलप्रगटकपद
 आगार ॥ देषतहीकमनीयकछूनहिनापुनिकिएविचार
 ॥ ज्यौंकदलीतरुमध्यनिहारतकवहुननिकरतसार ॥ ते
 रेलिएजन्मअनेकमैफिरतनपाथौपार ॥ महामोहमृगज
 लसरितामहुवोस्वौहौंचारहिवार ॥ सुनीखलल्ललबलको
 टिकिएवसहोहिनभक्तउदार ॥ सहितसहायतहांवसिअ
 वजिहित्ददयननंदकुमार ॥ तासोकरहुचातुरिजोनहि

जानै मरम तुम्हार ॥ सोपरिमरै डरै रजु अहिते बूझै नहि व्यवहा
 रा ॥ निजहित सनि सठ हठन करहि जौ चहहि कुशल परिवार ॥
 तुलसीदास प्रभुके दास न्हत जि भजहि जहां म द मार ॥ १८९
 ॥ राग गौरी ॥ राम कहत चल राम कहत चल राम कहत चलु भा
 ईरे ॥ नाहितो भव वेगारि परि हो पुनि छूटव अतिकठि नाईरे
 ॥ वांसुपुरा एसाज सब अटकठ सरलतिको नरवटो लारे ॥
 हमहि दिहल कर कुटिल कर्म चंद्रमंदमोल विनडो लारे ॥ वि
 षम कहार मार म द माते चल हि पाउवटो रेरे ॥ मछु विलंद अ
 भेरा दल कन पाई यहु खऊक जो रेरे ॥ कादकुरायल पेटन लो
 टन ठां वहिं ठावव जाउरे ॥ जस जस चलि एदूरित सत स
 निज वासन भेद लगाऊरे ॥ मारग अगम संग नहि संबल
 नाम ग्राम कर सुलारे ॥ तुलसीदास भवनास हरहु अवहो
 दुराम अनुकूलारे ॥ १९० ॥ सहजसने ही राम सोतें कियो न
 सहजसनेऊ ॥ ताते कछु ससुजौ नहि सुतु अजहु सिषाव
 न एहु ॥ ज्यौं सुखसु कुरविलो किये अरु चितन रहे अनुहा
 रि ॥ त्यौं सेवतहु निरापने मातु पिता सुत नारी ॥ दै दै सुमन
 तिलवासिके अरु खरी परि हरिरसलेत ॥ स्वारथहित भूत
 लभरे मने मेचकत नसेत ॥ करिवो त्यौं अवकरतु है करिवे
 हितमीत अपार ॥ कहूं नको उरघु विरसौने हनिवाहनहार
 ॥ जासो सवनातो फुरै तासौं न करि पहिचानि ॥ ताते कछु स
 सुजौ नहि कहाला भकहाहानि ॥ सांचौ जान्यो जूढके जूढे
 कहूं सांचौ जानी ॥ कौन गयो कौन जात है कौन जै है करिहि

तहानि ॥ वेदकल्पौखुडकहत है अरु हों हूंकहत हों दोरे ॥ तु
लसी प्रभुसाचौ हितूतूहियकी आरिवनहरि ॥ १९१ ॥ एकस
नेहीसाचीलोकेवलकोशलपालु ॥ अंमकनोंडोंरामसोनाहि
दूसरौदयालु ॥ तनसाथोसवस्वारथीस्तरव्यवहाररुजा
न ॥ आरतअधमअनाथकोहितुकोरघुवीरसमान ॥ नाहु
नीतुरंसमचरसोखिसलिलसनेहनसर ॥ शशिसरोगदि
नकरवडेपथदप्रेमपथकुर ॥ जाकोमनजासोंवध्योताकोसु
खदायकसोई ॥ सरलसीलसाहीवसदासोतापतिसरिसन
कोई ॥ सुनिसेवसहि कोकरेपरिहरैकोदूषएदंषि ॥ केहिदि
वानदिनदीनकोआदरुअनुरागविशेषि ॥ स्वगशवरापितु
मातुज्योमानेकपिकेकियेमित ॥ केवलभेल्योभरतज्योएसो-
कोकहोपतितपुनीत ॥ देइअभागेहिभागुकोकोरारखेशरण
सभीत ॥ वेदविदितविरुदावलीकविकोविंदगावतगीत ॥ कै
सोउपावपातकीजेहिलईनामकीओट ॥ गांठीवांध्योराम
सोपरिरख्योनफेरीखरखोट ॥ मनमलिनकलिकिलविषि
होतसुनतजासकृतकाजसोउतुलसीकीयोआपनोरघुवि
रगरिवनीवाज ॥ १९२ ॥ जौपेजानकीनाथसोनातौनेहन
तीचे ॥ स्वारथपरमारथकहाकलिकुटिलविगास्वोवीच ॥
धर्मवरणाआअमनिकेपैयेतपोथीहीपुराए ॥ करतववी-
नवेषदेषीएज्योशरीरविनप्राए ॥ वेदविदितसाधनसर्वे
सुनियतदायकफलचार ॥ रामप्रेमवीनजानीवोजेसेसर
सरिताविनचारि ॥ नानापथनिर्वाणकेनानाविधानबहु

भांति ॥ तुलसीतु मेरे कहे जपुराम नाम दिन राति ॥ १९३ ॥ अ
जहु आपने राम के करत वस सुऊत हित होई ॥ कहां तु कहां को
शल धनी तो को कहा कहत सब कोई ॥ रीजिनी वाज्यो कवही
तूंक वरि खिदई तो हि गारि ॥ दरपन वदन नीहारी के सुविचा
रुमान हिय हारी ॥ विगरी जन्म अने ककी सुधरत पल लगेन
आधु ॥ पाहि कृपानिधी प्रेम सो कहे कोन राम कियो साधु ॥
बालमोक के वट कथा कपी भील भालु सनमान ॥ सुनि सन सु
ख जो न राम सो तेहि को उपदे सहि ज्ञान ॥ का सेवा सुग्रिक की
का प्रीति निति निवाहु ॥ जा सुबंधु वध्यो व्याध ज्यो सो सुनत
सुहातन काहु ॥ भजन विभीषण को कहा फल कहा दियोर
दुराज ॥ राम गरिबने वाज के वडी बाह बोल कीलाज ॥ जपहि
ना सरधुनाथ को चरचान दू सरिचालु ॥ सुमुख सुख सुख वद सा-
हिव सुमी समरथ कृपालन तपालु ॥ सजल नयन गदगद
गिरा गहवरि मन पुलक शरीर ॥ गावत गुण गुण राम के के
हिकी नमिटी भवभीर ॥ प्रभु कृतज्ञ सर्वज्ञ हैं पाहि हर पा-
छीली गलानि ॥ तुलसी तो सो राम सो कछु नई न जानि प
हिचानि ॥ १९४ ॥ जो अतुराग न राम सने हि सो ॥ तौ ल-
ख्यो लाहु क हानर दे हि सो जो तनु धरि परि हरि सब सु
ख भए सुमति राम अनुरागी ॥ सो तनु पाइ अघाई किष
अघ अघ वगुण अधम अधभागी ॥ ज्ञान विराग योगज
पतपमरवजग सुदमगन हि थोरै ॥ राम प्रेम विनने मला
वजै सो मृगजल जलधि हलोरै ॥ लोक विलोकि पुरा एवे

रसुनिससुफिबुजिसुरुज्ञानी ॥ प्रीतीप्रतितीरामपदपंकजस
 कलसुमंगलरवानी ॥ आजहुंजानिजियहारिमानिहिएहोइ
 पलकुमहनीको ॥ सुमिरुसनेहसहितहीतरामहिमानमतोतु
 लसीको ॥ १९५ ॥ वलिजाउ होरामगोसाई ॥ कीजीयैरूपाच्या
 पनीनाई ॥ परमारथसरपुरस्वाधनसबस्वारथसरवरभ-
 लाई ॥ कलिसकोपलोपीसुचालीनिजकठिनकुचालिचलाई
 ॥ जहांजहंचित्तचितवतहिततहांनितनवविषादअधिका
 ई ॥ अचीभावतीभभरिभागहिससुहांहिअनितअनभा
 ई ॥ आधीमगनमनव्याधिविकलतनवचनमलिनजूठा
 ई ॥ एतेहुपरतुसहिसोतुलसीकीप्रसुसकलसनेहसगाई
 ॥ १९६ ॥ काहेकोफिरतमकरतबहुयत्नमितैनदुषविसुरवर-
 धुकुलवीर ॥ कीजैजोकोटिउपाईत्रिविधितापनजाइक-
 त्थौजोभुजउठाइसुनिवरकिर ॥ सहजदेवविसारीतुहीधौं
 देषीविचारिमोलैनमथतवारिघृतविनक्षीर ॥ ससुफितज
 हिपदयुगमसेवतसुगमगुणगहनगंभीर ॥ आगमनि-
 गमअथअःषीसुनिसरसंतसबईकोएकमंत्रसुनिमंति
 धीर ॥ तुलसीदासप्यासमरैपशुयद्यपिहैनिकटसरस
 रितीर ॥ १९७ ॥ नाहिनचरनरतिताहितेसहोंविपतिकह
 तश्रुतीसकलसुनिमतिधीर ॥ वसैजोशसीउछंगसुधा-
 स्वादितकुरंगताहिकीभ्रमनिरषिरविकानीर ॥ सुनीय-
 नानापुगणामीटतनहिअज्ञानपदियनससुफियजिमि
 खगकीर ॥ वरुतविनहिंपाससैवरसुमनआसकरतच

रततेइफलविनहीरकल्लुनसाधनसिधिजानौननिगमवि-
 धिनहिजपतपवसमन्नसमीर ॥ तुलसीदासभरोसप
 रमकरुणाकोशप्रभुहरिहैविषमभवभीर ॥ १९८ ॥ मनप
 छितेहैअवसरवीतेदुर्लभदेहपाईहरिपदभजकर्मवचन
 अरुहीते ॥ सहसबाहुदशवदनआदिनृपवचनकालव-
 लिते ॥ हमहमकरिधनधामधामसंवारेअंतचलेउविरी
 ते ॥ स्तवनितादिजानीस्वारथरतनकरुनेहसबहीते ॥
 अंतहुतोहितजहिगेपावरतूनतजहिअवहीते ॥ अवना
 थहिअनुरागुजागजडत्थागदुरासाजीते ॥ बुजेनकामअ
 नितुलसीकहुविषयभोगबहुधीते ॥ १९९ ॥ काहेकोंप्र
 रतमूढमनथायो ॥ तजीहरिचरणसरोजसुधारसरवि
 करजललयलायो ॥ त्रिजगदेवनअसरअपरजगयांनि
 सकलभमिआयो ॥ गृहवनितासुतबंधुभएवहुमातुपि
 ताजिन्हजायो ॥ जातेनिरयनिकायनिरंतरसोइनतीही
 सिखायो ॥ तवहितहोयकठहिभवबंधनसोमगतोनव
 तायो ॥ अजहुंविषयकहुंयत्नकरतयद्यपिवहुविधीडह
 कायो ॥ पावककामभोगघृततेसठकेसेंपरतबुजायो ॥
 विषयहिनदुखमिलेविपतीअतिसरखसपनेहुंनहिपा
 यो ॥ उभयप्रकारप्रेतपावकज्यौधनदुखप्रदश्रुतिगायो
 ॥ क्षिणक्षिणक्षीनहोतजीवनदुर्लभतनवृथागवांयो ॥
 ॥ तुलसीदासहरिभजहीआसतजिकालउरगजगवायो
 ॥ २०० ॥ तांवेसुपीढिमनहुतनपायो ॥ नीचभीचजानत

नसीसपरईशानिपटविषरायो ॥ अचनिरवनीधनधाम
 सुखदसुतकौनइन्हहिअपनायो ॥ काकेभएगसंगकाके
 सबसनेहलललायो जिन्हभूपन्हिजगजितिवाधियमअ-
 पनिवाहवसायो ॥ तेऊकालकलेउकीन्हैत्तगनतिफवआयो
 ॥ देखिवीचारिसारुकासांचोकहानीगमनिजगायो ॥ भ-
 जसीनअजहुंससुफितुलसीतेहिजेहिमहेशमनलायो ॥
 ॥ २०१ ॥ लासुकहामालुषतलुपाए ॥ कायवचनमनसपने
 हुंकवहुंकघटतनकाजपराए ॥ जोसुखसुरपुरनरकगेह
 वनआवतविनहिबुलाए ॥ तेहिसुरवकहुवहुयत्तकरत
 मनससुफतनहिससुजाए ॥ परदारापरदोहमोहवसकी
 एमूढमनभाए ॥ गर्भवासहुखरासीजातनातीब्रविप-
 तिविसराए ॥ भयनिद्रामैथुनअहारसवकेसमानजग
 जाए ॥ सुरदुर्लभतनधरिनभजैहरिमदअभिमानग-
 माए ॥ गईननिजपरबुद्धिसुद्धिक्करहेनरामलयलाय-
 ॥ तुलसीदासएहीअवसरवीतेकापुनिकेपछिताए ॥
 ॥ २०२ ॥ काजकहानरतनधरिसास्वौ ॥ परउपकारसार
 श्रुतिकोसोधोरवेहुंमैनविचास्वौ ॥ द्वैतमूलभयशूलशो
 कफलभवतरुटरैनटास्वौ ॥ रामभजनतीक्ष्णकुठार
 लैसोनहिकाटीनिवास्वौ ॥ संशयसिंधुनामवाहितभजु
 नीजआतमानतास्वौ ॥ जन्मअनेकविवेकहीनबहुयो
 निभ्रमतनहिहास्वौ ॥ देषिआनकीसहजसपदाद्वेषअ-
 नलमनजास्वौ ॥ समदमदयादीनपालनशीतलहिय-

हरिनसंभास्यौ ॥ प्रभुगुरुपितासरवारधुपतिमैमन क्रमं व
चनविसास्यौ ॥ तुलसीदासयहित्रासशरएराखहिजेहिगृ
हूउधास्यौ ॥ २०३ ॥ श्रीहरिगुरुपदकमलभजहुमनतजि-
अभिमान ॥ जेहिसेवतपाइयेहरिसुखनिधानभगवाना ॥
परिवाप्रथमप्रेमविनुरामभोलनअतिदूरिजघपिनीकट-
हृदयनिजरहेसकलभरिपूर ॥ दूर्दजिद्वैतमतिछाडिचर
हीमहिमंडलधीर ॥ विगतमोहमायामदहृदयसदारधु-
वीर ॥ तिजिजिगुणपरपरमपुरुषश्रीरमणमुकुंद ॥ गुण
सुभावल्यागेविनुदुर्लभपरमानंद ॥ चौथीचारिपरिहरहु
बुधीमनचितअहंकार ॥ विमलविचारपरपदनिजसुख
सहजउदार ॥ पांचहिपांचपरसरसशब्दगंधरसरूप ॥
इनकरकहानकीजियेबहुरिपरवभवकुप ॥ छटिषटवर्ग
करियजपजतकसुतापतिलागि ॥ रघुपतिकृपावारिविन
नहिबतायलोभागी ॥ सानेसप्रधातुनिर्मिततनकरियवि
चार ॥ तेहितनकेरएकफलकिजियपरउपकार ॥ आठइ
आठप्रकृतीपरनिर्विकारश्रीराम ॥ केहिप्रकारपाइयेहरि
हृदयवसहिबहुकाम ॥ नवमीनवद्वारपुरवसीजेहिनआ
पुमलकीन्ह ॥ तेनरयोनिअनेकभ्रमतदारुणदुखदीन ॥
दसईदसहुकरसंयमजोनकरियजियजानी ॥ साधनवृ-
थाहोहीसबमिलहिनसारंगपानि ॥ एकादशोएकमनव
सकैसेहुकरिमनजाई ॥ सोइवतकरफलपावैआवागवन
नसाई ॥ द्वादसीदानदेहुअसअभयहोईत्रैलोक ॥ परहि

तनिरतसोपारनवहुरिनव्यापेशोकतेरसितीनीअवस्थात्त
जहुभजहुभगवंत ॥ मनकंमवचनअगोचरव्यापकव्यापअ
नंत ॥ चौदसिचौदहभुवनअचरचररूपगोपाल ॥ भेदगण
विचुरघुपतिअति न हरहिजगजाल ॥ पुनिउप्रेमभक्तिर-
सजानहीदास ॥ समशीतलगतमानज्ञानरतिविषयउदास
॥ त्रिविधशूलहोलिचजारियखेलियअसफागुजौजियच
हसीपरमस्वरवतौएहीमारगलागु ॥ श्रुतिपुगाएवुधसंम
तचांचरीचरित्तसुरारीकरिचिचारभवतरियपरियनकवहु
जमधारि ॥ संशयशमनदमनदुरखस्वरवानधानहरिएक ॥
साधुक्लपाविनमिलहिनकरियउपायअनेक ॥ भवसागरक
हुंनावशुद्धसंतनकेचर्ण ॥ तुलसीदासप्रयासविनमिलहि
रामदुरवहर्ण ॥ २०४ ॥ रागकान्हारा ॥ जौमनलागौरामचरण
अस ॥ देहगेहस्वतवित्तकलत्रमहुंमगनहोतविनयलकिय
जस ॥ इंद्ररहितगतमानज्ञानरतविषयधिरतरवदाईनाना
कसस्वनिधानस्वजानकोशलपतिव्हेप्रसन्नकहुक्यौन
होंहिवस ॥ सर्वभूतहितनिर्व्यलीकचीतभक्तिप्रेमदृढनेमए
करस्तुलसिदास ॥ यहहोइतवहीजवद्रवैईशजिहिंहते-
सीसदश ॥ २०५ ॥ ज्यौमनभज्यौचहैहरिसुरतरु ॥ तोतजि
विषयविकारसारभजिअजहुंतेजौमैकहौसोइकरु ॥ सम-
संतोषविचारिविमलअतिसतसंगतीएचारिदृढकरिधरु
॥ कामक्रोधअरुलोभमोहमदरागद्वेषविशेषकरिपरि-
हरु ॥ श्रवनकथासुखनामहृदयहरिसिरप्रणामसेवाक

रिच्यनुसरु ॥ नेननीरखिक्कपासमुद्रहरिच्यगजगरूपभूप
सीतावरु ॥ यहैभक्तिवैराग्यज्ञानयह हरितोषनयहसुभ
व्रतआचरु ॥ तुलसिदासशिवमतमारगएहिचलतसदा
सपनेहुनाहिनडरु ॥ २०६ ॥ नाहिनओरकोउशरएला-
यकदूजौश्रीरघुपतिसमविपतिनीवारए ॥ काकोसहज
सुभाउसेवकवसकाहिप्रएतपरप्रीतिअकारए ॥ जन
गुएअलपगएतसुमेरुकरिअवगुएकोदिविलोकीवि-
सारए ॥ परमकपालभक्तिचिंतामणिविरदपुनितपतितज
नतारए ॥ सुमीरतसुलभदासदुरवसुनीहरिचलतचुर
तपटपीतसंभारए ॥ साखिपुराएनिगमआगमसब
जानतहुपदसुताअरुवारए ॥ जाकोयशनिर्मलगावत
कविकोविदजिन्हकेलोभमोहमदमारए ॥ तुलसीदास
सतजिआससकलभजिकोशलपतिसुनिवधुउधारए
॥ २०७ ॥ भजिवेलायकसरवदायकरघुनायकसरिससर-
एप्रभुदुजोनाहिन ॥ आनंदभवनदुखदवनशोकशम-
नरमारमएगुएगएतसिराहिन ॥ आरतिअधमकु
जातिकुटिलखलपतितसमीतकहूंजेसमाहिन ॥ सुमी
रतनामविवसहूंवारएकपावतसोपदजहांसरजाहिन ॥
जाकेपदकमलुब्धसुनीमधुकरविरतिजेपरमसगति
हुलुभाईन ॥ तुलसीदाससठतेहिनभजहिकसकारु-
णीकजोअनाथहिदाहिन ॥ २०८ ॥ रागकल्याण ॥ ना
थसौकोनविनतिकहिसुनावी ॥ त्रिविधअनमालित-

अवलोकित्प्रथमप्राप्तोशरणसनसुरबहोतसकुचिसिरना
 वों ॥ विरंचिहरिभक्तिकीवेरववरवाटिकाकपटदलहरित
 पल्लवनिरविखावों ॥ नासलगिलाइलालसाललितवचन-
 कहिव्याधज्यौंविषयविहंगनिवजावो ॥ कुटिलसतकोटिमे
 रेयोमपरिवारियहिसाधुगनतीमेपहिलहिगनावों ॥ प-
 र्मवर्वरस्वर्गगर्वपर्वतचढ्यौ अज्ञसर्वज्ञजनिमनिजना
 वों ॥ सांचकिधोंफूठमोकोकहतकोऊकोउरामरावरोहों
 हुंतुह्मरोइजनकहावों ॥ विरुदकिलाजकरिदासतुलसी
 हीदेवलेहुअपनाइअवदेहुजिनिवावों ॥ २०९ ॥ नाहिने
 नाथअवलंबमोहिआनकी ॥ कर्ममनवचनप्रणसत्य
 करणानीधेएकगतिरामभवदीयपदत्राणकी ॥ कोहम
 दमोहममताथतनजानिमनवातनहिजातिकहिज्ञान-
 विज्ञानकी ॥ कामसंकल्पउरनिरखिवहुचासनहिआ
 सनहिएकहिआकनीर्वाणकी ॥ वेदविधितकर्मधर्मवि
 नअगमअतिजदपिजियलालसाअमरपुरजानकी-
 ॥ सिद्धसुरमनुजदनुजादिसेवतकठिनद्रवहिहठयो
 गदिएभोगवलिप्राणकी ॥ भक्तिदुर्लभपर्मशंभुशुक-
 सुनिमधुपव्यासपदकंजमकरंदमधुपानकी ॥ पतित
 पावनरुनरुनामविश्रामरुतभ्रमितपुनिससुजिचि
 तग्रंथिअभिमानकीनरकअधिकारममघोरसंसा
 रतमकूपकहिभूपमैशक्तिआपानकी ॥ दासतुलसी
 सोउत्रासनहीगमतमनरुमिपियुहृगृहृगजजातिह

नुमानकी ॥ २९० ॥ और कहा ठौर रघुवंशमनि मेरे ॥ पतित पा
वन प्रणत पाल अशरणा वांकु रे वीर दविर दैत के हिकरे ॥ म
सुजिजिय दोष अतिरोष करि राम के करत नहिकान वीन-
ती वदन फेरे ॥ तदपि द्वैने डर हों क हो करुणा सिंधु क्यौ वर
हिजात सूनी वात विन हेरे ॥ मुख्य रुचि होतु वसि वे को पुर
राउरे ॥ राम तिहि रुचि हिकामा दिग ए घोरै ॥ अगम अपव
र्ग अरु स्वर्ग सुकृतै के फलना मवल क्यौ वसोय मन गरनेरे
॥ कत हुं नहि वाउं के हां जाउं को शल नाथ दीन वितु हि हो विक
ल वितु डे रे ॥ दास तुलसी हि वा सुदेही अव करि कृपा वस
त गज गृह व्याधादि जे हि स्वेरे ॥ २९१ ॥ कवहुं रघुवंशम-
णिसोउ कृपा करहु गे ॥ जे हि कृपा व्याध गज विप्र रवल तर
तरेति नहि सममानितो हि नाथ उद्धरहु गे ॥ योनि बहु जन्म
किय कर्म रवल त्रिविधी विधि अधम आचर ए कछु तद
ए नहि धरहु गे ॥ दीन हित अजित सर्वज्ञ समरथ प्रणत
पाल चित मृदुल निज गुणनि अनसरहु गे ॥ मोहमदमान
कामादिरवल मंडलिस कूल निर्मूल करि दुसहदुरवहरहु-
गे ॥ योगजपज्ञान विज्ञान ते अधिक अति अमल हृदभक्ति
दैपर्म सरव भरहु गे ॥ मंदजन मौलि मणिस कलसाधन हि
नकुटिल मनमलिन जिय जानि जो डरहु गे ॥ दास तुलसी
वेद विदित विरुदावलि विमलय शनाथ के हि भांति विस्त
रहु गे ॥ २९२ ॥ राग कदारा ॥ रघुपति विपति दवन ॥ पर
महपाल प्रणत प्रतिपाल कपति तपवन ॥ कुरकूटी लकु

लहिनदिनअतिमलिनयमन ॥ सुमिरतरामनामपठएसव-
 व्यापनेभवन ॥ गजपिंगलाअजामिलसेरगलगनेधौकवन ॥
 तुलसीदासप्रभुकेहिनदीनगतिजानकीरवन ॥ २१३ ॥ हरि
 समआपदाहरन ॥ नहिकोरुसहजकृपालदुसहदुरवसा
 गरतरण ॥ गजनिजवलअवलोकिकमलपदगल्यौजोशा
 रण ॥ दीनवचनसुनिचलेगरुडतजिसुनाभधरण ॥ दुप
 दसुताकहुलग्योदुसासननगनकरण ॥ हाहरिपाहिकह
 तपूरेपटविविधीवरण ॥ इहैजानिसुनरसुनिकोविदसे
 वतचरण ॥ तुलसीदासप्रभुकोनअभयकियोगजउद्धरण
 ॥ २१४ ॥ ऐसीकोनप्रभुकीरीति ॥ विरुदहेतुपुनीतपरिहरि
 पांवरनीपरप्रीति ॥ गइमारनपूतनाकूचकालकूटलगार्
 ॥ मातुकिगतिदर्इताहूकृपालयादवराइ ॥ काममोहितगो-
 पिकनिपरकृपाअतुलितकीन ॥ जगतपिताविरंचिजीन्ह
 केचरणकीरजलीन ॥ नेमतेसिसुपालदिनअतिदेतगानि
 गारि ॥ कियोलिनसोआपुमैहरिराजसनामजारी ॥ व्या-
 धचितदैचरणमास्वौमूढमतिमृगजानि ॥ सोसंदेहसुलो
 कपठयौप्रगटकरीनिजवानि ॥ कोनतीन्हकिकहैजिन्हके
 सुकृतअधअरुदोई ॥ प्रगटपातकरूपतुलसीशरणरा-
 रव्योसोई ॥ २१५ ॥ श्रीरघुविरकीयहवानी ॥ नीचहुंसोक
 रतनेहसुप्रीतीमनअनुमानि ॥ पर्मअधमनिखादपांव
 रकोनताकिकानी ॥ लियोसोउरलाईसुतज्यौप्रेमकिप-
 हिचानि ॥ गृहकोनदयालजोविधिरच्यौहिंसासानि ॥

जनकज्यौरधुनायकताकहुं दियौ जलनिजपानि ॥ प्रकृत
मलिनकुजानिशवरी सकल अवरगुणारवानि ॥ खातताके
दियफल अतिरुचिबरवानिबरवानी ॥ रजनीचर अरु रि
पुविभीषणशरण आयेजानि ॥ भरतज्यौ उदिताहि भेदतदे
हृदसाभुलानि ॥ कौनसौम्यसुशीलवानर जिन्हहि सुमिर
तहानि ॥ किएतेसबसखापूजेभूवनअपनेहानि ॥ राम
सहजकृपालकोमलदिनहितदिनदानी ॥ भजहिंऐसेप्र-
भुहितुलसीकुटिलकपटनवानि ॥ २१६ ॥ हरितजिअौरभ
जियकाहि ॥ नाहिनेकोउरामसौममताप्रएतपरजाहि ॥
कनककसिपुविरंचिकोजनकर्ममनअरुवात ॥ सुतहिदुख
वतविधीनवरज्यौकालकेघरजात ॥ शंभुसेवकजानजग
बहूवारदिएदशसीस ॥ करतरामविरोधसोसपनेहुंनह
टक्योईश ॥ अौरदेवनकीकहौं कहांस्वारथहिकेमीतकव
हुकाहुनराखिलियकोउगएसरणसभीति ॥ कौनसेवत
देतसंपतिलोकहुंयहरीति ॥ दासतुलसीदीनपरएकरा-
महिकेप्रीति ॥ २१७ ॥ जौपैदुसरोकोउहोई ॥ तोहोंवारहि
वारप्रभुकतदुखसुनावोंरीई ॥ काहिममतादीनपरका-
कौपतितपावननाम ॥ पापमूलअजामिलहिकेहिदियौ
अपनौधाम ॥ रहेशंभुविरंचिसुखरपतिलोकपालअपने
क ॥ शोकसरिबूडतकरिसहिदईकाहुनटेक ॥ विपुल-
भूपतिसदसीमहुंनरनारीकल्यौप्रभुपाहि ॥ सकलसम
रथरहुकाहुनवसनदिन्हैताहि ॥ एकसुखक्योकहोक-

रूपासिंधुकेगुणगाथा॥ भक्तहितधरिदेहकहानकीयोकोश
 लनाथ॥ आपुसेकहिसोपियेमोहिजोपेअतिहिधिनात॥
 दासतुलसिओरविधक्मोचरणपरहरिजात॥ २१८॥ कव
 हुदेरवाईहोहरिचरण॥ शमनश कलकलेशकलमलस
 कलमंगलकरण॥ सरदभवसंदरतरुएतरअरुएवारि
 जवरुए॥ लछीलालितललितकरतलछविअनूपमधर
 ए॥ गंगजनकअनंगअरिप्रियकपदवदुवल्लिछरए॥ वि
 प्रतियनृगवधिककेदुखदोरवदारुएदरसा॥ सिद्धसरसु
 निहंदवदितसरवदसवकहुशरण॥ सकतउरअनत
 जिन्हहिजनहोततारणतरण॥ कृपासिंधुसुजानरघुप
 तिप्रएतिआरनिहरण॥ दरसआसपियासतुलसिदास
 चाहतमरण॥ २१९॥ द्वारहोभोरहिकोआजु॥ रतनिहा
 रारीओरकौरहिकोकाजु॥ कलिकरालदुकालदारुएस
 बकुभांतिकुसाजु॥ नीचजनमनऊंचजैसिकोटमेंकीरवाजु
 ॥ हहरिहियमेंसदयबूज्योजाइसाधुसमाजु॥ उहकल्होसु
 मुजाईमोकहुजाजुकोशलराजु॥ दीनतादारिदलैको
 कृपावारिधिवाजु॥ दानिदशरथरायकोतुवानइतसिर
 ताजु॥ जन्मकोभूकेगरिबहोतुगरिबनिवाजु॥ पैठभरि
 तुलसिहिजिवाइयभक्तिसुधासुनाजु॥ २२०॥ करिय
 संभारकोशलराथ॥ ओरदौरनओरगतिअवलंबना
 मविहाथ॥ बूजिअपनिआपनोहितुआपवापनमा
 थ॥ रामरावरोनामगुरुसरस्वामिसखासहाथ॥ रा

मराजनचलिहिमानसमलिनकेछलछाय॥कोपतेहिकलि
 कालकायरमुएहिघालतधायलेतकेहरिसौंवयरुज्योभेकह
 तिगोमाय॥स्यौंहिरामगुलामजानिनिकामदेतकुदाय॥
 अकनिजाकेकपटकरतवअमितअनयअपाय॥सरिवहरि
 पुरुवसतहोतपरिक्षितहिपछिताए॥कृपासिंधुविलोकिअ
 हिजनमनकेसांसातिसाय॥सरनआयेदेवदिनदयालदेख
 नपाए॥निकटवोलिनवरजिएवलिजाऊंहनिहनहाय॥देखि
 हेहतुमानगोसुखनाहारनिकेल्याय॥अरुणसुखभूविकट
 पिंगलनेनरोखकरवाय॥वीरसुमोरीसमीरकोघटिहैच-
 पलचितचाय॥विनयसुनिवीहसेआतुजसौंवचनकेकहि
 भाय॥भलोकहिकद्वौलखनहुहुंसिवनेसकलवनाय॥दइ
 दीनहीदादिसोसुनिसुजनसदनवधाए॥मीटेसंकटसोच
 पोचप्रपंचपापनिकाय॥येखिप्रीतीप्रतीतिजनपरअगुन
 अन्नवअमाय॥दासतुलसीकहतसुनिगनजयतिजयउ
 रगाय॥२२१॥नाथरूपाहीकौंपंचचितवतदीनहोंदिनरा-
 ति॥होहिधौंकेहिकालदीनदयालजानिनजति॥सगएज्ञा
 नविरागभक्तिसुसाधननकीपांति॥भजीविकलविलोकि
 कालिअथअवगुणनिकीथाति॥अतिअनीतीकुरितिभ
 ईभूंइतरएिहूंतेंताति॥जाउंकहावलिजाउंकहूंनवांसम-
 तिअकुलाति॥आपुसहितनआपनौंकोउवापकठिनकु
 भांति॥स्यामघनसौंचियतुलसीसालिसफलकरवाति
 ॥२२२॥बलिजाउंओरकासोकहौं॥सदगुणसिंधुस्वामी

सेवकहितकहुं नरूपानिधिसोलहौ ॥ जहंजहंनो भमोदला
 लालचवसनिजहितचहनिचहौ ॥ तहंतहंतरणितकतउ
 लूकज्यो भवकिकुत रुकोटरगहोका लसुभाववर्मयिचित्रफ
 लदायकसुनिसिरधुनिरहौ ॥ मोकोनों सकलसदा एकदि
 रसदुसहदाहदा रुएदहौ ॥ उचितअनाथहोइदुरवभाज
 नमयोनाथकिंकरएहौ ॥ अचराचरोकहायनउक्रियश
 रएपालसासतिसहौ ॥ सहाराजराजीवविलोचनमगन
 धायसंतापहौ ॥ तुलसीप्रभुजवतवजेहितंहिविधिरामनि
 वाहेनिरवहौ ॥ २२३ ॥ आपनोकवहुकरिजानिहौ ॥ राम
 गरीबजीवाजराजमणिविरुदलाजउरआनिहौ ॥ सिल
 सिंधुसुंदरसबलायकरसमरथसदसुएस्वानिहौ ॥ पालो
 हैपालतपुनियालहुगेप्रएतप्रंमपहिचानिहौ ॥ वेदपुराण
 कहतजगजानतदानदयालदिनदानिहौ ॥ कहिआवतय
 लिजाउमनहूंमेरिवारविसारेवानिहौ ॥ आरतदीनअनाथ
 निकेहितमानतलोकिंककानिहौ ॥ हैपरिणामभलोतुलसी
 कोशरएागतमयभानिहौ ॥ २२४ ॥ रघुवरहिकवहुमन
 लागिहौ ॥ कुपथीकुचालिकुमातिकुमनोरथकुतिलकपट
 कवत्यागिहौ ॥ जानतगरलअमियविमोहवसअमिय
 गनतकरिआरिहो ॥ उलठिरितिपीतीअपनिफीतजिप्र
 सुपदअनुरागिहौ ॥ आरवरअर्थमंजुमृदुमोदकरामप्रे
 मपगपागिहौ ॥ ऐसेगुणगाइरिजाइस्वामिसोंपाइहैंजो
 सुहमागिहौ ॥ तूएहिविधिस्वरवमैनसोइहैजियकिजर-

निभूरिभागिहै ॥ रामप्रसाददासतुलसीउररामभक्तियो-
 गजागिहै ॥ २२५ ॥ भरोसो और आइहो उरताके ॥ कैकहुंल
 है जो रामहि सो साहिबके आपनो है वलजाके ॥ कैकलिका-
 लकरालनसूऊत मोहमारमदछाके ॥ कैकनिस्वामिस्वभा-
 वुरल्योचितजोहितसबअंगथाके ॥ होंजानतभलिभांति
 अपनपोप्रभूजूसोसुन्यो नसाके ॥ उपलभीलखगसृगरज
 निचरभलेभयकरतवकाके ॥ मोकौंभयो रामनामसरतरसो
 उरामप्रसादकृपालकृपाके ॥ तुलसीस्वखिनीसोचराजज्यो-
 बालकमायववाके ॥ २२६ ॥ भरोसोजाहिदूसरोसोकरो ॥ मो-
 कौं तो रामको नामकल्पतरुकलीकल्याणफरो ॥ कर्मउपासना
 ज्ञानवेदमतसबसबभांतिषरो ॥ मोहितोसावनकेअंधहि-
 जोसूऊतरंगहरो ॥ चावतहोपातरिस्वानज्यो कवहुंनपेट
 भरो ॥ सोहोस्वामिरतनामस्वधारसपेरवतपरुसिधरो ॥
 स्वारथओपरमारथहूंकौहैकुंजरोनरो ॥ स्वनियतसेतु-
 पयोधीपषाणिकरि कपिकटकतरौ ॥ प्रीतिप्रनोतिजहां
 जांकीतहताकोकाजुसरो ॥ मेरेमायबापदोउआखरहो-
 शिशुअरनिअरो ॥ शंकरसाखिजोरारिखकहांकछुतोजरि
 जोभगरो ॥ अपनोभलो रामनामहितेतुलसीहीससुफिप-
 रो ॥ २२७ ॥ नामरामसबरोहितुमरे ॥ स्वारथपरमारथसा-
 धिनसोहांभुजउठार्दकटोंदरे ॥ जननिजनकतज्यो जन्मी
 कर्मविनुविधीहूसृज्योहोअवडरे ॥ मोहूसेकोउकोउकह
 तदामहिकोसोप्रसंगकेहिकेरे ॥ फिन्यो ललातविनुनाम

उदरलगितुरवउदूरितमोहिहरे ॥ नामप्रसादलहतरसा
लफलअवहोवहूरवहरे ॥ साधनसाधुलोकपरलोकहिस्सनि
गुनियत्नघनेरे ॥ तुलसीकेअवलंबनामहिकीएकगांविकी
दिफेरे ॥ २२८ ॥ प्रियनरामनामतेजाहिरामो ॥ ताकोभलोक
दिनकलिकालहुआदिमध्यपरिणामो ॥ सकुचतसमुजि-
नामसहिमामदमोहलोभकोहकामो ॥ रामनामजपनिरत
सजनपरकरतछांहधोरधामो ॥ नामप्रभावसहिजोकहो
कोउसिलासरोरुहजामो ॥ जोसुनिसुमिरिभागभाजन
भईसुकृतसीलभीलभामो ॥ बालमिकअजामिलकेकछु-
हुतोशुभसाधनसामो ॥ उलटेपलटेनाममहातमगुंजनिजी
तेललामो ॥ रामतेअधिकनामकरतवजेहिकीएनगरग-
तगामो ॥ भवजाइदाहिनेजोजपितुलसीदासहुंसेवामो ॥
॥ २२९ ॥ गरैगिजिहजोकहो औरकोहोकोहो ॥ जानकी-
जीवनजन्मजन्मजगजगयोतिहारेहिकोरकोहो ॥ तीन
लोकतिहूकालनदेखतसकलदरावरेजोरकोहो ॥ तुम्ह-
सोकपदकारिकल्पकल्पकमिक्हेहो नरकपोरकोहो ॥ कह
भयोज्योमनमलिनकलिकालहिकीयोभोतुवाभोरकोहो
॥ तुलसीदाससितलनितिहिवलकडेठिकानेदोरकोहो ॥ २३० ॥ अ
प्रारणकोहितूऔरकोहो ॥ विरुदगरिबनेवाजकोनकोभोहूजासुज
नजोहो ॥ छोटीबडांचहतसबस्वारथजोविरंचिविरचोहो ॥ कोलकु
टिलकपिभालुपालिवोकोनवृपालहिसोहो ॥ काकोनामअनषआ
लसकहो ॥ अघअवगुणनिविछोहो ॥ कोतुलसीसौकुसेवकसगृखौ

सठसबदिनसाईबोहो ॥२३१॥ औरमेरेकोहैकाहिकहिहो ॥
रंकराजज्योमनकोमनोरथजेहिसुनाईसरवलहिहो ॥ य-
मयातनायोनीसंकटसबसहेहैदुसहअरुसहिहो ॥ मोको
पैअगमसुगमतुहकोप्रभुतउफलचारिनचहिहो ॥ खे-
लिवेकोखगमृगतककिंकरकैरावरोरामहोरहिहो ॥ एहि
नातेनरकहुसचुपैहोयाविनपर्मपदहुदुखदहिहो ॥ इत
निजीयलालसादासकेकहतपानहिगहिहो ॥ दिजेवचन
कीहृदयआनिएतुलसीकोप्रएनिरवहिहो ॥२३२॥ दीन
बंधुदूसरोकाहापावों ॥ कोतुमविलुपरपिरपाईहैकेहिदी
नतासुनावों ॥ प्रभुअरुपालकपालअलाएकजहंजहं
चितहिडुलावों ॥ इहैससुफिसुनिरहोंमोनहैकेहिभकहां
गवावों ॥ तोपदबुडिवेयोगकर्मकरिवातहिजलधियहावों
॥ अतिलालचिकामकिंकरमनसुखरावरोकहावों ॥ तुल-
सीप्रभुजियेकिजानतसबअपनोसोकहुकजनावों ॥ सो
इकीजेजेहिभांतिछाडिछलद्वारपरीगुएगावों ॥२३३॥
मनोरथमनकोएकेभांति ॥ चाहतसुनिमनअगमसुकृत
फलमनसाअघनअघाति ॥ कर्मभूमिकलिजन्मकुसंघ
टमतिविमोहभदभांति ॥ करतकुयोगकोटिक्योपैथतप-
रमारथपथसांति ॥ सेइसाधुगुरुसुनिपुराएअतिबुजे
उरागवाजीतांति ॥ तुलसीप्रभुसुभाउसरतरुकोसोज्यो
दरपनसुखकांति ॥२३४॥ जन्मगवायोवादिहिवरविति ॥
परमारथपालेनेपस्वोकहुअनुदिनअधीकअनिती ॥

खेलतरवातलरिकपवनयुवतिलियोजोति ॥रोगवियोगशो
 कथमसंकुलवडीवयवृथाहिअनिती ॥रागरोषदरखाकि-
 मोहवससचिनहिसाधुसभीति ॥कहेनकनेगुणगणरशु
 पतिकेभईनरामपदप्रीति ॥हृदयदहतपळिताएअनल
 इवसुनतहुसहभवभीति ॥तुलसिप्रभुतेहोइसोकिजियेस
 मुफिविरुदकीरीती ॥२३५॥ ऐसेहिजन्मससुहसिराने ॥
 प्राणनाथरघुनाथसेप्रभुतजिसेवतचरनविराने ॥जेज
 डजिवकुटिलकायरखलखेवलकलिमलसाने ॥सूखत
 वदनप्रसंशततिन्हकहंहरितेअधिककरिमाने ॥सरव-
 हितकोटिउपायनिरंतरकरतनपायपिरोने ॥सदामलिन
 पंथकेजलज्यौकवहुनहृदयथिराने ॥यहदिनतादुरिवेको
 मैअमितयत्नउरआने ॥तुलसीचितचिंतानमिटेविनविं
 तामणिपहिचाने ॥२३६॥ जौपैजियजानकीनाथनजाने
 ॥तौसबकर्मधमअमदायकऐसोइकहतसयाने ॥हैसर
 सिद्धसुनीशयोगविदवेदपुराणबरवाने ॥पूजालेतदेतप
 लटेसरवहानीलामअनुमाने ॥काकोनामधोरखेहुसुमि
 रतपातकपुंजसिसने ॥विप्रविधिकगजगृद्धकोटिखल
 कौनकेपेटसमाने ॥मेरुषेदोषदूरिकरिजनकरेणुसेगुण
 उरआने ॥तुलसीदासतेहिसकलआसतजिभजहिंन
 अजहुंअयेने ॥२३७॥ काहेनरसनारामहिगावहि ॥
 निशिदिनपरअपवादवृथाकतरटिरटिरागुवटावहि
 ॥नरमुखसुंदरसंदिरपावनवसीजिनिनाहिलजाव-

हि ॥ ससिसमीपरहित्यागिस्रधाकतरविकरजलकहुंधावहि
 ॥ कामकथाकलिकैरवचंदिनीस्नतश्रवनदेभावहि ॥ तिन्ह
 होहटकीकहिहरिकलकिरतीकरएकलंकनसावहि ॥ जा
 तरूपमतिशुवतिरुचिरमणिरविरचिहारवनावहि ॥ शर
 एस्वरवदरबिकुलसरोजरविरामचपहिपहिरावहि ॥ वाद
 विवादरवादतजिभजिहरिसरलचरितचितलावहि ॥ तु-
 लसीदासभवतरिहितिहुंपुरतुंपुनीतयशगावहि ॥ २३८ ॥
 आपनोहितरावरेसोजोपैसूजे ॥ तौजनतनपरअछतसी-
 ससुधीक्योक्वंधज्योजूजे ॥ निजअवगुणगुणरामरावरे
 लखिसनमतिमनमूजे ॥ रहनिकहनिससुफनितुलसी-
 कीकोहप्रालबीनवूजे ॥ २३९ ॥ जाकोहरिदृढकरिअंगक-
 स्वो ॥ सोइवसूसीलपुनितवेदविदविद्यागुणनिभस्वो ॥ उ
 त्यतिपंडुसूतनकीकरनीसूतिसतपंथडस्वो ॥ तेत्रैलोक्य
 पूज्यपावनयशसूनीसूनीलोकतस्वो ॥ जोनिजधर्मवेदबो
 धितसोकरतनकालुविसस्वो ॥ विनअवगुणकृतकला
 सकूपमज्जनकरगहिउधस्वो ॥ ब्रह्मविशिब्रह्मांडदहन
 क्षमगर्भननृपतिजस्वो ॥ अजरअमरकुलिसहुनाहिन
 वधसोपुनीपेनमस्वो ॥ विप्रअजामिलअरुसरपतितेक
 हाजोनहिविस्वो ॥ उन्हकोकियोसहायबहुतउरकोसंता
 पहस्वो ॥ गणिकाअतिकदर्जतेजगमहुअघनकरतउ
 वस्वो ॥ तीनकोचरितपवित्रजानीहरिनिजदभवनध
 स्वो ॥ केहिआचरनभलोमानेप्रसुसोतोनजानिपस्वो

॥तुलसीदासरघुनाथरूपकौचित्तवतपंथरस्यस्यौ॥२१०॥
 सोइसुकृतीसुचिसांचोजार्इतुमरिजे॥ गणिकागिधनधि
 कहरिपुरगएलैकरसीप्रयागकवसीजे॥ कवहुनडिग्यो-
 निगममगतेपगनृगजगजानिजितेदुरवपाए॥ गजधौ
 कौनदीक्षितजाकेसमीरतलैसुनाभवाहनतजिधाए॥
 सरसुनिविप्रविहाइवडेकुलगोकुलजन्मगोपगृहखिन्धो
 ॥वावोंदियोविभोकुपरतीकोभोजनजाइविदुरघरकि-
 न्हो॥मानतभलैहिभलोभक्तहितेकल्लुकरितिपारथहि
 जनाई॥ तुलसीसहजसनेहरामवसत्रौरसवैजलके
 सीचिकनाई॥२४१॥ तवतुम्हमोहुसेसदनिहविगतिदे
 ते॥कैसेहुनामलेतकोउपावरसुनिसादरआगेहैलेते॥
 पापरवानिजियजानीअजामिलयमगएतमकीतइहोतके
 भेते॥लियछडाइचलेकरमीजतपिसतदांतगएरीस
 रते॥गौतमतियगजगृह्विटपकपिहैनाथहिनीकेमा
 निमतेते॥जिन्हजिन्हकाजनिसाधुसमाजतजिकृपासिं
 धुतवतवउदिगेते॥अजहुअधिकआदरएहिद्वारेपति
 तपुनितहोतनहिकेते॥मेरेपासंगहूनपूजिहैकैगयहै
 होनेखलजेते॥हौअवलवकरतूतितिहोरिवेचीनवत
 हुतोनरावरेचेते॥अबतुलसीपुतरावाधिहैसहिनजा
 तमोपैपरिहसएते॥२४२॥ तुमसमदिनबंधुनदीनकोउ
 मोसमसूनहूनृपतिरघुनाई॥मोसमकुटिलमोलिमणिन
 हीजगतुम्हसमहरिनहरनकुटिलाई॥होमनवचनकर्म

पातकरततुम्हृष्टपालपतितन्निगतोदाई ॥ होअनाथतुम्हृष्ट
 भुअनाथहीतचित्तयहसरतिकेवहुनजाई ॥ होअरत-
 अरतिनासनतुम्हृष्टिरतिनोगमपुराननिगाई ॥ होसभी
 मतुम्हृष्टहरणसकलभयकारणकोनहुपाविसराई ॥ तुम्हृष्ट
 सरवधामरामअमभंजनहोअतिदुखितत्रिविधीअमपाई
 ॥ यपहजियजानिदासतुलसीकहुशरवहुशरणसमुजिअ
 भुताई ॥ २४३ ॥ इहैजानिचरणनिचितलायौ ॥ नाहिन-
 नाथअकारणकोहिततुम्हृष्टमानपुराणअतिगायौ ॥ ज
 ननीजनकसतदारबंधुजनभयहैवहुतजहांहोजायौ ॥ स
 बस्वारथहितप्रीतिकपटचित्तकाहुतो नहिहरिभजनसि
 खायौ ॥ सरसुनिमतुजदनुजअहिबीन्नरमैतनधरिसि
 स्काहिननायौ ॥ जरतफिरतत्रैतापपापवसकहुनहरि-
 करिरूपाजुडायौ ॥ यत्तअनेककिएसरवकारणहरि
 पदविसुरवसदादुरवपायौ ॥ अवथाक्यौजलहीननाव
 ज्यौदैरवतविपतिजालजगल्लायौ ॥ मोकहुनाथबुजिएयह
 गतिसरवविधाननोजपतिविसरायौ ॥ अवतजिरोषक
 रहुकरुनाहरितुलसीदासरनागतआयौ ॥ २४४ ॥ या
 हित्तैमेंहरिज्ञानगंवांयौ ॥ परिहरित्दयकमलरघुना
 थहिवाहिरफिरतविकलभयधायौ ॥ ज्यौकुरंगनिजअ
 गरुचिरमदअतिमतिहीनमरमनहिपायौ ॥ रवोज
 तगिरितरुलताभूमिवीलपर्मस्रगंधकहांतेधोआ-
 यौ ॥ ज्यौसरविमलवारिपरिपूरणउपरकलूसिवार

तृसलायो ॥ जारतहियो ताहित जिहो सठचाहत इहिविधित्
 स्वाबुजायो ॥ व्यापतत्रिविधीतापतनदारुणतापरहुसहद
 रिद्रसतायो ॥ अपनेहिधामनामसरतरुतजिनिसवयवपुर
 वागमनलायो ॥ तुमसमज्ञाननिधानमोहिसममूढनआण
 पुणनिगायो ॥ तुलसीदासप्रभुएहविचारिजियकीजिय-
 नाथउचित्तमनमायो ॥ २४५ ॥ मोहिमूढमनवहृतविगोयो
 ॥ याकेलिएसुनहूकरुणा मयमैजगजन्मिजन्मदुरवुरोयो
 ॥ शीतलमधुरपियूरवसहजसरवनिफटहिर हतदुरिज
 नूरखोयो ॥ बहूभांतिनअमकरतमांहवसवृथहिमंदमति
 वारिविलोयो ॥ कर्मकिचजियजानिसानिचितचाहतकु-
 टिलमलहिमलधोयो ॥ तृषावंतरसरसरिपिहाइसठफि
 रिफिरिविकलअकासनिचोयो ॥ तुलसिदासप्रभुकृपा-
 करहुअवमैनिजदोसकळुनहिगांयो ॥ असतहिगइवीति
 नीसासवकहुननाथनोदभरिसोयो ॥ २४६ ॥ लोकविदहं
 विदितवातसुनिससुजियैहांहमोहितविकलमतिथितिन
 लहति ॥ छोटेबडेरवोटेखरेमोटेउदूवरेरामरावरेनिवाहं-
 सबहिकिनिवहति ॥ होतेजोआपनेवसरहतोएकहीरस
 दूनिनहरखशोकसासतिसहति ॥ चहतोजोईजोईलह-
 तोसोईसोईकेहुभांतिकाहूकिनलालसारहति ॥ कर्मकाल
 सभावगुणदोषजीवनजगमायातेसोसभैमोहचकितच
 हति ॥ ईशनिदीगीशानियोगीशनीसुनीशनीहुंछोडतछो
 डाएतेगहायेतेंगहति ॥ सतरंजकौसौसाजकाटकौस-
 वैसमाचुमहाराजवाजीरचीप्रथमनलहति ॥ तुलसी

प्रभुकेहाथहारिवोजीतिवोनाथबहुभेखबहुसुखसारदा
 कहति॥२४७॥रामरामजपुजीहजानिपीतिसोप्रतितीमा
 निरामनामजपैजैहैजियकीजरमि॥रामनामसोरहनिरा
 मनामकीकहनि कुलिकलिमलशोकसंकटहरनि॥रामना
 मकोप्रभावपूजियतगणराउकियौनदुराउकहिआपनि
 करनि॥भवसागरकोसेतुकाशीहुसगतीजेसुजपतसा
 दरशंभुसहितधरनी॥वालमिकव्याधहैअगांधअप
 राधनिधिमरामराजपैपूजेसुनिअमरनि॥रोक्योविधसौ
 रव्योसिंधुघटजहु॥नामवलहास्योहियषारौभयोभूसुड
 रनि॥नाममहिमाअपारशेषशुकबारबारमतिअनुसार
 बुधवेदहुवरनि॥नामरतिकामधेनुतुलसीकोकामतरु
 मनामहैविमोहतिमिरतरनि॥२४८॥पाहियाहिरामपा
 हिरामभद्रपाहिरामचंद्रसुयशअवणसुनीआयौहौशर
 ण॥दीनबंधुदीनतादरिद्रदांहदोषदुखदाकुरुदुसहदर
 दूरितहरण॥जवजवजगजालव्याकुलकरमकालसबख
 लभूपभएभूतलभरण॥तवतवतनधरिभूमिभारदूरिक
 रियापेसुनिसुरसाधुआश्रमवरण॥वेदलोकसबसास्त्रि
 काहूकीरतीनरवीरावणकीवंदीलागेअमरमरण॥औ
 कदैविशोककियलोकपतिलोकनाथरामराजभयोधर्म
 चारिहुचरण॥सिलागुहगृहकपिभीलभालुरातिचर
 रव्यालहीरूपालकीन्हैतारणतरण॥पीलउद्धरणसील
 सिंधुदीलदेरवीअतीतुलसीपैचाहतगलानिहीगरण॥

॥ २४६ ॥ मलिभांतिपहिचानेजानेसाहेबजहांलोजगजूडेहो
तसबहिनथोरेहीगरम ॥ प्रीतिनप्रविननोतिहीनरीतिकेमलि
नमायाधीनसबकि एकालहूकरम ॥ दानवदत्तुजवडेमहामू
ढऊचढेजीतेलोकलोकनाथचलनिभरम ॥ रीजीरीजीदि-
यवररवीफिरवीफिघालेधरश्यापनेनेवाजेकीनकाहुकोस
रम ॥ सेवासावधानत्सुजानसमरथसाचोसबगुणधाम
रामपावनपरम ॥ सरुषसुखएकरसएकरूपतोहिबि-
दितविसेषघटघटकेमरम ॥ तोसोनतपालनकपालनक
गालमोसोदयामेवसतदेवसकलधरम ॥ रामकामतरु-
छांहचाहैरुचिमनमाहतुलसीविकलवलिकलिकुधरम ॥
॥ २५० ॥ तौहौवारवारप्रभुहिपुकारिकैरिखि ॥ वतोनजोपै
मोहोतौकहुटाकुरढहरु ॥ आलसीअभागीमोसैतैकृपा
लपालेपोसेसजामेरेराजारामअवधसहरु ॥ सेएनदिगी
सनगनेसगौरिहितकैनमानेविधिहरिहूनहरु ॥ रामना-
महिसोजोगळेमनेमप्रेमपत्रसुधासोभरोसोएहूदूसरो
जहरु ॥ समाचारसाथकेअनाथनाथकासोकहोनाथ-
हिकेहाथसबचोरहुपहरु ॥ निजकाजकरकाजआरत
केकाजरामबूजियैविलबकहाकरुनागहरु ॥ रीतिसनि
रावरोप्रतितोप्रीतिरावरेसोडरतहौदेखिकलिकलकोक
हरु ॥ कहेहीवनेगीकिकहाएरामबलिजाउतूलसितुमेरो
हारिहिएनहहरु ॥ २५१ ॥ रामरावरोसुभावगुणसील
महिमाप्रभावजान्योहरुहनुमानलखनभरत ॥ जिन्ह

केहिए सुथलरामप्रेमसरतरुलसतसरससरखफुलतफ
 रत ॥ आप्रमानेस्वामीकेसरवासुभारपाईपतितेसनेहसा
 वधानरहतउरत ॥ साहेबसेवकरितिपीतिपरमितिनीतिने
 मकोनिवाहयकटकनटरत ॥ सुकसनकादिप्रल्हादनारदा
 दीकहेरामकीभक्तिवडिविरतनिरत ॥ जानेविनभक्तिनजा
 निवोतिहारेहाथससुफिसयानेनाथपगनिपरत ॥ छम
 तविमतएकपनेतिनेतिनितनीगमकरत ॥ औरनिकिक
 हाचलिएकैवातमलेभलिरामनाभलिएतुलसीहुसेतर
 त ॥ २५२ ॥ पायआपनेकरतमेरोघनिघटिगई ॥ लालचील
 वारकिसुधारियैवारकवलिरावरीभलाईसबहीकीभलाई ॥ रो
 गवसतनकुमनोरथमलिनपरअपवादमिथ्यावादवानोह
 ई ॥ साधनकीऐसीविधिसाधनविनानसिधिविगरिवनावै
 कृपानिधिकीकृपानई ॥ पतीतपावनहितआरतअनाथनि
 कीनिराधारकोअधारदिनबंधुदई ॥ इन्हमैएकोनभयोबू
 जीनतूठ्यौनजयौताहितेत्रितापतयौलुनिअतवई ॥ स्वांगु
 सूधोसाधुकोकुचालितेअधिकपरलोकफिकीमतिलोकरंग
 रई ॥ बडेकुसमाजराजआजुलोजोपाएदीनमहाराजकेहूं
 भांतिनामओठलई ॥ रामनामकोप्रतापजानियतनीके
 आपनोकोगतिदूसरीनविधिनीरमई ॥ पीजीवेलायकक
 रतवकोटिकोटिकटुरीतिवेलायकतुलसीकीनिलजई ॥ २५३
 ॥ रामराखिएसरएराखिआएसबदिनविदितत्रीलोक
 तिहुकालन ॥ दयालदूजोआरतप्रएतपालकोहैप्रभुविन

॥लोलपालेपोषेतोपेन्द्रालसी -अभागीअधीनाथपे-
 अनाथसोभएनउरिन॥स्वामीरमरथएसोहोतिदोगे-
 जैसोतेसोकालचालिहेरिदोतिहिअधनीधान॥गीजिखा-
 जीविहसीअनस्वहूतेएकवारतुलसीतुमेरोमेप्रभुकहित-
 किन॥जाहिशूलनीरमूलहोहिसरखअनकुलमदाराजराम
 रावरिसोतेहिछिन॥२५५॥रामरावरोनाममेरोमातुपितुहे॥
 सजनसनेहीगुरुसाहीवसरवासुद्धदरामनामप्रेमअविचल
 वितुहे॥सतकोटिचरितअपारदधिनिधिमथिली॥योकादि
 वामदेवनामधतहै॥नामकोभरोसोचलचारिहुफूलकोफल
 सुमिरीयेछाडिछलभलोक्तहै॥स्वारथसाधकपरमारथ
 दायकनामरामनामसारिखोनऔरहितहै॥तुलसीसुभा
 थकहिसाचीपरैगीसहिसोतानाथकोनचितहै॥२५५॥रा
 मरावरोनामसाधुसरतरुहै॥सुमिरोत्रिविधधामहरत-
 पुरतसकलकामसकृतसरसिजहुकोसरुहै॥लाभहूको
 लाभसुखसरवसुपतितपावनडरहुकोडरुहै॥नीचेहूको
 ऊचेहूकोरंकहूकोराथहूकासुलभसरवदआपनोसाध
 रुहै॥वेदहूपुरानहूपुरारिटुपुकारिकहै॥नामप्रेमचारि
 फूलहूकोफरुहै॥ऐसेरामनामसोनपीतिनामप्रतीतिम
 नमेरेजानजानिवोसोनरस्वरुहै॥नामसोनमातुपितु-
 मीतहितबंधुगुरुसाहिवसुसीलसुधाकरहूकोकरुहैना
 मसोनिवाहनेहदीनकोदयालदेहुदासतुलसीकोवलीव
 डोवरुहै॥२५६॥केहेविनरत्नोनपरतकहेरामरसनर-

हत ॥ तुमसे सखा हेबकी वोटजाय रवो दोरवरो कालकी करम
 की कुसासतिसहत ॥ करत विचार सार पैयतन कहु कछु सक
 लवडाइसवक हांतेलहत ॥ नाथकिमहिमासुनिसुमुफि-
 आपनीअोर हेरिहारिकैह हरिददयउदहत ॥ सरखान-
 सुसेवकनसुनिअसप्रभुआपमायवापतुहिसांचीतुलसी
 कहत ॥ मेरीतोथोरिहैसुधरेगीविगरीयोबलिनामरामरा
 वरिसारहिरावरिचहत ॥ २५७ ॥ दीनबंधुदुरियोकि एदी
 नकोनदूसरोसरए ॥ आपकोभलोहैसब आपवेकोकोउ
 कहूसबकोभलेहैरामरावरेचरण ॥ पाहनपशुपतंगकोल
 भौलनिसिचरकांचतेरूपानिधानकिएसुवरए ॥ दंडकपु
 हमिपाइपरसिपुनितभइउकटेवितपलागेफूलनफरए ॥ प
 तितपावननामवामहूहिनोदेवदुनिनदुसहदूरवनदरए ॥
 सिलसिंधुतोसोऊचिनाचिजोकहतसोभाभलोतोसोतुही
 तुलसीकीआरतहरए ॥ २५८ ॥ जानिपहिचानिमैविसारे
 हौरूपानिधानएतेमानटिटहोउलटोदेतरवोरिहो ॥ करत
 जतनजासोजोरिवेकोजोगिजनतासोक्योहूचुरिसोअ
 भागोवेटीतोरिहो ॥ मोसोदोसकोसकोउभुवनकोसदूस
 रोनआपनीसमूजीसुजीआयोत्कटोरिहो ॥ गाडीकेखा
 नकीनाइमायामोहकीवडाइछिनहितजछिनभजतवहो-
 रिहै ॥ बडोसाईदोहीनवरावरिमेरिकोउनाथकीसपथकी
 एकहतकरोरिहो ॥ दूरीकीजैहारतेलवारलालचीप्रपंचीसु
 धासोसलिलसूकरिज्योगहडोरिहौरा ॥ खिअेनिकेसुधा

रिनीचकैडारियेमारिदुहूँप्रौरकिविचरिअमितनीहोरि
हो ॥ तुलसी कहिहोसाचीरेखवारखांचीतीलकिएनामम
हिमाकीनावबोरिहो ॥ २५९ ॥ रावरिस्तधारिजोविगारिधि
गरेगोमेरीकहोवलवेदकीनलोगकहाकहेंगो ॥ प्रभुकोउ-
दासभाउजनकोपापप्रभावहुहंभांतिदिनवधदीनदुरखद
हेंगो ॥ मैतोदियोछातिपविलिकालदविसासतिसहतपर
वसकोनसहेंगो ॥ वांकीविरुदावलिवनेंगोपालेहोसुपाल
अंतमेरोहालहेरियोनमनरहेंगो ॥ करमांधरमीसास्त
सेवकविरतरतआपनीभलाईभलकहाकोनलहेंगो ॥ ते
रेमुहफेरेसोसेकायरकपूतकुरलतेलतपतेनिकोकोनपरि
गहेंगो ॥ कालपाइफिरतदसादयालसयहिकीतोहिबिनमो
हिकवहूनकोऊचहेंगो ॥ वचनकर्महिएकहोरामसोइकीए
तुलसीपैनाथकेनीवाहेंगो ॥ २६० ॥ साहेवउदासभयदा-
सरवासरवीनहोतमेरिकहाचलीहोवजाईजाईरख्योहो
॥ लोकमेनठाऊपरलोककोभरोसोकौनहोतोवलिजाउ
रामनामहितेलख्योहो ॥ कस्तभावकालकामकोहलोभ
मोहगृहअतीग्रहनगरीवगादेगख्योहो ॥ छोरिवेकोम-
हाराजवाधिवेकोकोटिभटपाहिप्रभुपाहितीहूतापपापद
ख्योहो ॥ शीजिबूजिसबाकिप्रतितीथीतिएहिद्वारदूधकोज
रोपियतफूकिमख्योहो ॥ रततरतलदोजांतिपांतिभांति
घटोजूटनकोलालचीचहोननख्योनख्योहो ॥ अनतच-
ख्योनभलोसुपथसुचालिचलोनिकेजियजानिइहाभ

लोअनचत्थोहो ॥ तुलसीससुजिससुजायोमनवारवारआ
पनोसोनाथहंसोकहिनिरवत्थोहो ॥ २६१ ॥ मेरिनवनैवना
एमेरिकोटिकल्पलो रामरावरेचनाएवनैपलपाउमै ॥ निप
टसवानेहोकपानिधानकहाकहोलिएवेरवलदिअमोल
मनिआउमैमानसमलीनकरतवकलिमलपीनजीहहून
जपौनामवक्योआउवाउमै ॥ कुपथकुचालचलोभयोभू
लिहूमलोवालदसाहूनखेल्यौरखेलतसदाउमै ॥ देखदे-
खादभतेकिसंगतेभईभलाईप्रगटिजनाइकियोदुरितदु
राउमै ॥ रोगरोखदोरखपोखेगोगनसमेतमनइन्हकिभक्ति
कीन्हीउन्हहिकोभाउमै ॥ आगिलिपाछिलिअवहूकीअ
नुमानहीतेबूजियतिगतिकछुकिन्हैतोनकाउमै ॥ जगक
हैरामकोप्रसितप्रीतितुलसीहूरूदेसाचेआसरोहैसाहेव
रघुरावमै ॥ २६२ ॥ कत्यौनपरतविनकत्यौनरत्थोपरतवडो
दुरवकहतवडेसावलिदीनता ॥ प्रभुकीवडाईवडीआपनि
छोटाइछोटीप्रभुकीपुनीतताआपनीपापपिनता ॥ दूहुओ
रससुजिसकुचीसहमतमनसनसुखहोतसुनिसामीस-
मीचीनता ॥ नाथगुनगाथगाएहाथजोरिमाथनाएनीच
उनीवहीप्रीतिरितिकीप्रविनता ॥ याहिदरबारहैगरवते
सरवसहानीलाभजोगक्षेमकोगरीविमिसकिनता ॥ मो
यदशकंठसोनदुवरोविभीषनसोबूजिपरिरावरेकीप्रेम
पराधीनताइहाकीसथानपअथानपससमप्रभुसति
भायकहेमीदतीमलिनता ॥ गीधसिलासवरिकीसुधी

सबदिनकीएहोइगोनसाईसोसनेहहीतहीनता ॥ सक-
लकामनादेतनामतेरोकामतरुसुभिरतहोतिकलिमलछ
लछिनता ॥ करुनानिधानवरदानतुलसीचहनसीतापति
भक्तिस्वरसरिमनमिनता ॥ २६३ ॥ नायनिकेंजांनिविक्र-
जनजीयकी ॥ रावरोभरोसोनाइकेसुमेमनेमलियोरुचिकरुभि
गतिमतितीयपियकी ॥ दुःकृतसुकृतवससवहिसोसंगप
स्वोपरखिपराईगतिआपनेहुकीयकी ॥ मेरेभलेकोगोसा
ईपोचकोसोहोहूसकलकियकहोसोहसांचीसियपियकि ॥
ज्ञानहंगिराकेस्वामीवाहेरअंतरजामीइहाक्योंदुरेगोवात-
सुखकीओहीयकि ॥ तुलसीतीहारोतुलसीहिपैतुलसीकेहित
राखिकेकहेतेकलुखैहैमारवीधीयकी ॥ २६४ ॥ येरोकथो
सुनिपुनोभावैतोहिकरिसो ॥ चारिहूविलोचनविलोभित्
त्रिलोकमहतेरातीहूकालकहूकोहैहितुहरिसो ॥ नयनय
नेहअनुभएदेहगेहवसपरखेप्रपंचीप्रेमपरतउधरिसो
॥ सुहृदसमाजदगावाजीहोकोसोदासूतजवजाकेका-
जतवमिलेपाईपरिसो ॥ विबुधसथानेपहिचानेकेधोना
हिनीकेदेतएकगुणलेतकोटिगुणभरिसो ॥ करमधरम
अमफलरघुवरविनराखकोसोहोमहैउसरकोसोव-
रीसो ॥ आदिअंतविचभलोभलिकरैसबहिकोजाकोज
सलोकवेदरख्योहैवगरिसो ॥ सीतापतिसारिखोनससा
हेवसीलनिधानकेसेकलपरैसठबैठोसोविसरिसो ॥ -
जीवनप्राणप्राणकोपरमपुनितहतनीचननिदरिसो

॥तुलसीतोकोकृपालकियोकोसलपालचीत्रकूटकोचरित्रचे
तुचितधरिसो॥२६५॥तनस्रचिमनरुचिमुखकहोजनहो
सियपिको॥केहिअमागजान्योनहिजोनहोइनाथसोनातो
नेहननीको॥जलचाहतपावकलहोविखहोतअमिकोह-
लिकुचालिसंतनिकहोसोइसहिमोहिकछुकहमनतरनित
मिको॥जानिअंधअंजनकहेवनवाधिनधीको॥स्रनिउ-
पचारविकारकोस्रविचारकरोजवतबबुद्धिबलहेरेहिको
॥प्रभुसोकहतसकुचातहोपरोजनिफिरफिको॥निकटबो-
लिवलीवरजीयेपरिहरेख्यालसिदासजडजीको॥२६६॥
ज्यौंज्यौंनिकटभयोचहोकृपालत्यौत्यौदूरिपास्वोहो॥तु-
हचहूजगरसयकरामहोहुरावरोजद्यपिअघअवगुण
निभस्योहोविचपाईनीचवीचहूनलछुरनिचस्वोहो॥हो
स्रवरनकुवरनकियोनृपतेभिरवारिकरिस्रमतितेकुमति
कस्वोहो॥अगनितगिरिकाननफिस्वोविनआगोजस्वोहो
॥चित्रकूटगयेमैलखिकलिकीकुचालिसबअवअपडरनि
डस्वोहो॥माथनाईनाथसोकहोकरजोरिखस्वोहो॥चीन्हो
चोरजियमारिहैतुलसीकथास्रनिप्रभुहिसोकहिनिवस्वो
हो॥२६७॥प्रनकरिहोहठिआजतेहोरामद्वारपस्वोहो॥
तूमेरोयहविनकहेउठिहोनजन्मभरिप्रभुखिसोहकरिनि
वस्वोहो॥दैंदैंधकाजमगतथकेटास्वोहो॥उदरदुसहसां
सतिसहिवहुबारजन्मिजगनरकनिदरीकस्वोहो॥होमा
चललैछांडिहोजेहिलागिअस्वोहो॥तुम्हदयालवनिहै

दियवलि विलंबनकीजैजातगलानिगस्वोहो ॥ प्रगटकहत
जोसकुचीथैअपराधभस्वोहो ॥ तोमनमेअपनाइयेतुल-
सीकृपाकरिकलिवीलोकीहहस्वोहो ॥ २६८ ॥ तुम्हअपनायो
तवजानिहोजवमनफिरिपरिहो ॥ जेहिसुभाएविरवयनिल
ज्योतेहीसहजनाथसोनेहछांडिछलकरिहै ॥ सुतकीपीति
प्रतीतिमीतकीचृपज्योडरडरिहै ॥ अपनोस्वारथस्वामी
सोचहुविधिचातकज्योएकटेकतेनहिटरिहै ॥ हरखिहैन
अतिआदरेनिदरेनजरिमरिहै ॥ हानिलाभदुरवसरव-
वैसमचितहितअनहितकलिकुचालिपरिहरिहै ॥ प्रभु
गुणसुनितनहरखिहैनीरनथनडरिहै ॥ तुलसीदासभ-
यो रामकोविश्वासप्रैमलखिआनंदउमगितुरभारिहो ॥
॥ २६९ ॥ रासकवहुप्रियलागिहो जैसेनीरमीनको ॥ सुख
जीवनज्यो जीवकोमणिज्यो फणिकोहितज्यो धनलो-
भलिनको ॥ ज्योसुभायप्रियलागतिनागरनविनको ॥
त्योमेरेमनलालसाकरिऐकरुणाकरपावनप्रेमपीनको
॥ मनसाकोदाताकहैश्रुतिप्रभुप्रविनको ॥ तुलसीदास
कोभावतोवलिजाउदयानिधिदिजैदानदिनको ॥ २७०
॥ कबहुकृपाकरिरखुविरमोहिचितैहो ॥ भलेबुरोजन-
जानिदयानिधिअोगुणअमितवितैहो ॥ जन्मजन्महो
मनजितोअवमोहिजितैहो ॥ होसनाथहैहोसहीतु-
महूअनाथपतिजौलघुतनमितैहो ॥ विनयकरोअप
भयहूतेतुम्हपरमहितैहो ॥ तुलसीदासकासोकहैतुम

हि सब मोर प्रभु गुरुमातृपितै हौ ॥ २७१ ॥ जैसे होते सो होरा-
 मरा वरो जन जनि परि हरियै ॥ कृपा सिंधु को सल धनि सर
 नागत पालक दरनि आनि दरियै ॥ होतो विग राय ल और
 को विग रौ न विग रियै ॥ तुम सुधारि आऐ सदा सब कि सब
 हि विधि अरु व मेरियो सुधरीये ॥ जग हसि है मेरे संगृहे कत ए
 हि डर डरियै ॥ कपि के वट को न्हे सरवाजे हि सील संरल चित
 ते हि सुभाय अरु सारिये ॥ अपराधित ऊ आपनो तुलसी-
 नवी सारियै ॥ दूटियो वाह गरे फूटे हू विलोचन पीर होत हीन
 करियै ॥ २७२ ॥ तुम जिनी मन मै लौ कर लोचन जनिके रो
 ॥ सुन हुराम विनरा वरो लोकहु पर लोकहु को उन कहु हित
 मेरो ॥ अगुन अलायक अल सी जानि अधम अनरो ॥
 स्वारथ के साथी न्हत ज्योति जरा को सो ठोट कु औ चट उल
 टिन हेरो ॥ भक्ति हीन वेद वाहिरो लस्वि कलि मल घेरो ॥ दे
 वनि हू देव परि हस्वो अन्या उनति न्ह को हो अपराधि सब
 केरो ॥ नाम की ओट पेट भरत हौ पै कहावत चरो ॥ जग विदि
 त वात ह्यै परि ससुजिये धो अपन पै लोक कि वेद बडे रो ॥
 क्यै है जव तव तुम हिते तुलसि को भले रो ॥ दिन दिन हु दिन
 विगारि है वलि जा उ विलंब कि ए अपना इ ऐ सवे रो ॥ २७३
 ॥ तुम्ह तजि हो का सो कहो और को हित मेरे ॥ दीन बंधु से
 वक सरवा अरत अनाथ पर सहज छोह के हि करे ॥ बहू
 त पतित भवनि धित रे विन तरिनी विन वरे ॥ कृपा को सस
 ति भाय हू धो स्वे हू तिर छे हुराम ति हारे हि हेरे ॥ जो चित

वनिरोधिलगोचिदयैसवैरेतातुलसीदासत्र्यपनाईयेकिजे
 नदीलअवजिवनअवधिनितनेरे ॥२७४॥ जाउकहावोरु
 हैकहादेवदुखितदीनको ॥ कोरूपालस्वामीसारिरगोरारंवेस
 रनागतसवअंगवलविहीनकोगनिहिसुनिहिसाहेवचहं
 सेवासर्माचीनको ॥ अधमअगुनअालसीकोपालिवोफ
 वोअ्यायोरधुनायकनविनको ॥ सुखकैकहाकहोविदितहंजि
 यकीप्रभुप्रविनको ॥ तिहुकालतिहुलोकमेंएकदेकरावरितु
 लसीसैमनमलिनको ॥२७५॥ द्वारद्वारदिनताकहेकाटिर
 दपरिपाहू ॥ हैदयालदूनिदशदिशादुखदोरवदलनछमकि
 योनसभाखनखाहू ॥ तनतजनकुटिलकीटज्योमातुपिताहु
 ॥ कहेकोदोषकाहीयोमेरोहीअभागमोसोसहुनतसबहु
 ईछोहू ॥ दूखितदेखिसंतनिकज्योसोचैजिनिमनमाहू ॥ तो
 सैपशुपावरपातकीपरिहेनसरनसरनगएरधुवरअोर
 निवाहू ॥ तुलसीतिहारोभयोसरवीप्रीतिप्रतीतिविनाहू ॥
 नामकिमहिमासीलनामकोमेरोभलोविलोकिआवतसकु
 चाउसीहाहू ॥२७६॥ कहानकियोकहानहीगयोसोसका
 हीननायो ॥ रामरावरोविनभयजनजनमीजनमीजगदु
 खदशहुदिशिपायो ॥ आसविवसस्वासदासद्धैनिचप्रभु
 नजनायो ॥ हाहाकरिदीनताकहिद्वारद्वारवारवारपरिन
 छारसुहुंवायो ॥ असनवसनविनवावरोजहांतहांउठिधा
 यो ॥ महिमाअनुप्रियधानतेतजिरवोलिखलनिआगे
 खिनपेटखलायो ॥ नाथहाथकलुनहिलग्योलालचल

लचायो ॥ सांचकोनसोजोनमोहिलोभलयुनिलजनचाये
 ॥ श्रवणनयनमनअगमलगेसवथलपतितायो ॥ सुंङ-
 मारिहिएहारिकैहितहेरिफेरिअवचरणसरएतकिआ
 यो ॥ ईशरथकेसमरथतुहित्रिभुवनजसगायो ॥ तुलसी
 नमितअवलोकियैवलिवहवोलदैविरुदावलिवोलायो
 ॥ २७७ ॥ रामरायविनरावरंमेरेकोहितसांचो ॥ स्वामीस
 हितसबसोकहोसुनिगुनिविसेस्त्रिकोउरेखदूससरिवो
 चो ॥ देहजीवजोगकेसरवाभूरवाटांचनटांचो ॥ कियविचा
 रसारकदलिज्योमनिकनकसंगलसुलसतविचविचकां
 चो ॥ विनयपत्रिकादिनकिवापआपहिवांचोहि एहेरितु
 लसीलिरवीसोसुभायसहीकरिवहूरिपुछिअहिपांचो
 ॥ २७८ ॥ पवनसुवनरिपुदवनभरतलाललखनदीनकी
 ॥ निजनिजअवसरसुधिकिएबलिजाउंदासआसपु
 जिहैरवासरवांचकी ॥ राजद्वारभलिसबकहैसाधुसमी
 चीनकी ॥ सुकृतसुजससाडेवकृपास्वारथपरमारथग-
 तिभईगतिविहीनकी ॥ समयसम्हारिसुधारिवीतुल-
 सीमलीनकी ॥ प्रीतिरितिससुऊईप्रणतपालकृपाल
 हिपरमिनिपराधीनकी ॥ २७९ ॥ मारुतमनरुचिभरत
 कीलखिलकनकहिहै ॥ कलिकालहुनाथनामसोप्रतीति
 एककिंकरकिनिवहिहै ॥ सकलसभासुनिलेउठिजानि
 रितिरहिहै ॥ कृपागरिवनिवाजकिदेखतगरिवकोसह
 सावांहगहिहै ॥ विहसिरामकल्योसत्यहैसुधिसोहल-

हिहै ॥ सुदितमाथनावनवनि तुलसीनाथकीपरिरसु
 नाथसहिहै ॥२८०॥ ॥ इति श्रीमद्गोसाईतुलसीदासरु
 तविनैपत्रिकासंपूर्णमगमत् ॥ ॥ बालिकांडप्रभुपा
 यन्त्रजो ध्याकठिमनमोहै ॥ उदरबत्यान्प्रारत्यहृदयकि
 किंघासोहै ॥ सुंदरग्रीवसुखारविदलंकाकहिगाए ॥ जेहि
 मोरावनआदिनिशान्वरसवैशमाए ॥ उत्तमस्तककां
 उहरिएहि विधितुलसीदासमन ॥ आदिअंत लोदेखि
 एरामायणश्रीरामतन ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
 मुंबईत. बापुहरशेट देवळेकर आणि आपले आपखान्यात
 छापिली. शके १७८१ सिद्धार्थनामसंवत्सरे मिति आश्विन
 शुद्ध १ भौमवासरे समाप्त. शिरामचंद्रार्पणमस्तु शशभक्त

